तषां व्यवहृतौ समा सर्वत्र संस्थितिः।

# "सहज विचार"

दीन

गिन्दुनः छा जिन्दऽः मरुन, पानऽ रुउस पान स्वरून, सहज विचार करुन,

# "सहज विचार"

कारुगारऽः मऽन्जऽः तऽम्त्य् शिवनाथ होवुम्
दुऽखऽ मऽन्जऽः सुऽखऽकुई दर्शुन दोवुम्
चितानन्द मय मन तऽम्य् म्येः चोवुम
म्य छि गुऽरऽः सऽन्ज्य दया सुऽई छ्यम वकार "दीन"

---

मुद्रक :- साऊथ दिल्ली प्रिंटर्स, १५, सुखदेव मार्किट कोटला मुबारक पुर, नई दिल्ली-११०००३
प्रकाशन :- ईश्वराश्रम निशात श्रीनगर, पुन्य तिथि २७-४-१९८४
जन्म दिवस भगवान श्री सत्गुरुदेव ईश्वर स्वरूप जी महाराज

लक्षमण जी रैणा
शैवाचार्य
ईश्वर आश्रम निशात, काश्मीर

ॐ

# आशीर्वाद के दो शब्द

श्री दीनानाथ जी गन्जू मेरे भक्त और प्रिय शिष्य हैं, जिन्हों ने संपूर्णरूप से अपना हृदय मेरे में अर्पण किया है। इस आत्म-समर्पण के फल-स्वरूप उन के हृदय में ईश्वर के अनुग्रह से दिव्य वैखरी का प्रादुर्भाव हुआ। फलतः उन्हों ने काश्मीरी भाषा में सहज-विचार नाम वाला एक छोटा सा काव्य-बद्ध पुस्तक निर्मित किया। इस पुस्तक में केवल सहज-विचार ही नहीं अपितु गुरु-भक्ति का आभास भी चमक उठा है। मुझे आशा है कि गन्जू साहब इस को प्रकाशित करके मेरे भक्त-जनों में वितरण करेंगे। यदि ऐसा होगा तो मेरी आत्मा पूर्ण रूप से प्रफुल्लित हो जायेगी और जनता में नवीन पारमार्थिक विकास होगा।

कार्तिक शुक्ल सप्तमी
शुक्रवार

लक्ष्मण
ईश्वर आश्रम

जय गुरु देव

# I BOW

This work is the outcome of the blessings of Bhagwan Ishwar Swarup Swami Lakshman Joo Maharaj on a person, simply not deserving the same. He is neither, a poet, nor a philospher, has little devotion and is only a simple human being.

The attempt may not be a perfect one, as far as, qualities of poetry and rhyme are concerned, but the reader is requested to read this study into the realms of "Sahaj Vichar" (contemplation on reality). This is the result of grace and blessings of Bhagwan Ishwar Swarup whose teachings only have been tried to be interpreted from time to time, in these compositions.

I have been lucky to stay near the lotus feet of my master for some time and it is during such periods that he so graciously blessed me with his radiance, inspiring me to write these verses.

The couplets have been arranged in the order in which they were written in defference to the advice of my friend, late Pt. Dina Nath ji Jalali

I bow to Lord Shiva, Bhagwan Ishwar Swarup ji Maharaj and to them who will be benefitted with the masters grace by reading and enjoying the contents.

D. N. Ganjoo

# जय गुरु देव

# WRITING KASHMIRI
*IN*
## DEVNAGRI SCRIPT
*Without Addition of any new symbol*

A detailed study regarding how to write Kashmiri in a scientific way in Devnagri script was published by me, under the above nomenclature after its approval by Shri. Swami Ji Maharaj, in 1978. All the script in this book has been written under the same system. A summary of the system is repeated here-under, for ready reference :-

In addition to the usual signs in Hindi or Sanskrit.

1. Use ऽ as in अऽस्य=we, नऽर=arm, नऽव=new, घऽर=watch, च़ऽय=you, म्यऽच़=earth, च़ऽर=sparrow, च़ऽ त़ऽ ज़ऽ सऽच़=you and two tailers.

2. Use ऽऽ as in अऽऽस=month, नऽऽर=jug, दऽऽर=window, सऽऽरी=all, अऽऽस्य्=were, मऽऽज्य्=mother, वऽऽज्य्=ring, प्रऽऽन्य=old.

3. Use 'ॖउ' as in नुउग=sleave, गुउट=dim, थुउद=tall, टुउट=pony, गुउर=horse. बुउडऽ=old man, बुउड=old women.

4. Use "ॖऽ" as in सुऽन=gold, रुऽप=silver, दुऽध=milk, बुऽद=intellect, युऽद्ध=war, गुऽर=precepter,

5 अ: flat ऽ: as in सऽ:=tiger, ज़ऽ:=two, जंगऽ:=legs, तलऽ:=under

6. ½ य् preceeded by a vowel and ½ constant. कऽऽत्य्=how many, तीत्य्=so many, सऽऽत्य्=with, शून्य्=space.

7. All ending consonants are halant. If not the vowel is attach-ed as in च़ऽ=you, बतऽ=cooked rice.

8 Use of ज़ च़ and छ़ in words like ज़ान=knowlege, च़ऽ=your, छ़यनुन=being cut; is well known

9. Words from Sanskrit and other languages have been written phonetically as pronouned in Kashmiri such as व्यच़ार for विचार, सम्व्यथ for संवित्त.

In this book;-

Due to non availablity of च़ ज़ छ़ in the press, use has been made of च ज and छ in most places. The reader is requested to read such words by personal judgment.

Non availability of a double word connected with य has caused such words to he separated and first half word written with a "halant sign" such as टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य्

Dina Nath Ganjoo

# सहज विचार

## विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| १. | सत्गुऽरऽः ख्राव | १ |
| २. | गणेश अशटक | २ |
| ३. | गुरु दर्शन | २ |
| ४. | ईश्वर स्वरूपस जय जयकार | ४ |
| ५. | गुऽरस ज़ारऽपार | ५ |
| ६. | बऽ ति छुस वनान ती निमऽहऽऽ | ८ |
| ७. | अस्तुती | ९ |
| ८. | दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस | १० |
| ९. | भ्रम | १२ |
| १०. | मनऽः कामना | १२ |
| ११. | मृऽदुर दोद | १३ |
| १२. | ईश्वर स्वरूप अविनाशे | १५ |
| १३. | हेह | १५ |
| १४. | कऽर्य् कऽर्य न करुण | १६ |
| १५. | फुऽलुन | १६ |
| १६. | तोह मुनुन | १७ |
| १७. | लोलऽ बेमार | १८ |
| १८. | आत्म कथा | १९ |
| १९. | प्रभु दया | २० |
| २०. | ज़ान | २१ |
| २१. | अर्पन | २१ |
| २२. | कुदरत (हिन्दी) | २२ |
| २३. | गुरुदया | २३ |
| २४. | आनन्द | २४ |
| २५. | कृष्ण शंकर | २४ |
| २६. | मऽऽज्य् भवऽऽनी | २५ |
| २७. | होल | २६ |
| २८. | हे स्वात्मा देव | २७ |
| २९. | प्रणाम | २८ |
| ३०. | देहस्थ देवता चक्र | २८ |
| ३१. | अहं परामर्श | ३० |
| ३२. | जयकारऽच अज़ | ३१ |
| ३३. | सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानी | ३२ |
| ३४. | आवऽः आव | ३३ |
| ३५. | प्रसाद (हिन्दी) | ३४ |
| ३६. | जन्म दिवस १९७० | ३५ |
| ३७. | फऽर्याद | ३६ |
| ३८. | आः हा | ३६ |
| ३९. | पनुन पाय | ३८ |
| ४०. | शाहमार | ३८ |
| ४१. | दियि तौ दर्शुन | ६९ |
| ४२. | सत्गुऽरऽः देव शिव | ४० |
| ४३. | निराभासात् | ४० |
| ४४. | रऽऽज्ञऽऽय शारिकऽऽय | ४० |
| ४५. | पनऽः नुई पान | ४१ |
| ४६. | कूर लूकस नुऽश लूकस | ४२ |
| ४७. | नोवुई चीज़ा | ४३ |
| ४८. | कया छु पान | ४५ |
| ४९. | शैव | ४५ |
| ५०. | छुऽटयन लफज़न मऽन्ज़ | ४६ |
| ५१. | सुई छु | ४७ |
| ५२. | मे नास्ति किंचन अथ मे सर्व | ४८क |
| ५३. | पान मन्दछोवुम | ४८क |
| ५४. | पनुन आकार | ४८ख |
| ५५. | अहं पापी | ४८ग |
| ५६. | मामस भक्ष्यन | ४८ग |
| ५७. | मलः त्र्यायि सन्यास | ४८घ |
| ५८. | श्री गुरुस्तुती के अन्त पर दिये हुए श्लोकों का भावान्तर | ५१ |

| | | |
|---|---|---|
| ५९. | में (अहं) (हिन्दी) | ५३ |
| ६०. | मन | ५४ |
| ६१. | रऽऽज्ञऽऽय शारिकऽय | ५६ |
| ६२. | हे प्रभू हे शम्भू | ५७ |
| ६३. | ह्यस | ५७ |
| ६४ | श्री कृष्णऽ प्यारे मुरली मनोहर | ५८ |
| ६५ | शाहऽ पूज़ा | ५९ |
| ६६. | छु कत क्युत | ६० |
| ६७. | प्रणाम करान | ६१ |
| ६८. | सत्गुऽरऽः दया | ६१ |
| ६९. | बुउड उत्सव | ६२ |
| ७०. | स्यद्ध | ६२ |
| ७१. | विरह | ६३ |
| ७२. | फुऽलरावतम | ६४ |
| ७३. | गाश हो आव | ६४ |
| ७४. | मस प्यालऽः | ६५ |
| ७५. | रग | ६५ |
| ७६. | इन्सान भगवान | ६६ |
| ७७. | इययित्रऽः पोर लऽर | ६९ |
| ७८. | माया भवऽऽनी | ७२ |
| ७९. | आदनऽच यऽऽरी | ७७ |
| ८०. | दीना नाथ (हिन्दी) | ७९ |
| ८१. | पज़ि ही न बिलकुल | ८० |
| ८२. | म्योन तमाह | ८० |
| ८३. | आस (हिन्दी) | ८१ |
| ८४. | क्याः छु करुण | ८१ |
| ८५. | ज़ान सुऽरतो | ८२ |
| ८६. | अख कथ | ८३ |
| ८७. | शारिका दीवी जय जयकर | ८४ |
| ८८. | संग्रहस्तोत्र का "हिन्दी" भाषान्तर | ८५ |
| ८९. | वऽन्यक्यन ज़ान | ८७ |
| ९०. | बहुवलौ बऽ हो बलो | ८८ |
| ९१. | टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् | ८९ |
| ९२. | चिठ्ठी (हिन्दी) | ९० |
| ९३. | करय घूर घूर | ९० |
| ९४. | जय शारिका | ९१ |
| ९५. | शङ्कर भऽकत्य | ९२ |
| ९६. | वक्ति बद | ९३ |
| ९७. | ज़िन्दगी त मरुन | ९४ |
| ९८, | अऽऽद्य् अऽऽसऽम वुन्य् नय छ्यम | ९५ |
| ९९. | मनऽः म्यानि क्या गुई | ९६ |
| १००. | यूगी | ९७ |
| १०१. | शाम्भवोपाय (अनुसन्धान) | ९८ |
| १०२. | तरीका (हिन्दी) | १०० |
| १०३. | आः हा | १०० |
| १०४, | श्री शारिका कर चारः लोलो | १०१ |
| १०५. | बीबी को चिठ्ठी | १०१ |
| १०६. | सम्सार | १०२ |
| १०७, | चऽई | १०२ |
| १०८. | प्राराण | १०३ |
| १०९. | अज़ब दोव | १०३ |
| ११०. | क्याज़ि हर्योख | १०४ |
| १११. | लडी शाह | १०५ |
| ११२. | हा ज़ीवो | १०७ |
| ११३. | मोतऽच खबर | १०७ |
| ११४. | स्वपुन | १०८ |
| ११५. | रास (हिन्दी) | १०९ |
| ११६. | जो हूं | ११० |
| ११७. | चरनन प्रणाम | ११० |
| ११८. | सत्गुऽरऽः दया | १११ |
| ११९. | परमार्थसारुक सार | १११ |
| १२०. | पानो ज़ान | ११२ |
| १२१. | व्याप्त चराचर | ११३ |
| १२२. | तयार रोज़ | ११३ |
| १२३. | श्री शारिकाष्टक | ११५ |
| १२४. | उत्तरस्यापि अनुत्तरम् | ११५ |
| १२५. | शाह ह्यम | ११६ |
| १२६. | आलऽमि हैरऽऽनी | ११८ |
| १२७. | शक | ११८ |
| १२८. | ज्ञान वान (जन्म दिवस १९८४) | ११९ |

जय गुरु देव

श्री गणेशाय नमः

# सत्गुऽरऽः ख्राव

पऽज़ वथ सुऽई छ्यम म्यः वारऽ पऽऽठ्य् हावान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ
सत्गुऽरः ख्रावे तमिचे पुष्टे
तमिचे गर्दे बऽ पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।१।।

सारियौ विकल्पः बऽज़ ति नाश करऽनावान
अहं रुपऽः मंत्रस फुलऽःरावान
दीह वगैरऽः हंकारऽः निशि मुकःलावान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्यं लगः हऽऽ ।।२।।

सारी व्यधायि हुन्द सार छऽई सुऽई तय
शारिका दीवियि गुउड दितुनस
कम कम श्यश छिस पूज़ि लगिमऽत्य् तय
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।३।।

म्यानि मुऽकःलावनऽः खऽऽतरऽ हुउल गुम्डमुत छुन
मनऽक्य् मल मलऽः म्ऽन्जः छ्यम गालान
इहः लूक त परिलूक रथि छ्यम म्यः खागान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।४।।

भक्ती हीनस लोल भखशावान
बुऽज़ रुऽस मनःश्यस ज्ञानऽ दिवान
गुऽड हीन माया मलस छलःनावान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।५।।

अद्वयतऽः अछनई प्रकाश त्रऽऽविथ
द्वयतऽ भावस अोन आवान
मोहऽ अन्धकार छमय, सुऽई चलऽःरावान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।६।।

चुऽनःवय दीवियि रुप छुथसय आसान
षयनःवय वतऽः छः ननि हावान
शिवऽः सऽन्जऽ शक्तियि जिरिनः छुयसय जोतान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।७।।

सम्सारऽः व्यवहारः नारऽः ददिमऽत्य् नई
गुम्रावनस किच बोड सदराह
इम याद करनस तिमन मऽकःलावान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।८।।

बदनसीब लूकन धनऽ रूद त्रावान
कुनि केन्ह बलाय आसि चलऽःरावान
म्यः हिव्यन दासन दया करऽःनावान
सत्गुऽरः ख्रावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ।।९।।

---

इस स्तुती के १० श्लोक आचार्य श्री रामेश्वरजी झा की गुरु पादुकास्तुती का कशमीरी भाषान्तर है १० श्लोक दीन की प्रार्थना है

भक्ती सऽऽतिन बर बुकऽः आमऽत्य्
रामीश्वरन तुता करऽःनस
दीनन फ्युर् दियुत लोलऽः सऽऽत्य् तऽथ्य तय
सत्गुऽरः खावे पऽऽर्यी् लगःहऽऽ ॥१०॥

तथ सऽऽत्य् म्युल गव सत्गुऽरऽ खुऽरःसई
खुऽरः स्पर्शऽ सऽऽत्य् गयि सुऽ ति तरिथई
पऽच्य् ना वति वति सऽऽत्य् सत्गुऽरःसई
सत्गुऽरः खावे पऽऽर्यी् लगःहऽऽ ॥११॥

यलि रूठ गुऽरःसई अथऽ लागऽनोबुन
गरज़ ओसुस म्यः करिहे कृपा
वारः पऽऽठय् पुष्टी कऽर म्येः सत्गुऽरःनई
सत्गुऽरः खावे पऽऽर्यी् लगःहऽऽ ॥१२॥

पुष्टियन तमिच्यन ज़िनिः जऽ जऽ छय
गुऽरः सन्दि खुऽरः मलः मन्जः द्राये
तिमनई जाय दिमऽ बऽति ध्यठ डयकःसई
सत्गुऽर खावे पऽऽर्यी् लगःहऽऽ ॥१३॥

पऽऽर्य् बऽलगहऽऽ तऽम्य्संद्यन अथऽनई
यऽम्य् सुऽ लोलः सान घऽर तै चऽर
घरनः सऽऽत्य् सुति गव जगतस तरिथई
सतगुऽरः खावे पऽऽर्यं् लगाःहऽऽ ॥१४॥

तऽथ्य् छुस द्रहोय बऽति ज़ारः पारः करःवुन
खबर छयम छयम म्येः सुऽई रखिपाल
सुऽई दित् दीनस तऽम्य् दया करऽनई
सत्गुऽर खावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ॥१५॥

"दीनो" थुऽद वुऽथ कियाजि छुक शुन्गिथई
सत्गुऽरः खावे कर पूजा
तमि पूजायि सऽऽत्य शिवऽनाथ लऽभिथई
सत्गुऽरः खावे पऽऽर्य् लगःहऽऽ ॥१६॥

ज्यौ म्यः आयम खावई सुरिथऽई
सुऽई पऽ पऽ म्यः कुछि आयि भरिथई
तमि कुई द्यान ब रौज़ःहऽऽ करिथई
तऽथ्य् सऽऽत्य् पान ब थौवऽहऽऽ जरिथई
अदऽ च्योन प्रकाश वुछि ब सोरुई
मल म्यः रोज़ि नऽ कान्ह ति लोरुई
कूंशा तऽमिसऽन्ज़ रोज़ऽहऽऽ बनिथई
तमि सऽऽत्य् गम म्यः गछि हे चलिथई
सत्गुऽरः खऽऽवी कर म्यः दया.
कर म्यः क्षमा रछ म्यः सदा.

ॐ

## गणेश अशटक

गणपत मूलाधार सई
नमऽ गुऽडऽन्यथ तऽस्य यारसई ॥१॥

आदि पुरषस गुऽडन्यथ सु ज़ाव
आदि शक्ती यछा बन्याव
रछःवुन छु यत सम्सारऽसई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य यारसई ॥२॥

स्यद्धी छु दिवःवुन सुइ सदा
व्यघ्नऽ रुऽस करान पूर्ण मुदा
यगन्यस ज़पस प्रथ कारसई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य यारसई ॥३॥

मूशक वाहन शुभिदार
दोरान तेज़ सुः शाहसवार
प्रथ जायि गुऽडन्यथ वाति सूई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य यारसई ॥४॥

समुखस ईकदन्तस ब
कपिलस गजः करनकसई
लम्बूदरस श्री व्यकटसई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य यारसई ॥५॥

व्यघ्न:राजसव्येनायकस
धुम्रकीतस घनाध्यकस
बालऽचन्द्रस गजानऽनसई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य यारसई ॥६॥

बाह नाव स्यद्धिदा अमिसऽन्दिई
पर गुऽडन्यथ प्रथ कारऽसई
व्यवाह विद्यारम्बसई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य यारसई ॥७॥

मूलाधारस मऽन्ज़ बिहित
प्राराण कर भक्तत्य् इयिः म्यः निश
यूगस स्यद्धी दिनऽ वऽऽलिसई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य्यारसई ॥८॥

फरजा करुन छु इः अदा
गणपत पूजुन गुऽडऽ सदा
मुदा पूर्ण 'दीनऽ'' सई
नमऽ गुऽडन्यथ तऽस्य् यारसई ॥९॥

## गुरु दर्शन

शिव नाथ त गुरुदेव इकःवटः बुथि पेम
प्रणाम कस करः सोच बुउड प्योम
गुरु दीवस जल जल परन बऽ प्योस
यऽम्य् सऽन्ज़ि कृपायि शिवनाथ वुछोम् ॥१०॥

ॐ

## गुरु दर्शन

तुऽहि क्याः खबर छ्यौवऽ दर्शनऽ सऽऽतिन
असि क्याः शऽऽन्ती छ्यः ईवान
पोशश खबर छा व्योरस तमिकिस
बुऽम्बरस क्या छु स्वाद इवान ॥१॥

दर्शन दीयतौ कृपा करितौ
दया यलि यलि आसि वऽः इवान
नोकर सीवक यथ जगतस मन्ज़
बोछि विज़ि छा ज़ान्ह ख्यनऽ ख्यवान ॥२॥

त्युथ नोकराह बऽ बनःहऽऽ तुहुन्दुई
प्रथ सातः रोजःहऽऽ खोर मलान
दयायि प्यठ यलि तुहि ज़ान्ह इयिहीव
दऽऽद्य् म्यऽऽन्य् बलःहऽऽन छुस क्रेशान ॥३॥

तुहय अऽऽवह अज़ युत कृपा कऽरऽ वऽः
वुछिम इ लऽर् ति स्वर्ग बनान्
शशतऽर पारसस लगनऽः सऽऽती
इथः पऽऽठय सुऽन छु बनिथ गछान ॥४॥

सु दोह याद छुवऽः ज़ारऽः पारऽः करान
उऽश ओसुम म्यः दारि वसान
थुऽद तुलऽनुक तुऽहि वादऽ म्यः दितुवम
चेरः सऽऽतिन छुम् ज़ूव नेरान ॥५॥

तुहन्दे दर्शनऽ सऽऽती बो ज़न
थुद छुस वुऽथमुत फुऽलनऽः इवान
क्याः ताम कति ताम कम छुम वनि ति
जल जल अऽऽस्य्तोम पूऽरः करान ॥६॥

पऽ॑ पऽ॑ कोताः पुऽर स्यः भगवन
सुऽ॑ सुऽ॑ छुस ब पानऽ सुऽरान
वासन गन्ज्यौ डास स्यः कुऽरहम
कोनऽ छुस तिमनई बऽ पोशान ।।७।।

म्युन्द स्यः इहुन्दुई युत ताम चलिहेम
तुउत ताम रूज़तोम बुथ हवान
युथ "दीनऽः" पनन्यन कुठयन प्यठ रूज़ित
दर्शुन तुहुन्दुई रोज़ि करान ॥८॥

१९६३

## ईश्वर स्वरूपस जयजयकार

ईश्वर स्वरुपस पानऽः भगवानस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।१।।

नाराण दासस ग्ररिने माले
इमन युथ जायोव रुत सन्तान
तिहिन्दिस कर्मस तिहिन्दिस धर्मस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।२।।

नीलकऽण्ठ वनऽनस भई छुस बोड श्यश
जानकी नाथजी शास्त्र परनस
शारिका दीवियिः बोड योग लुभऽःनस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।३।।

बनारस किस रामेश्वरस
विद्यावानस द्वादशान्त होवनस
ग्रक नज़र करनऽः सऽऽत्य शक्तिपात कोरऽनस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।४।।

ग्रनन्त नागऽ द्रायोस, शरण ब गछऽसह
योरऽ द्राव स्वऽऽमी मायिसुमि रुऽटऽनस
पानस सऽऽतिन इशऽबऽर खोरनस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।५।।

पानऽ शिव नाथस त्र्यम्बक नाथस
दुर्वासाहस श्री वसुगुप्तस
सोमानन्दस उत्पलदेवस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।६।।

लक्ष्मन गुप्तस ग्रभिनव गुप्तस
श्री क्षेमराजस ब्ययि योगराजस
श्री मनऽकाकस स्वासी रामस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।७।।

थनऽ तस प्यनस नचनि ब लगःहस
धूप दीप जालस त नाव क्या करस
रामस लक्ष्मन ग्रऽज्य् ग्राव ज़न्मस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।८।।

सतः वुहुर यलि ग्रोस हवालऽ कोरनस
महताब काकस यूग करऽनावनस
शास्त्र परऽनस महेश्वर राज़दानस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।९।।

पूजायि खऽऽतरऽ क्याः ब ग्रनस
तुतायि मऽन्ज़बाग वनतऽ क्या वनस
मायायि कन छुनऽ ग्रन्तर मुऽखस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।१०।।

श्यत्रहऽवय त्वत इकः वटऽ ज्ञानऽनस
शिव सुन्द प्रकाश शक्ती ब्यकास
तथ सऽऽत्य मेलःनस दीह त पान गालऽनस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।। ११।।

श्ययित्रहन उन्गलन मन्ज बाग नचनस
ग्रेन मऽन्ज़ रोजुन मऽन्ज़ मधिधामस
तीलऽदारि सग दयुन चूरिमिस बागस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।१२।।

उत्फलदीवनिस प्रत्यभिज्ञन्यायस
अभिनव गुप्तनिस तन्त्रालोकस
आगम शास्त्रस युस ज़ानि सारस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।१३।।

इशऽबऽर गामय हऽऽरवनऽ वति प्थठ
आश्रम छुई तस फुऽलमुत त शोभनस
गछना शरण तऽथ्य् बरऽकिस दासस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।१४।।

वहयकऽ बऽऽश दोह् जन्मऽ द्यन छुई तस
सुबऽहऽऽय लऽग्य् श्यश पूजा करऽनस
ब्ययि सासऽबदिनई नवीद ख्यावनस
ईश्वर स्वरुपस जयजयजार ।।१५।।

आत्वारि दोहस श्यश खऽत्य् परऽनस
लोलऽ सान बनान पऽज़ि किस मरमस
कनौ ब्रोंण्ठई श्यछ वऽऽचऽ मनस
ईश्वर स्वरुपस जयजयकार ।।१६।।

सिलबर्न मिस अऽऽस ललऽवाक परऽनस
बऽति ओसुस तऽत्य् हू त हा बोज़नस
फश दित म्यः कलस भई परऽनोवनस
ईश्वर स्वरुपम जयजयकार ।।१७।।

सुई वाति पानय म्यऽऽनिस दावस
म्यऽऽनिस दऽऽदिस म्यऽऽनिम न्यायस
ब छुस रूज़ित तल तऽथ्य् सायस
ईश्वर स्वरूफस जयजयकार ।।१८।।

मन्गऽनि ब आसस बीछ़बीछ़ ह्यमऽहस
तस वरऽऽय वन्तऽ कस हलम ब दारस
दया कर तऽ जल दीनस अनाथस
ईश्वर स्वरूफस जयजयकार ।।१९।।

"दीनस" लोल छुई सीवा ब करऽहस
दोहऽ खुऽर छयऽल छयऽल अमृत च्यमऽहस
गोपी नाथस जाय ब निमऽहस
ईश्वर स्वरूपस जयजयकार ।।२०।।

## गुऽरस ज़ारऽपार

बलिवे नेरऽवय इशऽबऽर खसऽवय
तऽति किस ऋषि सई ज़ारऽपारऽ करऽवय ।।१।।

शिव नय शूभिदार मुक्तिदा त भुक्तिदा
तऽमि नयि ईश्वर शिखरस खसऽवय ।।२।।

यमि वति पुउकऽमुत उत्पल त अभिनव
सुऽई वथ गुऽरः सऽन्ज़ हऽऽवमऽच् रटःवय ।।३।।

सुछन्द भैरव जगतुक स्वऽऽमी
बहरूपः गर्भः सऽऽत्य् गुउड तस दिमऽवय ।।४।।

दीह् त प्राण त्रऽऽवित सोन वोगुन चऽऽलित
शिव नाथस सऽऽत्य् ज़ान अऽस्य् करऽक्य ।।५।।

आशुतोश भगवान यष्टऽदीव सोनुई
शास्त्रन हुन्द सार सुई वुऽन्य् लभऽवय ।।६।।

अन्नपूर्णा जी बतऽ असि पानऽ दियि
अद्वैतः भावना यलि अऽस्य् करःवय ।।७

करि क्या काल असि लक्ष्मन भक्त्यन
गुऽरः सुन्द दामानऽ युदवय रटऽक्य ।।८

शक्ती भऽक्त्य् अऽस्य् शक्ती प्रऽऽवित
द्वयत न अज्ञान राक्षस मारऽवय ।।९।।

शक्ती प्रावनुक ग्रकुइ ग्रोपाय छू
गुड़रः सुन्द दामानऽ वार ग्रऽस्य् रटऽवय ।।१०

ज़गतऽच्य् खुरय् नाव पकवऽन्य् छि पानय
तऽथ्य् मन्ज़ प्रकाश वारऽ ग्रऽस्य् वुछऽवय ।।११

सम्सार व व्यवःहार सद्राह छु बेसार
ख्यलऽवत्र त पम्पोश तथ मऽन्ज़ रोज़ऽवय ।।१२

कारूबार त्रावुन कति छू ग्रथि युन
कऽ कऽ न करुन गींता परऽवय ।।१३।।

ग्रमृत च्यमःवय गुड़रऽ सन्दि खुऽरऽकई
तऽस्य पथ पान ग्रऽस्य कऽन्य् कऽन्य् ख्यमऽवय १४

पर त पान त्रऽऽवित म्योन च्योन गऽऽलित
मायायि मलऽ निशि पान ग्रऽस्य छलःवय ।।१५

दीहुक शुम्शान ग्रात्मुक सबज़ार
ग्रानवस त कारमस द्रोत दित सगऽवय ।।१६

खसऽनस त वसऽनस सिर्यस त चन्द्रस
थप ग्रऽस्य् करःवय ह्यस ग्रऽस्य् थवऽवय ।।१७

हम्सऽ दारऽ खसऽवय वारऽ वारऽ ह्यसऽ सान
गंगऽ बलऽ शिवःनाथ ग्रदऽ ग्रऽस्य् बनऽवय ।।१८

लोलुक कोह छुई दुर्लब ति सुलब ति
ह्यासऽ डोल त डुलऽ गव हुश्यार खसऽवय ।।१९

पनऽन्यौ कोठ्यौ सऽऽत्य कुस कर तोर वोत
तोरऽ किस ग्रालऽवस नादा लायिवय ।।२०

पनः नुई पान छुई योरऽ त तोरय
लभऽने कोत द्राख घरि वुऽण्य् वुछऽवय ।।२१

मायायि सऽऽत्य् छुई ह्यस रोवमुत च्यऽः
पत कुन ग्रछय् दार मस ग्रदः च्यमऽवय ।।२२।।

माया ति कऽस्य् वोन भ्युन छेः ग्रासान
स्वतन्त्रः शक्ती पान ग्रऽस्य खटऽवय ।।२३।।

बडि खुऽतऽ बऽडय् छय शक्ती सुऽई चऽऽन्य्
शिव नाथ ग्रऽऽसित पृथ्य् ग्रऽस्य् बनऽवय ।।२४।।

ग्रकुई ग्रऽऽसित नाना रूपऽ किन
पानस सऽऽती पानऽ ग्रऽस्य् गिन्दऽवय ।।२५।।

शक्तीपात गव तोरूक ग्रालौ
तमि के प्यनऽ सऽऽत्य् पोश ज़न फुऽलऽवय ।।२६

पानो वारऽ वुछ ग्रऽछ्य् फश दित खोल
सोरूई ज़गत छुई रूप च्योन वनऽवय ।।२७।।

टाठ्यो दार मुऽर् लोलऽसान वारऽपऽऽठ्य्
सत्गुऽरऽ प्रसाद तऽथ्य् मऽन्ज़ रटऽवय ।।२८।।

नारस त जोशश भ्यन छा ग्रासान
शिवस त शक्तीं ग्रक ग्रऽस्य् वनऽवय ।।२९।।

कामन त क्रोधन डास कुऽरमुत छू
वासन ज़ऽऽलित कोसम फुऽलऽवय ।।३०।।

यन्द्रय दिचऽऽयन पान ज़ानऽनस किचऽ
करनीश्वर्यन पूज़ा करवऽय ।।३१।।

चुऽमऽटाव व्यवऽहार ग्रन्द्री ग्रन्दर ग्रछ
नतऽ यूत ज़ोठऽवय त्यूत छ्यमऽ गछऽवय ।।३२।।

ग्रात्मुक गाश ग्रसि पानस ग्रन्दर छू
न्यबर कुन नीरित ग्रनिगटऽ वुछऽवय ।।३३।।

अऽछ्य् टोण्टि कुनि मऽन्ज़ सोरुई केन्ह वुछ
न्यब्रऽ छि खुउय नाव आन्द्री फुऽलऽवय ।।३४।।

अऽछ्य् म्यानि प्रकाश कमि सऽऽत्य् इयि सय
अन्दर कुन मचऽराव रव तऽत्य् वुछिवय ।।३५।।

सुऽक्ती बननऽ खऽऽत्रऽ: अक वत असि ह्यछ
द्वग्न्यार चटऽनऽ: सऽऽत्य् प्रकाश लभऽ: वय।।३६

परामर्श व्यमर्श प्रकाश तऽमि सुन्द
शक्ती त नर व्यियि नाराण ज़ानऽवय ।।३७।।

शाम्बौ शाक्तौ आनव ओपाय
गुऽरऽ सई निश अऽस्य् अकि अकि ह्यछऽवय।।३८।।

शास्त्रस पानस निश वथ ह्यछनऽ खुऽतऽ
गुऽरऽ दीवसई अऽस्य पतऽ पतऽ पकऽ वय ।।३९।।

छिस अऽस्य् लाचार वथ सऽऽन्य् विचार
मऽन्ज़ नावि आचारचि सरऽसई तरऽवय ।।४०।।

आचारऽ नावि मऽन्ज़ डल क्याज़ि गछौ
विचारऽ खोरि सऽऽत्य् शक्ति बल वातऽवय ।।४१।।

आचार वानस व्यचारऽ सऽसतिस
सुचारुक दान, चारऽ अऽस्य मंगऽवय ।।४२।।

विचार यलि कोर नाचार त्वतऽकुई
सऽऽरय् सऽऽरय् सम्सार न दुरुई लभऽवय ।।४३।।

क्या सना लभुन त क्या छुस उपाय
गाटऽल्य् तति रऽऽव्य् अऽस्य् क्याः करऽवय ।४४।

कान्ह वनि यूग तय कान्ह वनि भक्ती
असलऽन्य् शक्ती अद्वयतऽ लभऽवय ।।४५।।

ज़ान छा बाज़ारऽ मऽल्य् कऽऽण्सि अनिमऽच्य्
यलि खुलि दृष्टी त्यलि अऽस्य मुलऽवय ।।४६।।

शक्ती पातुक टास यस प्यठ प्यियि
अज्ञानऽच्य् गटऽ तस कति आसिवय ।।४७।।

केन्हनस तामत कमताञ्ज वाचऽऽय्
तमि ति अपोर, अऽस्य हय तरऽवय ।।४८।।

इ ति न तऽ इ ति ना वनऽनः सऽऽती
कुनि नय केन्ह नय अथे इयिवय ।।४९।।

सू इ ति सू इ ति ज़ान्तो पानई
सूहस त हमस सू अदऽ गछिवय ।।५०।।

म्यइ कोरु कारुबार युस वनि नादान
तऽस्य तऽऽ पोण्य पाप ज्युन मरुन बनिवय ।५१।

वनऽनौ सऽऽतिन केन्ह ति नो बनान
बऽन्य् बऽन्य् ति बनऽनुई ती अऽस्य् बनऽवय ५२

कोताः परितन त कोताः सोरितन
गऽरु कृपायि रोस तथ क्या करऽक्य ।।५३।।

परुना ति सोरऽना ति तसऽन्जई दया छय
यस युथ खोश कर्यस तस त्युथ बरि वय ।।५४।।

दय कमि सऽऽत्य् बोज़ि किथऽ पऽऽठय् खोश गछि
द्वयत त्रावतन अदऽ गछि दइ दय ।।५५।।

ज़गतुक लोहलण्गर कर्मऽ फलऽ सऽऽत्य बनि
तस वरऽऽय शक्तिपात कति अऽस्य् अनऽवय ।।५५।।

तऽमि सऽन्ज़ दया, यलि असि आसि
बाकई क्याः रोज़ि अदऽ क्याः छाण्डऽवय ।।५७।।

दया शिवसस़न्त्र गुस़रस दया गयि
तस़स्य कुन ग्रस़स्य् वोन्य प्रणाम करस़वय ॥५८॥

शिवस त गुरस भीद छुनस़ आसान
सुई राज़ जस़ऽनिथ स्यद्धी लभस़वय ॥५९॥

खोश इयितन तस क्रूठ तस गछि़तन
बेछस़ बस़न्य् तस ग्रस़स्य् मस़ञ्ग्य् मस़ञ्ग्य् ति
मस़ण्गस़वय ॥६०॥

गुस़रस दीवस सान्यो दिनस प्यठ ग्रसि रोज़
तुहस़ञ्ज्ञन कुछिनई कम मा गछि़ वय ॥६१॥

दीन छुस प्योमुत बरस तल तुहस़न्दिस
बोछि छयम लज़िमस़च़ दियितोम बोड वय ॥६२॥

"दीन" छुस ग्रामुत छ़यदुन लभस़नि भ
ग्रथस़ प्यठ थवितोम कृपा करिक्य

## बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़

अनुग्रह करतम करतम म्यः दया
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़
वस़स़र म्यः छुम नस़ हसद म्यः छुम नस़ः
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥१॥

ई च्यः दितुथ शारिका दीवी
रामीश्वरस त जानस़ लाबरिस
नीलस़ः बकस़स़य् ति भक्ती कस़र च्यस़स़न्य्
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥२॥

गोपी नाथन सीवा करस़नय
ललिता दीवी पान ग्रर्पण
जगर नाथन लोल च्यः बुरनय
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥३॥

नाराण दासन कोछस़ः चस़ः रोछनक
ग्रर्ने माले द्वधस़ः गस़ल्य् च्योवनख
सस़स़म्पस़ कुजे ति गुस़र चई दोरनख
बस़ति छुस वननन ती निमस़ःहस़स़ ॥४॥

सम्बित प्रकाश कोताह जान
यूताः दूरि तुस़हि कल रोजान
शुर्य् बस़स़च़ मस़स़ज्य् ह्यथ पान वन्दान
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥५॥

प्रभा दीवी कर्म छि करिमस़त्य्
परस़नस़स़थन पानस़ शास्त्र परिमस़त्य्
लोलस चस़स़निस इम छिम फरिमस़त्य्
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥६॥

जिया लाल ही तुस़हि छी नमान
जान्की नाथ ही पर्ण प्यवान
कम कम गाटस़ल्य् कदर करान
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥७॥

रामस़ जू भाना महिन्दर सपुरा
ग्रर्जन नाथा शम्भू नाथा
श्री सूम नाथा खुस़र छि मलान
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥८॥

देवान सस़स़बाः गाटुल कोताः
मुत छु बनान त सालस़ ख्यवान
प्रेमस़ सान सीवा तुहन्ज़ई करान
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥९॥

कस़स़त्याह वकील कस़स़त्याह डाक्टर
प्रथ कुनि पेशिक बस़डय् मास्टर
ग्रकि ग्रकि वस़स़ती सस़स़री इशःबस़र्
बस़ति छुस वनान ती निमस़ःहस़स़ ॥१०॥

आश्रम तुहन्दुई क्याः शूभान
दासन अमिक्यन ढ्यकः छु फुलान
खुऽरण हऽन्ज़ गर्दा दोहऽ दोहऽ मलान
बऽति छुस वनान ती निमऽःहऽऽ ॥११॥

कुल्य् कऽटय् यति की बडऽ भाग्यवान
दोहऽ दोहऽ दर्शुन तुहुन्दई करान
दर्शनऽ सऽऽती फुऽलान फूलान
बऽति छुस वनान ती नितऽहऽऽ ॥१२॥

अनऽः कयाः वनऽः क्याः करऽः क्या दरःक्याः
पानऽ छिवऽः अन्दर त इम चीज़ न्यबर
अन्दरी अन्दर यति शिवऽ मन्दर
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥१३॥

कूशिश कऽर म्यः अन्दरिम भाव
न्यबर ब छटऽःहऽऽ सीनऽः चटिथ
तिम छि अनहद खटित मटित
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥१४॥

ला जवाब कथ छि ला इलाज दोद
यऽम्य् ती ज़ोन तस पथ क्या रूद
सु नऽ ज़ान्ह ज़ाव या सु नऽ ज़ाण्ह मूद
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥१५॥

शुरिस कोर म्यः ती ती तो
तऽम्य् तोरऽः कोरनम ती ती तो
कऽम्य् ज़ोन कर ज़ोन क्याः गव ती
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥१६॥

नमस्कार तिमन इम न म्यः लीख
ज़ानख न बऽः या गऽऽमऽ मशीत
अकि तुहऽन्ज़ि नज़रि गऽयि सऽऽरी तरीत
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥१७॥

पारसस सऽऽतिन इथऽः पऽऽठ्यन
शशत्र सोन गछान बनिथन
तिथय असि आत्म लाभ बनितन
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥१८॥

प्रणाम करनि आय कम कम
ज्यादऽ कऽऽन्सि मतलब कऽऽन्सि छु कम
आशा पूरऽः तुऽहि करऽःवऽ तिमन
बऽति छुस वनान ती निमऽःहऽऽ ॥१९॥

युस कान्ह भक्त्या तुऽहि निश आव
मतलब पूरऽः ह्यथ सु यति द्राव
कऽऽन्सि हऽन्ज़ थौवऽः नऽः तुऽहि ज़ान्ह ग्राव
बऽति छुस वनान ती निमऽःहऽऽ ॥२०॥

ही म्यानि गुऽरऽः दीवऽः ईश्वर स्वरूप
बूज्य्तौ ज़ारऽःपारऽः हऽऽवतौ म्यः रूप
आत्मुक दर्शुन आत्मुक स्वरूप
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥२१॥

"दीन" छुसना ब दास छुसना
तुहन्द्यन भक्त्यन हुन्द पलऽहऽऽर खोर
जेर म्यः करतम, करतम म्यः ज़बर
बऽति छुस वनान ती निमऽहऽऽ ॥२२॥

१९६४

## अस्तुती

क्याः वनऽः किथऽः कऽन्य् म्यानि ज्यवि अस्तुतो
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽ भगवन् ॥१॥

कुस सना चीज़ छू युस न च्यः म्यः दितुथ
दर्शुन ति प्रथकुनि मऽन्ज़ः वुछ म्यः च्योन
तवय दोहऽ दोहऽ च्यऽऽन्य् म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवन् ॥२॥

नतऽः क्याः म्यः ताकत च्यऽऽन्य् करऽ अस्तुती
चोनुई छु सोरुइ च्यऽऽनी छि संस्थ्यती
चानी दयायि च्यऽऽन्य् म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवन् ॥३॥

मूर्ख छुस बऽः अनपड छुस बऽः
तोति छुस नोव नोव च्योन रूप वछान
नवि नवि दर्शनऽः म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवन ॥४॥

यमि रूपऽः तमि रूपऽः चऽई छुक आसान
सारिवई रूपौ ति बेरूपऽः आसान
ती जऽऽन्य जऽऽन्य ब्ययि म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवन् ॥५॥

च्यऽऽनी वऽऽनी परा वाक वऽऽनी
पश्यन्ती त मध्यमा रूपऽः छ्यः फुऽलान
बैखरी रूपऽः अदऽः म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवान ॥६॥

च्योन नाव ह्यनऽः कुई अमृत च्यथ म्यः
च्योन रूप पूरऽः पऽऽठय् द्रेण्ठ छु इवान
तवै सुई नाव ह्यथ म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽ भगवन् ॥७॥

यलि नाव च्योन ह्यमऽः त्यलि नाव क्याजि फटि
नावऽ के हमऽः सऽऽत्य् स्यज़ म्यऽऽन नाव पकि
सू नाव पर्य् पर्य् म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवन ॥८॥

गयि म्यः जऽऽनी थुऽद छ्यम तुलऽऽनी
सुमरण च्यऽऽन्य दिथ लोल छ्यम दिवान
लोल भरनऽः खऽऽत्रऽः म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानऽः भगवन ॥९॥

"दीनस" जऽऽनी पोश छिम फुऽलऽऽनी
सत्गुऽर पनऽनुई लोल छुम भरान
सत्गुऽरऽः दयायि सऽऽत्य् म्यानि ज्यवि अस्तुती
च्यऽऽनी वऽऽनी करान पानः भगवन ॥१०॥

## दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस

जटि छ्यस गंग तय हटि सरफा तस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१॥

तेज़ धार तऽम्यिसऽन्दिस अथ त्रिशूलस
भन्गऽः च्यनऽ कुई छुस अछिन खूमार
भसमा मुऽलऽःमुत अथ सफेद बदनस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥२॥

चन्द्रमऽः शूभान छुस प्यठ डयकस
खीरऽः सागरऽः ज़ऽचऽः तनि ज़ोतान
भूत प्रीत हतऽ बऽच्य् सऽत्य् सऽत्य् यार तस्
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥३॥

सहऽः चम वजिमऽच शूभिदार बदऽनस
धोति कनि थौवमुत हऽस्य् चमऽरा
पऽऽण्चऽवऽन्य् कलन छी त्र्यः त्र्यः न्यथऽर तस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥४॥

जटि हुन्द मुक्कटा प्यठ छ कलस तस
कालऽः कूट ज़हर च्यथ हुट तस न्यूल
अरदाह वज़ऽर ह्यथ अरऽदाह नरि तस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥५॥

शूभान सर्फ गुन्सऽ: अङ्गस अङ्गस
बिच तय ज़िर्नि क्यम नऽऽल्य् मालऽ: छ्यस
क्याः वनऽ किछ़ शूभ अमि सऽऽत्य तस शिवस
दर्शनस गोसन्य् आव श्री कृष्णस ॥६॥

कलऽ: माल बडि बऽड बोज छय नऽऽल्य् तस
खडक त खीठक तेज़ ज़ोतान
फऽऽण्स्य् ति टोंगऽ: ति रऽटिमऽत्य् मन्ज़ अथस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥७॥

शर त पेनाक द्वन अथन वुछिमस
वर त अभय मुद्रा, द्वन अथन
द्ववनऽवय भक्त्यन तसली छि दिनस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥८॥

मुऽन्ड त खट्वाग्ग रटिमऽत्य मन्ज़ अथस
वीना त डूम्रू बाजऽ: वायान
धन्टायि छन छन सुऽर मिलऽ: नावनस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥९॥

वुज़ऽ: मलि: डण्ड छुस खोफोनाक ज़ोतःनस
मकज़ाह न आयुध गुऽभ तुलऽमुत
गोर्जाह अलौक्यक गोल पूरऽ. नचऽनस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥१०॥

कैलासऽ: द्राव यलि दीवियि: वुनऽःनस
क्याः मयः निकना अज़ पानस सऽऽत्य्
दोपनस खबर छ्यम वऽन्य् चऽ: आमऽच् बस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥११॥

वोत यलि गूकल ग्वालऽ: बाल वुछऽ: नस
तिम ति लऽग्य् नचऽने प्रीतन सऽऽत्य्
माजि छ्यक खोचान इनऽ: प्राह गछ्यस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१२॥

बम बम आलक बरऽ: तलः बूलऽ: नस
दायि द्रायि ज़ल जल मुऽछि फोल ह्यथ
इ नऽ केन्ह त दर्शुन करऽ: श्री कृष्णस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१३॥

दायि चायि जल जल जसुदायि वनऽनस
भयन्कर फोलःवुन गोसोन्य आमुत
मोछि फूऽल न रटनई त वुछिहे कृष्णस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥१४॥

जसुदा मऽऽज्य् द्रायि पानय वुथि तस
गऽऽव त गुपन ह्यथ दिनि: दानस
लाल त जवऽऽहिर मऽन्ज़ ह्यथ थालस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१५॥

ज़ारऽ: पारऽ: कोर तमि तस शिवऽ: नाथस
लवऽ: तय फ्रट मा गछि कृष्णस
रातुक छु ज़ा शुर क्या चऽ: करऽख तस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१६॥

शिवनाथ छुस दपान लगय माजि भावस
शुर च्योन छुनऽ: मऽऽमूली कान्ह
त्रियःलूकी नाथ आमुत ज़न्मस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१७॥

अमि सऽन्द्य् गुऽण च्यः आमुत ब वनऽनस
पऽऽपियन गालनि आमुत् छू
लीला खेलनस त उपदीश करऽनस
दर्शनस गोसोन्य आव श्री कृष्णस ॥१८॥

छय ना खबर च्यः रोटऽःथन इः कोछस
सृष्ट थ्यत संहार पानऽ: करऽ: वुन्
भक्त्यन रछनस त दोष्टन गालऽ: नस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ॥१९॥

जसुदा माता भाग्य् अऽऽय फोलऽ: नस
ज़गतस रछऽव्रुन च्य: कोछि रछऽनुई
हो हो करुण छुई च्य: मूक्षि दातस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ।।२०।।

कर्म ज़नमन ह्रऽद्य् आमऽत्य् च्य: वुदऽयस्
आन्गनस मऽन्ज़ गिन्दी गूपी नाथ
अऽछ्य् मऽन्ज़ जाय कर त्रिभवुन नाथस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ।।२१।।

अदऽ: बा वुछऽ: तन छुनऽ: यलि चारऽ: बस
गुपि सई मऽन्ज़ अनुन श्री कृष्णा
अऽस्य् अऽस्य् कृष्णऽ: जू गिन्दान शिवऽ नाथस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ।।२१।।

शिवऽ: नाथन वुनुस क्या ताम मऽन्ज़ कनस
अदऽ: द्राव वापस कैलाश कुन्
द्वनऽ: वय कुनी छी "दीनऽ:" लग प्रणामस
दर्शनस गोसोन्य् आव श्री कृष्णस ।।२३।।

## भ्रम

शंकरऽ: भयि हर म्य: ज्यतऽ: मरऽ: चक्रुक
प्योमुत छुस चानि बर तल ब प्योमुत
सतगुऽरऽऽ भयि हर म्य: ज्यतऽ: मरऽ: चक्रुक
प्यीमुत छुस चानि बर तल ब प्योमुत ।।१।।

सोरुई ज़गऽथा शिव रूप वुछऽ:मई
नार त वशनेर कुन म्य: वुछमई
नशि छुम खोतऽ: मुत कुसताञ्ज आसऽ:नुक
प्योमुत छुस चानि बर तल ब प्योमुत ।।२।।

म्यई कोर म्यई कोग क्याज़ि म्य: कोरऽ: मय
क्या: गोम च्योन नाव ज़ान्ह ति ना सोरमय
पन: नुई पान छुम पानस फोरमुत
प्योमुत छुस चानि बर तल ब प्योमुत ।।३।।

यन्द्रियि चूर छिम पतऽ: म्य: लगिमऽत्य्
दीह लरि शुर्य् बऽऽच प्यठ छिम खतिमऽऽत्य्
भ्रमऽ: सऽऽत्त भ्रम्य् भ्रम्य् भ्रम छुस बन्योमुत
प्योमुत छुस चानि बर तल ब प्योमुत ।।४।।

अख छयम म्य: आशा च्यऽऽनी आशा
भ्रमऽ: सई म्यऽऽनिस कर त चऽ: नाशा
"दीन" छुई ज़ारस त पारस लोगऽमुत
प्योमुत छुस चानि बर तल ब प्योमुत ।।५।।

## मनऽ: कामना

प्राणदाता म्यानि बोलऽ: सह यूर्य्
मनऽ: कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ: पूर ।।१।।
जय जय शम्भू शिव शंकर
बम भोले तुम हो भ्यंकर
मिनतज: करान छुस च्यई बऽ: पूर
मनऽ: कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ: पूर ।।२।।

धन दौलत छ्मनऽ: केन्ह म्य: बकार
हर वकत नाम लूं मैं तेरा पुकार
भक्ती हऽन्ज़ करऽ: हऽऽय च्य: चूर
मनऽ: कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ: पूर ।।३।।

अष्टऽ: स्यज़ करऽ: क्या: लगि कथ म्य:
दर्शन का मुझे अमृत दे
दूरिरन च्यऽऽन्य् म्य: कोरनम सूर
मनऽ: कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ: पूर ।।४।।

अद्वयतऽ भाव म्यः दिम पूरऽ पऽऽठय्
ता कि में देखूं सब कुछ एक
Diversity मऽन्ज़ Unity पूर
मनऽ कामना म्यऽऽन्य्.कर सह चऽ पूर ॥५॥

इ छु ति छु सोरुई चऽई योल छू
तू ही सार है सू हम् सू
ज़ान्ह मतऽ रोज़तय मनऽ निशिः दूर
मनऽ कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ पूर ॥६॥

अऽऽस्यतन म्यः चऽऽन्य् हर वक्तऽ दया
दासऽ पेः तू अब कर ले कृपा
वारऽ पऽऽठय् हावतम पनऽ नुई नूर
मनऽ कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ पूर ॥७॥

Let me serve you night and day
सब कुछ जानू आप हैं वे
शक्ति दि "दीनस" सुई भरपूर
मनऽ कामना म्यऽऽन्य् कर सह चऽ पूर ॥८॥

गुऽरऽ नई कऽरनम पूरऽ पऽऽठय् कृपा
गुऽरऽ नई दितुनम ह्यस तय होश
दर्शन दीनस दितऽ जल सत्गुऽरऽ
दासस पनऽनिस मसऽ ज़ान्ह रोश

## मुऽदुर दोद

यमि सऽऽत्य् पानय इम दऽऽद्य् बलऽ हऽऽन
भगऽवानऽ दितऽ म्यः सु मुऽदुर दोद ॥१॥

शास्त्रन सार छ अख भक्ती रस
यऽम्य् सुई रस च्यव सुई मुऽकल्यव्
तमि रसऽ म्यति वुऽन्य ईम दऽऽद्य् बलऽ हऽऽन्
भगऽवानऽ दितऽ म्यः सु मुऽदुर दोद ॥२॥

यूग तय ज़फतफ ज्यूठ कारा छू
किथऽ गछऽ ज़ छि वति छुस लाचार
बोड दिम शक्तिपात इम दऽऽद्य् बलऽ हऽऽन्
भगऽवानऽ दितऽ म्यः सु मुऽदुर दोद ॥३॥

ज्यादऽ केन्ह मण्गऽ नऽ अक लोल मण्गऽहऽऽय
यहऽलूक परिलूक रथि खसिहेम
लोल दिम पनऽनुई इम दऽऽद्य् बलऽहऽऽन
भगवानऽ दितऽ म्यः सु मुऽदुर दोद ॥४॥

युस दोद गूपियन वऽऽलिञ्ज़ मण्ज़ ओस
राधिकायि प्योमुत यमि दादि वेह
सुई दोद म्यति दिम इम दऽऽद्य् बलऽहऽऽन
भगवानऽ दितऽ म्यः सु मुऽदुर दोद ॥५॥

सीनऽ च़ुऽट हनूमान यूस दोद हावान
यमि दादि सदरस वोठ तारान
संजीवन सुई दिम इम दऽऽद्य् बलऽहऽऽन
भगवानऽ दितऽ मेह सु मुऽदुर दोद ॥६॥

नारुद तमि दादि जायि जायि फेराण
वींनायि प्यठ परान भक्ति सूत्र
तिम ब ति परऽहऽऽ इम दऽऽद्य् बलऽहऽऽन
भगवासऽ दितऽ मेह सु मुऽदुर दोद ॥७॥

क्याः वनऽ कियऽ पऽऽठय बन्द छुस गोमुत
मल त्र्यः पनऽ नी गण्ड छिम करान
मल म्यः छलतम इम दऽऽद्य् बलऽहऽऽन
भगवानऽ दितऽ मेह सु मुऽदुर दोद ॥८॥

मल छुम बोड ह्यू छुस ब कुस्तान्य्
भऽई छुस करान त म्योनुई छु ईः
इम भ्रम कास्तम इम दऽऽद्य् बलऽहऽऽन
भगवानऽ दितऽ मेह सु मुऽदुर दोद ॥९॥

दीह लरि शुर्य् बऽऽच् पान छुस ब ज़नान
इहन्जई पूज़ा फर्ज मानान
इहऽऽय गटः कास्तम इम दऽऽद्य् बलऽःह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१०।।

अकलि स्यानि क्याज़ि छु चोन्ग छ्यतः गोमुत
सोरुइ च्यऽई छुक मशरोवुन
ती याद पावतम इम दऽऽद्य् बलऽःह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः म्यः सु मुऽदर दोद ।।११।।

लोल च्यऽई बरऽह्ऽऽ च्योन रूप ज़ानऽह्ऽऽ
मायायि थुद छुक चऽई आसऽःवुन
गुऽरः ती वनतम इम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१२।।

कायायि पथ छुस मुउत ब गोमुत
मायायि अछऽनई परदऽः त्रोवमुत
ती अन्यर कास्तम इम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१३।।

ज़ोनुम छुस बऽच्योनुई रूप तय
प्रथ विज़ि क्याज़ि छुम न ती भासान
ती भास अनतम इम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१४।।

मशरब त यादाश्त द्वनः वय दिति थम
द्वनऽः वऽन्य् मऽन्ज़ छुक चऽई आसऽवुन
यादाशत योत दिम इम दऽऽद्य् बलःह्ऽऽन
भगवानऽ दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१५।।

मशरबऽः सऽऽत्य् छ्थम अनिगटऽः गछ्ऽःवऽन्य्
यादाश्त छम मेह गाश अनऽःवुन
प्रकाश हावतम इम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितः मेह सु मुऽदुर दोंद ।।१६।।

यादाश्त च्योनुई सुखदा छुम मेह
ह्यस मेह रोज़तन प्रथ सातय
मस सू चावतम इम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१७।।

मशरब ति यादाश्त बनितन मेह वुऽन्य्
दुऽखऽ मऽन्ज़ऽः च्योन सुऽख मेह भऽऽस्य्तन
मशुन मशरावतम ईम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१८।।

क्युथ ह्य् छुक चऽः तिमऽनई भासान
द्वोह त रात इम छी रोज़ान अन्दर
सुई भास हावतम इम दऽऽद्य् बलऽह्ऽऽन
भगवानऽः दितः मेह सु मुऽदुर दोद ।।१९।।

अन्दर्युम सुऽख मेह प्रथ विज़ि रोजनतन
न्यब्रयुम कारुबार पकःवऽन्य कुऽल
कुऽलि मऽन्ज़ऽः खारतम इम दऽऽद्य बलऽह्ऽऽन
फगवानऽः दितः मेह सु मुऽदुर दोद ।।२०।।

प्रथ चीज़ऽः मऽन्ज़ऽ ब बुथ च्योन वुछऽःह्ऽऽ
वृच गलऽःनच कऽऽम ज़ीठ छि स्यठाह
पानऽः बुथ हावतम इम दऽऽद्य् बलऽःह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः म्यः सु मुऽदुर दोद ।।२१।।

नाव च्योन सुऽरऽःह्ऽऽ जप च्योन करऽःह्ऽऽन
च्यऽई सऽऽत्य् मीलिथ चऽई बनिथ
भाव बडरावतम इम दऽऽद्य् बलऽःह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।२२।।

यथ्य् ज़नमस मऽन्ज मेलःह्ऽऽ च्यऽई सऽऽत्य्
अथः प्यठ थावतम शिवनाथ जी
चऽई बलऽरावतम इम दऽऽद्य् बलऽःह्ऽऽन
भगवानऽः दितऽः मेह सु मुऽदुर दोद ।।२४।।

"दीनऽ:" क्याज़ि छुक चऽः ब्यायि केन्ह छ़ान्डान
गुऽरऽः दीव च्योंन छु ईश्वर स्वरुप
शिव सुई ज़ानतन इम दऽऽद्य् बलऽःहऽऽन
सुई गव् भगवानऽ सुन्द मुऽदुर दोद ।।२५।।

१९६५

## ईश्वर स्वरुप अविनाशे

(जन्म दिवस १९६५)

जन्म दिन पर दर्शन के लिए जम्मू से श्रीनगर जाते ज़ाते बादल और बारिश देखकर बस में लिखी हुई गुरु वन्दना।

द्रामुत छुस ब चाति आशे
ईश्वर स्वरुप अविनाशे ।।१।।

अनिगटऽ छ्यम चवापऽऽरी
करतम पानय म्यः यऽऽरी
अनिगटि करतम गाशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।२।।

नाल वुऽलः नम मोह ज़ालन
डास कुऽरःनम अज्ञानन
इमःनई करतऽः चऽः नाशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।३।।

वथ ज़ीठ कूठ छुम सफरा
चऽई अक छुक मेह राह नुमा
वथ हावतम माशि माशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।४।।

क्याज़ि अबुरन ब खोचऽनोवुस
रोदन हेह बऽ ख्यावऽनोवुस
वातऽः हऽऽ निश च्यः गाशः गाशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।५।।

च्यऽऽनी छ्यम मेह सत ईः
खुलऽ रोज़ि म्यऽऽनी वत ईः
व्यगचि पसि करतऽ नाशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।६।।

वति प्यठ ओनः थस च्यई बः
लोल दित पकऽनोवथस बः
मुऽक्ती हऽन्ज़ दिम राशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।७।।

वति प्यठ छुस करान ज़ऽऽरी
कास्तम सऽऽरऽई खऽऽरी
"दीनस" दुऽखन कर नाशे
ईश्वर स्वरूप अविनाशे ।।८।।

## हेह

क्याः छुस ब त क्या न छुस ब
कऽम्य् ज़ोन त कऽम्य् न ज़ोन
दोप यऽम्य् ज़ोन तऽम्य् ज़ोन न केन्ह
त यऽम्य् न ज़ोन तऽमी मा ज़ोन ।।१।।

ज़ानुन छु क्या ज़ान गव् पान
ओरऽः कति इयिः ज़ान पानई गव् ज़ान
करुण छाः ज़ानुन ज़नुन ति गव् करुण
अ प्यठऽ क्षहस ताम पानई छु वरुण ।।२।।

ब्युन छु न पानस निशि केन्ह
ज़ानि क्याः त ज़ानि कुस
पोश वन्या पानस पोश
खबर क्याः छ्यस ब क्याः छुस ।।३।।

पोश गव् बाग त बागई गव् पोशश
पोश छुनऽ: अगर बाग नऽ:
त बाग ति नऽ: न्ह
अगर न पोश ॥४॥

आत्मा नय आसि परमात्मा कति इयि:
मगर आत्मा द्राव परमात्मसई निश
भगवान छु त्यलि जीव यलि
जीवस निश द्रावऽ सु किनऽ जीव तस निश ॥५॥

न द्राव केन्ह कऽऽणसि निश
त नऽ अलग छ् केन्ह
सुई ब त बई सुः
भ्यनरुक छ् सिरिफ हेह ॥६॥

हेह: मुऽण्ड छे: मेह च्येह निश श्युन छुस
किथऽ पऽऽठ्य कुन जानऽ: पान च्येह सऽऽत्य्
अछय् छयम अनिगटऽ: बुथ कमि सऽऽत्य् बुछि
गाश में अन्तम दयायि सऽऽत्य् ॥७॥

लग: हऽऽय ब पादन वन्द: हऽऽय ब पान च्येह
यी छुम त ती छुक चुई पानय
वन्दऽ: कस त वन्दऽ: क्या पनुन् मेह: छुम क्या:
चोनई किथऽ: करऽ: च्यई पेश कशा ॥८॥

पान ति छुम न केन्ह जानुम छुक सुति चई
ज़ानस त पानस न भ्यन आसान
शिव गव् शक्ती, शक्ती गयि शिव
नार त वुशनेर ति कुन आसान ॥९॥

"दीनो" छोपऽ: कर ज्येठुन कुउत छूई
पोत अछ् तमि सऽऽत्य गछ् रोशन
अमृतऽ: वर्शुन पानस अन्दर छूई
क्याज़ि छूक न्य बरऽ: चंऽ: तोशन ॥१०॥

## कऽर्य् कऽर्य् न करुण

म्ये: म्ये: कोर कटन, चोटऽहस होट
म्ये: कोर युस वनि, सु छूई खोट ॥१॥

करान कुस्ताञ्ज, त भार कस्ताञ्ज
न करनस छूई, यति भार छोट ॥२॥

पानो ह्यस थौ, भार मऽ हे:
कोर तमिई पानऽ:, मगर सु छूनऽ: ख्रोट ॥३॥

कऽर्य् कऽय् गछि न करुन
नतऽ: करुन कऽम्य कर त्रोव
करनवोल सु पानय
नाहकय असि पुऽन्य् पाप प्रोव ॥३॥

यऽम्य् कोर कारुबार, सु आनन्दई योत
हेथ छूक चऽ: मऽ; हे: भार
आनन्द "दीनऽ:" बन, सुई पान ज़ान
तऽम्य पानऽ: कोर सोरुई,
त्राव तऽस्य कारुवार ॥५॥

## फुऽलुन

भीदस व्यमर्श कर हु त इ: गौ सुई
परामर्श पानय करख अहमुक
अहमऽकि परामर्श: प्रकाश बारऽ: पऽऽठ्य
शक्ति पातऽ: सऽऽतिन पानय फुऽलान ॥१॥

शिव छ् प्रकाश योतई आसान
शक्ती हुन्द रूप कर परामर्श
जगऽतऽकि भीदऽ: मऽण्ज़ऽ: ती व्यमर्श कऽर्य कऽर्य
स औ तऽ आ: यूगी छु फुऽलान ॥२॥

सत रूप ज़ानुन सार ज़गऽतुक सुई
शक्ती त्रशूल रूप यच्छा ज्ञान क्रया
दो पयोरा गौ चित आनन्द सुई
शिव भाव इथय पऽऽठय् यूगियस फुऽलान ॥३॥

चद्रमऽ: प्रमीय तऽ: सिर्यि प्रमाण
अग्नऽ: रूप प्रमाता सई कर लय
प्रान अपान तिथय पऽऽठय् मद्य दामस मऽण्ज़
अनुग्रहऽ: गुऽर: सन्दि यूगियस फुऽलान ॥४॥

कान्ह चीज़ छु न भ्युन, दयस निशि आसान
कारुबार सोरुई तऽम्य् सुन्दुइ रूप
सुमरत मगर "दीन" दयि: सऽण्ज़ हर दम
भऽक्त्यन मऽण्ज़ दयि: लोल छु फुऽलान ॥५॥

कुन छु नऽ: केन्ह गछुन मूक्षिदाम छाऽडनि:
कुनि जायि छुनऽ: तथ पोशिभाग केन्ह
सोरुइ ज़गत वुछ दयस निश अभिन्न अदऽ:
सुई पानय मूक्षिदाम छु फुऽलान ॥६॥

क्याज़ि छुक फेरान क्या: छुक गारान
कोत छुई गछुन च्ये: दय लभऽने
यम्द्रेयि अन्दर फिर तऽत्य् ज़गत वारऽ: वुछ
शिव नाथ पारवती तऽत्य् छि फुऽलान ॥७॥

पानय चऽई छुक सोरुई ज़ग:था
पानय मशरोवथन पनुन पान
पानय पनुन पान ब्ययि छुक छाण्डान
माया रुप इथय पऽऽठिन फुऽलान ॥८॥

मशुन ति चऽई छुक याद प्युन चऽई छुक
चऽई छु क दोह त रात गाश अनि गटऽ:
अमि सारी निशि थूऽद चऽई पानऽ: छु क
सोरुई केन्ह चऽई पानय फुऽलान ॥९॥

जागरत ब्रह्मऽ: सुन्द व्यराठ स्वरुप चऽई छुक
सुऽपुन पनऽ:नई तीज़ छु क चऽ: वुछान
सुशफ्ती ज्ञानऽ रूप चऽई छुक आसान
तुर्य: तुर्यातीत चऽई छुक फुऽलान ॥१०॥

बस आनन्द छु क आनन्द पान ज़ान
हर वक्तऽ: आनन्दस मऽन्ज़ रोज़
आनन्द शिव रूप आनन्द ज़ीव रूप
आनन्द शक्ती रूपऽ: फुऽलान ॥११॥

"दीनऽ:" कर छुऽपऽ: वुऽन्य आनन्द रस च्ये:
भक्ती सरस मऽन्ज कर श्रान द्यान
तमि सरऽ: मऽन्ज़ऽ: आनन्दऽ: अमृग
स्वात्मऽ: रूप वुछतन किथऽ कऽन्य् फुऽलान ॥१२॥

## तोह मुनुन

मनऽ: म्यानि क्याज़ि चऽ: दोहऽ दोहऽ तोह मुनान
करतऽ: सुऽई कथ यथ मऽण्ज़ दयि(केन्ह)लाभ॥१॥

इ बन्यौ ति बन्यौ दयि कुऽरमुत बन्यौ
पुऽकऽमुत पोन्य् छुनऽ: ह्यु र ज़ाण्ह खसान
कोनऽ: दयि कर्ऽतिस शुकराणऽ: च करान
करतऽ: सुऽई कथ यथ मऽण्ज़ दयि लाभ ॥२॥

लूकऽ: दलवाञ्जुल नाहकय चऽ: फिरान
हुमिस गौ इ: तऽ:, यमिस क्या: ताम
वनतऽ: क्या छुई च्ये: अमि मऽन्जऽ: नेरान
करतऽ: सुऽई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥३॥

हुम्य् वुउन इथ: पऽऽठय् यम्य् वुऊन इथऽ: पऽऽठय्
नाहकऽ: पाहकऽ: दोह त रात म्यन्गऽ: च्ये: फुऽलान
अथ्य वक्तस आस्तऽ: दयि नाव चऽ: सोरान
करतऽ: सुऽई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥४॥

न्यन्दा द्वयिम सऽन्ज़ बोड पाप आसान
ब्ययि सुन्द गऽन्ज़ारित केन्ह न नेरान
तमि सऽऽत्य् तिहुन्द पाप च्यऽई कुन छु तरान
करतऽ: सुऽई कथ यथ मऽण्ज़ दयि लाभ ॥५॥

जान कोर कऽऽन्सि त पानस तऽम्य् कोर
यम्य् नाकारऽ: कोर सु ति पानऽ:सई फोर
न्यमल पनुन पान क्याज़ि न चऽ: थवान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज़ दयि लाभ ॥६॥

पनऽन्य् किन सारिनई जान आस्तऽ: करान
अदलस बदल छ्य्ऽई कम ज़ऽऽती
पनऽ: नुई स्वभाय बियुच त साध हावान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥७॥

बियुच त साध

शीतऽ: कालम मऽण्ज साध आन ओस करान
बियुच मर्स्य् मर्स्य् ईरऽ: ओस वसान
साध अथस प्यठ तुलित छुस होखऽ:नावान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज़ दयि लाभ ॥८॥

बिचिस युथुई ज़ूव चाव टोफ यकदम दिवान
साधस अथऽ: डोल बियुच पऽऽनिस प्यवान
द्वयिमि अथऽ: सऽऽत्य् सन्त थोद तस छु तुलान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥९॥

ब्ययि सु बल्यौ छुस टोफ ब्ययि दिवान
करि क्या: स्वभाव न त्रावनऽ: इवान
साध ति पनुन स्वभाव, छुनऽ केन्ह त्रावान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥१०॥

ब्यायि साध पानि मऽण्ज़ऽ: थोद तस छु तुलान
वुछि वऽन्य् छिस बोड असुना करान
ह्यमसक बियुच कियाज़ि साधऽ: चऽ: रछान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥११॥

क्या: गोवऽ: छुवऽ: ना तुऽहि फिकिरि: तरान
बियुच पनुन स्वभावई छु हावान
स्वभाव क्याज़ि आसऽ: ब पनुन ति त्रावान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज़ दयि लाभ ॥१२॥

अऽम्य् कऽर पनिन कऽऽम बऽ पनिन छुस करान
अऽम्य् दिच् टोफ ब ज़ीव बचावान
पनऽन्य् पनऽन्य् कऽऽम अऽस्य् द्वनऽ:वय छि करान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽन्ज़ दयि लाभ ॥१३॥

"दीनऽ:" सबक इ:, याद आस्तऽ: थवान
प्रथ कुनि रण्गऽ: दयि लीला वुछान
इ: दय करि ति, जान छु सु करान
करतऽ: सोई कथ यथ मऽण्ज दयि लाभ ॥१४॥

## लोलऽ: बेमार

करऽ: क्या: व्यसिये, रवेटऽनस ज़गतन
वसि म्ये थौनम, दजऽ: वुन नार
त्रावऽ: हऽऽञ्ज ब वुऽन्य् इ:, त्रावान छुम नऽ:
नऽऽल्य् छुम गोमुत, कालऽ: शाहमार ॥१॥

प्रथ पासऽ: रोटऽनस, हनि हनि ख्योनस
कुनि कुन फेरऽ:नस, छुमनऽ: म्ये: वार
वनऽ: हऽऽ बऽ यारस, मार मटि खारस
दियम नय जल जल, वोन्य् म्ये: तार ॥२॥

खुर्य नावि मऽण्ज़ छुस, ह्यनऽ: बऽ: आमुत
तारस कति अनऽ:ऽ, खऽण्डफुट हार
इयम नय पानय, अपोर तारय्म
चारऽ: क्या करऽ: छुस लोलऽ: बेमार ॥३॥

सरस मऽण्ज़ नाव छ्य्म विजिवाव त्रोवनम
रूद छुम वसान, धाराधार
यन्द्रे यि चूर छिम, वासनायि घनि छ्य्म
कलस प्यठ मलन हऽन्ज़, गोब छयम् खार ॥४॥

वति प्यठ प्योसय, ग्रदौ ब ख्योसय
कऽऽञ्सि ति ग्राव न, ग्रक रछ़ ग्रार
इमऽय म्येः ख्यऽऽविम, मस गऽल्य् च्यऽऽविम
तिमय म्येः द्रामय, चूरऽः सरदार ।।५।।

गुऽर म्यऽः रोटऽःमय, खुऽर म्यऽः छलिमस
सुई योत वुछःमय, पोज़ मददगार
वथ म्येः हऽऽवनम, चारऽः तऽम्य् कोरनम
ग्रात्मुक करऽः नोवनस व्यचा़र ।।६।।

ग्राचा़र दितुनम, स्वचा़र होवनम
लाचार त्वतस ति, होवनम सार
रचि़ रचि़ खोरनस, हनि हनि ख्योवनस
मटि मटि दितुनम, कोरनम कार ।।७।।

तऽस्य बऽः लगऽहऽऽ, पऽऽर्य् पऽऽर्य् पादन
पऽज्य् पऽऽठय् सुई छुम, म्येः पोज़ यार
भगवान सुई छुम, दर्शुन दितुनम
ग्रसलुक करऽः नोवनस बापार ।।८।।

ग्रालव तोरय, तऽम्य म्येः कोरनम
भक्ती दिचऽःनम, सारिकुई सार
इ ज़गत सोरुई, पानऽः शिव नाथ गव
उपदीश दितुनम, ती बार बार ।।९।।

शिव नाथऽः प्यठऽः, पृथवी तामत
श्ययित्रऽः त्वत म्येः, छिम पासदार
तमि चिई ग्रन्द यलि, याद थवऽः नोवनस
ग्रकि ग्रकि होवनम, तमि कुई सार ।।१०।।

शिव नाथ याद थौ, शक्ती सुई गौ
सदाशिव ईश्वर, शुऽद्धविद्यादार
मायाथि मऽञ्ज़, ब्ययि पऽऽञ्च् मिलऽःनावतक
काल-कला-नीती-राग, ग्रविद्या मार ।।११।।

पुरुष त प्रकृत वारऽ पऽऽठय याद थौ
मन बोज्य् ब्रोह चऽः, वुछ ग्रहंकार
पऽऽञ्च् ज्ञान यन्द्रय, पऽऽञ्च् करनऽक्य् ज्ञान
पऽऽञ्चन तनमात्रन कारुबार ।।१२।।

पऽऽञ्च् तन्मात्र, पानऽः वऽन्य् यलि मील
पऽऽञ्च महाभूत, ग्रदऽः गई तयार
मायायि प्यठऽः पृथवी, ताम ग्रकऽःत्रऽः
त्वत रूप इः जगत, छुई साकार ।।१३।।

सत्मात्र सुइ ज्ञान, भगवत शक्ती
यच्छा ज्ञान क्रया हुन्द, ग्रौ ग्राकार
भ्यन मतऽः मान्तो ग्रद्वयत ज़ान्तो
नतऽः छुई प्योमुत, च्येः ग्रन्धकार ।।१४।।

सोरुई इः मिलऽःनाव तन पानस सऽऽत्य्
शिव शक्ती वुछ वऽशनेर नार
ग्राह ग्राह करिथई ग्रदय चऽः फुऽलक
बाकई रोज़ी नऽः जान नाकार ।।१५।।

दीनो शिव वथ सुलब छय् इः
मशरक दुर्लब, गछ़ि इः तयार ।।१६।।

१९६५

## ग्रात्म कथा

श्यः वरिह ज्यादऽः, कमभक्ती मऽञ्ज़
क्याः वनय क्युथ ह्यू वुछुम सम्सार ।।१।।

ग्रुर्यु बऽऽच् पनऽःनी मोल मऽऽज्य तामत
वनान ग्रऽऽसिम, छुक बेकार ।।२।।

नालायक छुक, नतः क्याः गछ़िही
च्यई योत कोरथा यति कारुबार ।।३।।

बद नय आसऽःहऽऽक क्याज़ि भगवान च्यऽई
बदनाम करिही ब्ययि बज़गार ।।४।।

ओंह कांह पुऽक न, थप ज़न करिहेक
हऽऽकिम ज़ोनुक म्यः दुशमन दार ।।५।।

बऽड्य् बऽड्य् लीडर नेता सऽऽन छी
तिमौ ति ज़ौंनहस, ब बेकार ।।६।।

कागज़ हऽऽवमक, पऽऽव्य् पऽऽव्य् बोवमक
वुछतौ वारऽः क्याः छुम म्येः भार ।।७।।

च़ूर ना छुस नऽः ती न आसनुक
वक्तऽक्य् हऽऽकिमन लुऽद म्येः भार ।।८।।

हज़रति मुहमद, मददस आमय
मोए शरीफ द्राव, म्येः मददमगार ।।९।।

चूरन पानै, मुन्ह गव कालय
बे कसुर क्याज़ि, रदुक बेचार ।।१०।।

कुर्सि प्यठऽः वऽऽलिक, कनि कनि कऽरिख
पऽज्य् पऽऽठय् आऽऽस्य, तिम् स्यठाह बदकार ।।११।।

ज़ेविः प्यठ अक कथ, करिण्य् आऽऽस्य् ब्याख कथ
पेशः तिमन ओस, बद तर चमार ।।१२।।

आयन्गर रिपोर्ट, कान्छा परितौ
तत मऽन्ज़ नोन छुवऽः तिहुम्द कारुबार ।।१३।।

दय मे रुटऽःमय तऽस्य निश वुऽटऽः मय
तऽम्य सऽन्ज़ लीला, अपरमपार ।।१४।।

हुश्यार पोरऽः भृगुः संहिता
तमि मऽन्ज़ऽः नुऽन द्राव स्योन सम्सार ।।१५।।

प्रान्यन ज़न्मन, हऽन्दय् मेः पाप आऽऽस्य्
हुरिम तिम मेः, क्या ओस वार । १६।।

वनुन छु ननुन, सोरुई केन्ह तऽम्य
करिथ छु थौमुत, इः कारुबार ।।१७।।

यऽम्य वुऽन म्येः कोर, सुई गव नादान
नऽऽल्य तऽस्य गछान, सारि कुई भार ।।१८।।

पऽज्य् अपऽज्य् कर्मऽः फल गण्ड तस चऽऽरिक
ज्युन मरुन तस छु, करान लारऽः लार ।।१९।।

"दीनो" छ्वपऽः कर, नतऽः लूक वनःनय
ज्यादऽः करान छू, कथऽः नादार ।।२०।।

छ्वपऽः छय रुपऽः सऽन्ज, करख त सुऽनः सऽन्ज
ती ज़ान पऽज़ कथ, अदऽः गछ पार ।।२१।।

## प्रभु दया

न्यन्दरे मऽण्ज़ वुऽन्य् मेह मतऽः त्रावतम
पनऽः ने दर्शनऽः वुज़ऽःनावतम
पनऽः ने दर्शनऽः अमृतऽः वर्शनऽः
पनऽः ने दर्शनऽः मुऽकऽःलावतम ।।१।।

चाने दर्शनऽः कम कम मुऽकऽःल्येय
अनज़ऽऽन्य मऽन्ज़ आऽऽस्य् ह्यनऽः आमऽत्य्
बति छुस चोनुई तिथुई अक दासा
तिमनऽई मऽन्ज़ म्यति गऽण्ज़रावतम ।।२।।

दयायि प्यठ यलि इक चऽः कऽऽन्सि
तस छु नऽः केन्ह ति कम रोज़ान
प्रछऽः गारि रुउस छू मूक्षस वातान
सुऽई गत म्यति चऽः दावऽनावतम ।।३।।

नाल छुम वुऽलऽःमुत यम्य् सम्सारन
कालऽः शाहमारन बुछुनस बऽऽ
मायायि शेह रज़ऽः गण्ड छ्यम चारान
तिमऽई म्येः जल जल, मऽचऽःरावतम ।।४।।

यन्द्रे यि चूर छिम, ठग म्येः पेमऽत्य्
करान इम कारुबार राह म्येः लदान
बः छुस पानऽः अ्रक, क्याजि थप कऽरहम
सुऽई थप बुऽज़ मऽन्ज़ऽ, कडऽः नावतम ।।५।।

मोनुम माया छि, बऽड चऽऽन्य शक्ती
पनऽः नुई पान छुक, तमि सऽऽत्य् खटान
सुई म्येः लागतन, ब्ययि रूप हावनस
तमी सऽऽत्य् गाश, म्येः प्रज़ऽःलावतम ।।६।।

पुउत कुन वुछऽः हऽऽ पनुन पान ज़ानऽःहऽऽ
कति बः आयोस त कति बऽः छुस
कर्ता त ज्ञाता आत्मा वुछऽः हऽऽ
अऽछ्य् प्यठऽः मोह ज़ाल तुलऽः नावतम ।।७।।

सत्गुऽरऽः खुऽर बऽः वारऽः पऽऽठ्य् छलऽःहऽऽ
यम्य् म्येः वथ हऽऽव चानि दारऽच्य्
'दीन'' छुस प्योमुत नऽज़दीक वऽऽतिथ
वऽल्य् वऽल्य् पतिम बुऽठ तुलऽः नावतम्

१९६६

# ज़ान

कऽम्य अनुनक युत चऽः छावनि पोशि वऽऽर
कऽम्य करुई साल दोध चऽः माजे च्येह
क्याजि आक आनन्द त्रऽऽवित युत चऽः
सुऽख दुऽख त छुउत क्रहुन करने ज़ान ।।१।।

कऽम्य वुऽनुई आमुत कुनि जायि प्यठऽः छुस
कऽम्य बुऽनुई दोधऽः निशि ओसुस वुऽपर
आनन्द छुस बः त्रावऽः क्या त थवऽः क्याः
सुऽख दुऽख छोत क्रहुन बऽई छुस त ज़ान ।।२।।

भास छु द्वयतुक अद्वयत छुस बऽ
सोरुई केन्ह छुस तऽः छुस न बऽ केन्ह
पोशि वऽऽर पोश भागवान ति बऽई छुस
वुछवुन त वुछना ति सोरुई ज़ान ।।३।।

म्यई गयि मर्ज़ीं म्यई कोर सोचा
कारुबारऽ मऽन्ज़ऽः बऽई वुछि लीला
सोरुई केन्ह छुस अमि निशि थोद छुस
स्वात्रन्त्र योत "दीनऽः" छुखै त्रुक त ज़ान ।।४।।

# अर्पन

सतगुरु जन्मदिवस १९६६ पर

तन मन धनऽः सान कोर अज़ म्येः अर्पन
सत गुऽरऽः दीवन्यन शुऽभऽः चरणन ।।१।।

पनुन म्येः छुम क्या अऽम्यसुन्दुई छु सोरुई
अऽम्यसऽन्ज़िई कृपायि छुम, ह्यस तय होश
दया इति अऽम्यसऽन्जइ कोर अज़ म्येः अर्पन
सत्गुऽरऽः दीवन्यन शुऽभऽः चरणन ।।२।।

बोड दोह छु अ्रज़ म्योन, जन्म द्यन गुऽरऽ: सुन्द
नचऽ:ना त ग्यवऽ: ना गींत अऽम्य् सुन्द
यति केन्ह म्ये: कुनि छुम कोर अ्रज़ म्ये: अर्पंन
सत्गुऽरऽ: दीवन्यन शुऽभऽ चरणन ।।३।।

सोरुई दितुनम शक दूर कोरनम
वारऽ: पऽऽठय होवनम पनुन रूप म्ये:
दितुमुत तऽम्यसुन्दुई कोर अ्रज म्ये: अर्पंन
सत्गुऽरऽ: दीवन्यन शुऽभऽ: चरणन ।।४।।

नारानुन दास कुस युथ ह्यू आसि
नाव कुस नारानुन हावि नोन
पान नारानस कोर अ्रज़ म्ये: अर्पन
सत्गुऽरऽ: दीवन्यन शुऽभ:ऽ चरणन ।।५।।

स्वातन्त्र गुऽर सोन परतन्त्र छुनऽ: केन्ह
स्वतन्त्र वाद छू मत सोनुई
मगर म्योन स्वातन्त्र कोर अ्रज़ म्ये: अर्पन
सत्गुऽरऽ: दीवन्यन शुऽभऽ: चरणन ।।६।।

दास छुस ब गुऽरऽ: सुन्द दीनस छु नाथ सुई
नावि म्यानि नम रटुन मल गऽऽलिथई
हम ति: नाव ति: कोर अ्रज़ म्ये: अर्पन
सत्गुऽरऽ: दीवन्यन शुऽभऽ: चरणन ।।७।।

अ्रज़लऽ: प्यठऽ: नावि: हुन्द नम तऽम्य् म्ये: रुटऽ:मुत
नारानऽनि नावि: तऽम्य् ब तोरमुत
"दीनुन" नाव तान्य् अ्रज़ कोर म्ये: अर्पन
सत्गुऽरऽ: दीवन्यन शुऽभऽ: चरणन ।।८।।

# कुदरत

**माधुरी बम्बई में एक सुन्दरी की तसवीर देकर कुछ लिखने के लिए कहा गया था. यह उसी को देखकर रेल गाड़ी में लिखा गया.**

दिल को सम्भाल लेना जोबन निखर रहा है
हम से गिला न करना गुन्च: यह खिल रहा है ।।१।।

अन्गडाई ले के जोबन नज़रें बुला रहा है
जिस पर नज़र यह करले गिर गिर के गिर रहा है ।।२।।

जब से है मैं ने देखा यह हुसन हंस रहा है
इस की तो मैं न जानूं मेरा तो लुट रहा है ।।३।।

क्या बोलूं किस तरह यह दिल को हिला रहा है
हरकत जो वह है करता उसको बडा रहा है ।।४।।

में ने जो दिलसे पूछा क्यों तू मचल रहा है
इक आह भर के बोला अपने को खो रहा है ।।५।।

हालत न मेरी पूछो क्या मुझ को हो रहा है
कहने को क्या मैं बोलूं सब कुछ तो जा रहा है ।।६।।

क्या जानों किस तरह मैं उलझन में पड गया हूं
झगडा ही कुछ है ऐसा खुद ही यह बन रहा है ।।७।।

झगडे की कुछ न पूछो निपटाना इसका मुशकिल
छोडूं मैं इसको कैसे अछा जो लग रहा है ।।८।।

तखयुल जो है यह मेरा तेरा ही है यह क्रशम:
इक इक अदा को तेरी दिल में बसा रहा है ।।९।।

सौन्दर्य कहता है -
यह हुसुन् जो है मेरा इसको न रोन्ध लेना
कुदरत को इस में देखो कहता यह जा रहा है ॥१०॥

ऐ "दीन" क्यों है गाफिल जो कुछ है तू ने देखा
अल्लाह की है यह कुदरत वह हीं दिखा रहा है।११।

## गुरुदया

भगवान करितन गुऽरऽ: सऽई प्यठ दया
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥१।

नालायक छुस ब: नाबकार छुस ब:
कान्हति रुत गुऽन म्ये: छुम न नुमा
तोति म्ये: गुऽरऽ: नई करऽनम बऽड क्षमा
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥२॥

पोरमुत छुम न केन्ह, कोरमुत छुम न केन्ह
आसन त धारना छिम न तगान
गुऽर छुम दूख म्ये: तऽस्य करऽ: बऽ: नमा:
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥३॥

ह्यनऽ: छुस आमुत मऽन्ज़ खुर्य् नावे
आवलनस मऽन्ज़ छुस मऽन्ज़ सऽदरस
गुऽरऽ: नई मटि ह्यु त अन्द म्यति वातिहा
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥४॥

मऽन्ग्य् मऽन्ग्य् ह्यमऽ: सय लऽडय् लऽडय् निमऽसय
ख्यावि तऽस्य् सऽन्ज़ि अक गरदि फुऽला
डयकऽ:सई सुई मथऽ: अदऽ: ब: फुऽलऽ:हऽऽ
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥५॥

वन:हऽऽय ब किथऽ: पऽऽठय् थुऽद तऽम्य ब तुलऽ:नस
किथऽ: पऽऽठय् बाग म्योन तऽम्य् कुऽर हरा
सग तऽम्य् दितुनम स्वात्मऽ: अमृत:
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥६॥

बागस म्यऽऽनिस लोलऽ: पोश बुविनम
उपदीश: रऽम्बि सऽऽत्य् चूर तथ दितुनम
अदऽ: फोल जान पऽऽठय अहमुक म्ये: कुला
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छ्यम बकार ॥७॥

कारुबारऽ: मऽन्ज़ऽ: तऽम्य शिवनाथ होवुम
दुऽखऽ: मऽन्ज़ऽ: सुऽख्ऽ: कुई दर्शुन दोवुम
च्यत आनन्द मय मन तऽम्य म्ये: चोवुम
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छयम बकार ॥८॥

कऽहऽ: वचि प्यठ यलि पान म्ये: खोरुम
खोट ब ओसुस तऽति पानई रोवुम
सरतलि तऽम्य् अदऽ: सोन म्ये: बनोवुम
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छयम बकार ॥९॥

लूक अऽऽस्य वनान कीमियागर छु
कीमिया गोमुत सु उन्का छु
ज़ोनुम अज़ म्येऽ: सु म्योन गुऽर छु
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज दया सुऽई छ्यम बकार ॥१०॥

सोरुई ज़गत युस व्यराठ स्वरुप छु
अथ मऽन्ज़ प्यठऽ: कनि वुछ म्य लक्ष्मन जू
सरताज सऽऽरसई म्योनुई गुऽर छु
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽई छयम बकार ॥११।

भगवान त गुऽरऽ:दीव इकऽ:वट: वुछमय
प्रणाम कस करऽ: सोच बोड प्योम
"दीनन" पनऽ: निस गुऽरऽ:सई कोर नमाह
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सुऽइ छ्यम बकार ॥१२।

# आनन्द

दाद्यन दवा बन शऽऽदी मनस बन
बञ्य् बञ्य् चऽ: हर वक्तऽ: पानऽ: आनन्द बन ।१।

ब्ययि सुन्द दवा बन वुछन वोल दोद बन
न्यत चऽ: ज़गतस मऽन्ज़ पानऽ आनन्द बन ।।२।।

आनन्द मऽन्ज़ऽ: छुक पानऽ: द्रामुत चऽ:
लय गछ् चऽ तऽथ्य मऽन्ज़ पानऽ: आनन्द बन ।३।

आनन्दऽ: निश छुनऽ: ब्युन केन्ह आसान
आनन्द छु सोरुई चऽ:, पानऽ: आनन्द बन ।।४।।

सुऽख त दुऽख द्वनऽ: वय बुथ्य् ज़गतऽक्य् बोज़
द्वयि:तस चऽ: कुन कर पानऽ: आनन्द बन ।।५।।

मनऽ: कुई व्यकल्पा छ्, दुऽख त सुऽख सोरुई
दुऽखऽ: मऽन्ज़ऽ: चऽ: सुऽख वुछ पानऽ: आनन्द बन ६

चलऽ: वुन सुऽख ति छ् दुऽख पूरऽ: आसान
युस न चलि सु सुऽख बन पानऽ: आनन्द बन ।।७।।

युस सुऽख बनि दुऽख तत क्या छु करऽनुई
न चलऽ:वुन चऽ: सुऽख बन पानऽ: आनन्द बन ।८।।

कऽम्य् छुई वुनमुन कम केन्ह च्ये: गोमुत
पूर्ण चऽ: पानऽ: छुक पानऽ: आनन्द बन ।।९।।

माया ति शिवऽ सऽन्ज़ शक्ती छि आसान
अऽथ्य् मऽन्ज़ चऽ: शिव वुछ पानऽ: आनन्द बन १०

रोवमुत लबुन च : छुई न केन्ह वारऽ: बोज़
छुक चऽ: पानऽ: आनन्द पानऽ: आनन्द बन ।।११।।

क्या: ताम छुक चऽ: भासान क्या: ताम
छुक चऽ: ई ती बन पानऽ: आनन्द बन ।।१२।।

छुई बनुन क्या च्ये: छुक बनिथ अऽऽसथई
भास पोज़ पानऽ: बन पानऽ: आनन्द बन ।।१३।।

क्याज़ि छुक लोगमुत इ त हू करऽने
सूहं पानऽ: बन; पानऽ आनन्द बन ।।१४।।

हर ज़ायि "दीनऽ." रोज़ आनन्द बनिय चऽ:
ब्ययि चऽ: करख क्या: पानऽ: आनन्द बन ।।१५।।

# कृष्ण शंकर

हरी हर सुई गौ सुई गौ मनोहर
कुनिसऽई तमिसऽई जय जय जय कर ।।१।।

शंकर छु कृष्ण कृष्ण शंकर
भक्तयन भय हर दुष्टन भयंकर
अऽक्य्सऽन्दिस नावस द्वयुम छु अन्दर
कुनिसऽई तमिसऽई जय जय जय कर ।।२।।

शंकर कृष्ण कृष्ण शंकर
रहस्य मय मन्थर द्वनऽ:वय सुऽन्दर
चन्द्र वम्शी चन्द्रऽ: मुकट धर
कुनिसऽई तमिसऽई जय जय जय कर ।।३।।

वन्तऽ: चऽ: कृष्ण वन्तऽ: चऽ; शंकर
वारऽ: पऽऽठय वुछतख तिमऽई छिस अच्छर
आनन्द फल छ् कुन छु इ: मन्थर
कुनिसऽई तमिसऽई जय जय जय कर ।।४।।

जय जय जय जय कृष्ण शंकर
सुई छु रछवुन सुई छु दुखहर
हरी हर सुई गौ सुई गौ मनोहर
कुनिसऽई तमिसऽई जय जय जय कर ॥५॥

रूप छु धारान ब्यन ब्यन सुऽन्दर
सहऽ: चम सुऽई गयि सुऽई पीताम्बर
मुर्ली डुमरु वायान गदाधर
कुनिसई तमि सऽई जय जय जय कर ॥६॥

यमि रूपऽ: तमि रूपऽ: सुऽई छु आसान
प्रथ रूपऽ: सुऽई बेरूप छू आसान
तऽम्य् सुन्दुई गीत ग्यौ तऽम्य्सुन्दुई ध्यान धर
कुनिसई तमिसऽई जय जय जय कर ॥७॥

यति तति प्रथ कान्ह तऽस्य् छू पूज़ान
प्रथ जायि मऽन्ज़ सुई पानय रोज़ान
गिरजि मसज़िद गुरद्वारऽ: मन्दर
कुनिसुई तमिसऽई जय जय जय कर ॥८॥

ह्य न्द छु मुसलमान सिख ईसऽऽई
रूप तऽम्य्सुन्दुई योत, छु इ: सऽऽरिई
तस वरऽऽय् छुनऽ: केन्ह अन्दर बाहर
कुनिसई तमिसऽई जय जय जय कर ॥९॥

बोड छु लोकुट छु छोट या ज्यूठ छू
गरीब छु अमीर छु शाह मज़दूर छू
युस छू सू छू तऽम्य्सुन्दुई रूप पर
कुनिसई तऽमिसई जय जय जय कर ॥१०॥

गाश अनिगटऽ: सिरियि ब्ययि चन्दर
तरुन तुऽत शिह्ल ताप पहाड या कन्दर
प्रथ का द्वन्द ति तऽम्य्सुन्दुई रूप पर
कुनिसई तऽमिसई जय जय जय कर ॥११॥

कर बऽऽगरानऽ: आव ताप या रूद ज़ान्ह
कर सऽऽलावन बुछित कोर घर्क कान्ह
सऽऽरिसई मऽन्ज अक तऽम्यसुन्दुई रूप सुऽर
कनिसई तऽम्यसई जय जय जय कर ॥१२॥

पोश द्राव बागस सारिवई बुछ ना
बहार आव मुलकस सारिवई छोव ना
कोदरत सऽऽरई तऽम्यसुन्दुई कार पर
कुनिसई तऽम्यसई जय जय जय कर ॥१३॥

आव वन्दऽ: तऽऽरि दऽद्य् लूक सऽऽरी
शीनन सफ़ेद त्रऽऽव चादर चुऽपऽऽरी
कार इम सऽऽरी तऽम्यसऽन्दिई रूप पर
कुनिसऽई तऽमिसई जय जय जय कर ॥१४॥

क्यांज़ि छूक ब्येकऽल वन्तऽ: इनसानऽ: चऽ:
अक अकिस खून छूक च्यवान हैवानऽ, चऽ:
सऽऽरी भऽऽई अऽस्य तऽम्यसुन्दुई रूप सुऽर
कुनिसऽई तऽमिसई जय जय जय कर ॥१५॥

सुई गव कृष्ण सुई गव शंकर
मसीहा अलाह ज़ोराष्ट गुरवर
प्रथ रूपऽ: तऽम्यसऽन्ज़ई "दीनो" ज़ानकर
कुनिसऽई तऽमिसई जय जय जय कर ॥१६॥

## मऽऽज्य् भवऽऽनी

चऽई म्ये: रछतम मऽऽज्य् भवऽऽनी
त मऽऽज्य् भवऽऽनीं म्ये: रछतम चऽई ॥१॥

पादन तल छूस च्यान्यन बऽ आमुत
नादन कन वारऽ: थौतम चऽई
वादऽ: मुऽक्ती हुन्द पूरऽ: जल करतम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥२॥

रछतम रछतम दोहऽ: दोहऽ: रछतम
वासना त यन्दर्ययि शुम्रावतम
सुख्खदा पनुन रूप जल जल हावतम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥३॥

परा रूपऽ: आत्मा छ्यक चऽई आसऽ: वऽन्य्
पश्यन्ती रूपऽ: छ्यक चऽई ज़ानान
मध्यमा त वैखरी रूपऽ: चऽई भास्तम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥४॥

कुस ह्यकि ज़ऽऽनित सुन्दर रूप चोनुई
माया महामायायि हुन्द रग
अव्यद्यायि मऽन्ज़ऽ: व्यद्या म्ये: भास्तम
मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥५॥

पराशक्ती आदि शक्ती छयक चऽई
शक्तिवानस सऽऽत्य म्यनऽ: रुऽस चऽई
यछा ज्ञान त क्रया रूप नऽन्य् आस्तम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥६॥

निग्रह रूपऽ: छ्यक ज़ीव चऽई भ्रमरान
अनुग्रह रूपऽ: चऽई फुऽलऽ:रावान
शक्तिपातऽ: रूपऽ: म्यति, फुऽलरावतम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥७॥

स्पन्दऽ: रूप छ्यक चऽ: प्रथ विज़ि आसान
प्रथ्मास्पन्द छु च्यऽई मऽन्ज़ बन्द
नौ नौ स्पन्द म्ये: हरबिज़ि भास्तम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥८॥

प्राणापानस धकऽ: चऽ: दिवान छ्यख
सऽऽरी प्राण छ्यक रछऽवऽन्य् चऽई
मध्य धामस मऽन्ज़ नऽन्य म्ये: भास्तम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्ये: रछतम चऽई ॥८॥

करऽ: क्या: करऽ: क्या: वथ ननिरावतम
गुऽरऽ: वाक्यस म्ये: करतम स्यज़र
पनऽ: नी दयायि सऽऽत्य् पनुन पान हावतम
त मऽऽज्य् भवऽऽनी म्य: रछतम चऽई ॥१०॥

सोरुई इ: ज़गत छु चोनुई व्यकास
प्रथ कान्ह भाव छु चोनुई स्यरूप
हनि हनि मऽन्ज़ म्ये: नऽन्य् चऽई भास्तम
तम मऽऽज्य् भवऽऽती म्ये: रछतम चऽई ॥११॥

"दीनऽ" छु आमुत बरस तल चऽऽनिस
तोर मुचरित हावुस पनुन नूर
इहऽ: लूक त परिलूक रथि म्ये: खारतम
त मऽऽज्य् भवऽऽनो म्ये: रछतम चऽई ॥१२॥

## होल

दयि म्यानि दितऽ: म्ये: पनऽ:नुई लोल चऽ:
होल म्ये: गौमुत छुम वाराह ॥१॥

क्याजि बऽ मायायि सऽत्य् बन्द कोरथस
भोर म्ये: लोदथम प्यठ खाराह ॥२॥

वथ म्ये: हावतम जल जल पनऽ:नीं
गुऽरऽ: दीवऽ: हावतम सह इशाराह ॥३॥

चुवतिस प्यठ बऽ: बन्द छुस गौमुत
वासना त यन्दर्ययि करान माराह ॥४॥

आश छ्यम गुऽरऽ: सऽन्ज़, गाश म्ये: अनतम
हावतम असलऽच हिश शाहराह ॥५॥

लोलऽ: लरि पनऽ:ने बर मऽच्रावतम
रऽचरुक करतम सुई काराह ॥६॥

"दीन" छुस ब्ययि ब्ययि वनान तुऽहि भगवन
दूरिरन च्यऽऽन्य् कोरनस बऽ: माराह ॥७॥

१९६७

# हे स्वात्मा देव

क्याजि छुवु: ज़ोनमुत पनुन पान सतँल
सोन छिवऽ: सुन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥१॥

चित्ताकाशस वुडना करितौ
भ्रम त्रऽऽविथ श्रम तोह्य् करितौ
पानस अन्दर कुन नज़राह करितौ
सुऽन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥२॥

संकल्प व्यकल्प त्रऽऽविथ छ़नितौ
यछुन त काछुन मशरऽऽवतौ
लूकऽ: दलवाँजुल थोद तुलित थविती
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥३॥

अपज़ुई जण्जाल नऽऽल्य् मतऽ: छऽनितौ
सऽदरस मऽन्ज़ ख्यल तोह्य् रुज़ियौ
मोह मायायि मऽज़ऽ: पान तोह्य् कडितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥४॥

वासऽनायि डास तोह्य् जल जल करितौ
थन्द्रयन अन्दर कुन बुथ फिरितौ
दय योत कऽऽण्छतौ पान योत सोरितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥५॥

प्रानस अपानस ह्यस तोह्य् थवितौ
सऽन्ज़ मऽन्ज़ द्वनऽ:कन्य् गण्ड छ़नितौ
ततिथई प्रकाश ह्यसऽ: किन बुछितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥६॥

दयि सऽन्ज़ि क्रपायि उमेद करितौ
पूर्णऽ: अहंतायि थप छ़नितौ
लोचरुक अहंकार त्रऽऽवित छ़नितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ ज़ोन थविती ॥७॥

क्या: छुवऽ: गौमुत वदनस लायक
तोहि बोंन ति कऽऽत्या: लूक आसान
दितिमऽतिस दयिसऽन्दिस शुकरानऽ: करितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥८॥

ज़ोन दयिसुन्द तोहि दोह त रात थविती
पान तऽस्य पूरऽ: पऽऽठय् पुशरऽऽवतौ
पान पुशरऽऽवित जान सुई ज़ऽऽनतौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥९॥

शिवऽ: नावुक ज़प दोह त रात करितौ
कार युस माटि छुवऽ: पूरऽ: करितौ
कारस मऽन्ज़ऽई तोह्य् कोदरत बुछितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥१०॥

करुन छुनऽ: करनवऽऽलिस निश भ्युन केन्ह
करान इ: तिति सुई पानऽ: आसान
प्रथ कुनि मऽन्ज़ऽ: तोह्य् सुई वारऽ: बुछितौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥११॥

ज़ऽऽनतौ वारऽ: पऽऽठय पनुन पान ज़ऽऽनतौ
दोह लरि शोर् बऽऽच् वोपर ज़ऽऽनतौ
बिश्वरूपस सऽऽत्य पान मिलऽ:नऽऽवतौ
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥१२॥

अहं रूपुक तोह्य् परामर्श करितौ
गिन्दुना छु सम्सार गिन्दन वऽऽलसुन्द
मलऽ. रुऽस त कांक्षायि रुऽस यति रूज़तौ
सोन छिवऽ: सोन छिबऽ: ज़ोन थविती ॥१३॥

शक क्याजि छुक "दोनऽ:" पानस थवान चऽ:
बेशक पऽऽठय मान पनुन पान शिव
शिवई छु सोरुई ती ज़ोन थविती
सोन छिवऽ: सोन छिवऽ: ज़ोन थविती ॥१४॥

# प्रणाम

करान छुस प्रणाम बऽः द्वहोय गुऽरऽः दींवस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।१।।

छु साक्षात शिव सुन्द रूप सोन गुऽरऽ दीव
स्वात्मऽः स्वरूपुक सार सोन गुऽरऽः दीव
मुश्किल छु आसान सु करान ज़गतस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।२।।

ड्यकस प्यठ चन्दरमऽः शूभान क्याः तस
मुऽखऽई मऽन्जऽः मुऽदरेर नेरान क्याः तस
छु असि क्युत आनन्द पेडान क्या तस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।३।।

अकी लटि दर्शुन म्येः तऽमिसुन्द यलि कोर
बन्योस पूरऽः पऽऽठिन पूर्नानन्दऽः भोर
पाप शाप सऽऽरी ततीं आम हरऽः नस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।४।।

विश्वतीर्ण रूप तऽमिसुन्द सुन्दर
सुई गव विश्वमय आसुन निरन्तर
सुई रूप ज़ानुन दितुनम तऽम्य म्येः ह्यस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।५।।

वनय क्या कऽऽचाह दया सु करान छू
उपदीशऽः अमृत क्युथ सु चावान छू
शिव रूप हावान किथऽः कऽन्य सु भक्तस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।६।।

"दीन" गव नादार ओसुस बः पऽज़ पऽऽठ्य्
पऽज़ि लक्षमियि सऽऽत्य् भऽरनस बऽ पऽज्य् पऽऽठ्य्
करऽः ना बः जय जय ईश्वर स्वरूपस
मंगान वरदान बः इहोय गुऽरऽः दीवस ।।७।।

# देहस्थ देवता चक्र

(अन्द्रयुय पम्पोश)

अन्दर्युम पम्पोश जल इयि फुऽलऽःनस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग
होशऽः भगवानस तस ईशानस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१।।

मन्दरा गुऽरऽनम वऽड्य् कऽऽरीगरन
नव द्वार शोभान चोन तरफन
तमी रूपऽः तऽत्य् ब्यूठ् मऽन्ज़ यथ शरींरस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।२।।

पऽऽञ्छ चीज़ सोम्बरिन सेरि इमऽः थुर्नस
पऽऽञ्छ तनमात्रायि मुऽटरऽऽवित
पानऽसई बनोवुन ज़गत पानऽः रोज़ऽनस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।३।।

पऽऽञ्छ ज़ानऽनऽक्य् ब्ययि पऽऽञ्छ केन्ह करनऽक्य्
अक कांछनुक ब्ययि अक सोचनुक
बाह इम त्रुवऽऽहिम भई छुस वनऽनस
होशऽ भगवानस पम्पोश लाग ।।४।।

प्रकृती रूपऽः त्र्यः, गुऽण रूद तोलऽनस
पुऽरषा पानऽसई तोलऽनावान
इयेः द्य ल माया रूपऽः पान गण्डनस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।५।।

इथँ पऽऽठ्य् पानऽः शिवनाथ भैरव जी
पानस मऽन्ज़ रूद तीं बनिथई
हृदयि दामऽ किस मऽन्ज़ पम्पोशस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।६।।

अथ शरीरस मऽन्ज़ किथऽः पऽऽठय् रोज़ान
ख्यनऽः ख्यनऽः अभिनव दर्शुन करान
देहस्थ दीवता क्युथ मऽन्ज़ चक्रस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।७।।

प्राणऽः गणपतसइ गुऽडन्यथ शास्त्र
सुऽर असुऽर ह्यथ यकदम छि नमान
लुऽगमुत सऽऽरी वर असि दिनस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।८।।

वटकऽः भैरव अपानऽः दीवऽन्य् पाद
श्रेष्ट वीर यगी त स्यद्ध पूज़ान
कार छुस श्यशश् दुऽख् दूर करनस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।९।।

हृत कमलै सदा पनऽन्यो व्यषियौ
यन्दरेयि दीवियि यस पूज़ान
नम तऽस्य् चितरूप आनन्दः भैरवस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१०।।

औधान रूप न्यर्मल श्री सत्गुऽर
बुऽद्धि बलऽ सऽऽत्य् ज़गथई शिवऽवथ
हावान शरनागतस पूरऽः भक्तस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।११।।

ज़गतऽच्य् सृष्टी थ्यथ त सम्हार
आनन्दऽः भैरवई करान दोह रात
पूरऽः अहं व्यमर्शश पूरऽ पान वन्दस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१२।।

वथऽर अऽऽठ अति छि अथ पम्पोशश
छत्रऽ कनि पम्पोश तऽथ्य ह्यू ब्याक
दीवी अऽऽठ अऽऽठि तरफऽः छ्यस पूज़ऽनस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१३।।

निश्चययि पोशौ पूज़ा छि करान
बुऽद्धि रूप ब्रह्मऽऽनी रूज़िस
पूरय् किन ब्रोन्ठऽः कनि प्यठ पम पत्रस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१४।।

अहंकारऽः रूपऽः शाम्बवी माता जी
अग्नऽः दिशायि अभिमानऽः पोशौ
पूज़ान भैरवस जयकार करतस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१५।।

मनऽः रूप कुऽमऽऽरी दीवी दछिन किन
चितनाथ पूज़ान विकल्पऽः पोशौ
दोह त रात पूज़ा तऽस्य ब करऽः हस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१६।।

नैंरतऽः कूनऽः वैष्णवी दीवी जीं
श्रवनऽः यन्द्रययि रूप शब्दऽः पोशौ
पूज़ान भैरव जय जय कार तस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१७।।

पश्चमऽः कि: पम्पोशऽः बऽरगऽः प्यठऽः
वारऽऽही स्पर्शऽः पोश लागान
हृदयि चूर चम रूप जय कार कर तस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१८।।

अऽछय् रूप यन्दरऽऽनी वायु कूनऽः किन
उऽत्तम त सुऽन्दर रूपऽः पोश वुछ
लागवऽन्य् रोज़ान भैरव नाथस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।१९।।

कर प्रणाम ज्वयि रूप चामुऽण्डायि चऽः
युऽसऽः कवीरऽः कूनऽः किन श्ये: रसऽः पोश
लऽऽग्य् लऽऽग्य् अरचान श्री चित नाथस
होशऽः भगवानस पम्पोश लाग ।।२०।।

महा लक्ष्मी यूगीश्वरी दीवी
मुश्कऽ: पोश ईशानऽ: कूनऽ: किन छ्ये:
नस बनिथ लागान पानऽ: भगवानम
होशऽ: भगवानस पम्प लाग ।।२१।।

श्यनऽ:वय दर्शन पूज़ा छिस करान
शयित्रऽ:वय त्वत छिस वलान पान
स्यद्धिदा जीवात्मा क्षेत्रऽ: पालस
होशऽ: भगवानस पम्पोश लाग ।।२२।।

पूजा कर पूरऽ: दीवता चक्रस
शरीरऽ: सऽई मऽन्ज़, सर्वदा छू उदय
स्वानुभवऽ: लुऽभमुत त मऽन्ज़ प्रथ चीज़स
होशऽ भगवानस पम्पोश लाग ।।२३।।

इहऽऽय शुऽद्धऽ: व्यद्या अहं रूपऽ: चेन्तन
पऽऽन्य पानऽ: ईश्वर सदाशिव रूप
पूज़ा करतऽ शक्ती शिव रूपस
होशऽ: भगवानस पम्पोश लाग ।।२४।।

"दीनऽ:" कर पूज़ा पानऽ: पानस तस
ईश्वर स्वरूप रूप प्रथ शाये
रछऽ:वुन छुई च्ये: पनऽ:निस दासस
होशऽ: भगवानस पम्पोश लाग ।।२५।।

श्लोक संख्या ८ से २३ तक श्री अभिनवगुप्त जी महाराज के देहस्थ देवताचक्र के आधार पर बने है श्लोक सख्या १३ श्री सत्गुरु महाराज श्रीं ईश्वर स्वरुप लक्ष्मण जू के मुख कमल से व्याख्या सुन्ते सुन्ते नोट किया गया और श्लोक १ से ७ तथा २४ और २५ भगवान की कृपा से तत्वाध्वा के आधार पर इस दास की ज़बान से प्राककथन और उपसंहार के रूप में निकले
"दीन"

# अहं परामर्श

परिपूर्ण छुस ब: पानऽ: शुद्ध आत्मा
क्याज़ि वनऽ: छु म्ये: केन्ह कम गोमुत
गाशि मऽन्ज़: गाश द्राव गाशी योत छुस
तऽथ्य मऽन्ज़ पूरऽ: पऽऽठय् लय गोमुत ।।१।।

पऽऽन्च् म्यानि शक्तियि बरवुकऽ आमऽच्ऽ:
तिहुन्दुई व्यकास ब: फुऽल्योमुत
सोरुई सम्सार तिहुन्दई रग्ग रूप
रग्गऽ: रुउस त रूपऽ: रुउस शूभ रोवमुत ।।२।।

यन्त्र ज़ानतन ई: ज़गत सोरुई
शक्तियौ सऽऽतिन नच्ऽ:नोवमुत
बऽई छुस त बऽई छूस सोरुई केन्ह छुस
शिठनऽ: रुऽस पानय बऽ शिठ्योमुत ।।३।।

कऽम्य् वोन कम छु केन्ह आत्मस आसान
मायायि सऽऽत्य् छुस चूरि रूदमुत
ई छुस त ती छुस गाशी योत छुस
आनन्दऽ: निश छुसनऽ: म्युन गोमुत ।।४।।

सुऽख ति ब पानय दुऽख ति ब पानय
ई मन मानि ती छुस बन्योमुत
दुऽखऽ: मऽन्ज़ऽ: सुऽख छुस त सुऽखऽ: मऽन्ज़: दुऽख छुस
अद्वयतस ब: द्वयत प्योमुत ।।५।।

अक त ज़ऽ: ति बोज़तो, भासई योत छु
जऽ: ति छु अकिस सऽऽत्य अक सम्योलमुत
थदि खुऽतऽ: थुद वन्तऽ:, कमऽ: खुतऽ: कम छुस
अऽऽन्तऽ: रुऽस तवय छुम नाव प्योमुत ।।६।।

अन्द या गुऽड कति वुछि कान्ह छुम कति
डुलऽः ज़न फेरऽःवुन बः ब्ययि फयूर्मुंत
डुलऽः ति छु आकार, आकारऽः रुउस छुस
करनऽः या ज़ऽऽन्य मऽन्जः अथि आमुत ॥७॥

ह्यूऽन छु नऽ केन्ह नः छु केन्ह कनऽनुई
गिन्दऽः वुन बऽः गिन्दुना छुस बन्योमुत
न छु कुनि मल म्येः न छु केन्ह रंग रूप
साफ त शफाफ कति वुछनऽः आमुत ।।८।।

रूद वुछ म्येः त्यलि यलि पतऽः कनि लरि छ़्यस्
आकाशऽः मऽन्ज़ः छा बोज़नऽ आमुत
राह ज़न छु अथ विज़ि आकाशस मऽन्ज़
ग्रहनऽः रुउस कर छु सु वुछनऽः आमुत ॥९॥

स्वातन्त्र शक्ती सारिचिई सरदार
तमि कुई सरदार बऽः बन्योमुत
"दीन" छुस त नाथ छुम ईश्वर स्वरुप जी
तऽम्युसऽन्ज़ी नज़रि सऽऽत्य् अथि आमुत ॥१०॥

# जयकारऽच ग्रज़

जन्म दिन १९६८

जयकारऽच्य् ग्रऽज्य् मऽन्ज़ बौज़ऽनावौवऽ
पनऽने मनऽ की अऽस्य रोदाद ॥१॥

श्री ईश्वर स्वरुप स्यऽज़ नज़र करितौ
अथ विज़ि रूज़ितौ यकदम याद ॥२॥

तुहन्दी दास अऽस्य तुऽही शर्ण आमऽत्य्
जय कारुक करौ ज़ोरऽ ज़ोरऽ नाद ॥३॥

अन्दरिम मल सऽऽन्य् ज़ल चलऽःरऽऽवतौ
ज़ानऽः नऽऽवतौ, स्वाप्मुक मुऽदुर स्वाद ॥४॥

संकल्प व्लकल्प दूर असि करितौ
यन्दर्यं यन हुन्द शुमऽरऽऽवतौ फसाद ॥५॥

स्यज़ःरऽचि बऽति प्यठ असि पकऽनऽऽवतौ
पज़रुक करऽनऽऽतौ सम्वाद ॥६॥

क्याः करो किथऽ कऽन्य्, कुउत अऽस्य् वुऽन्य् गछ़ौ
अन्दरी लुउगमुत असि वाद वाद ।।७॥

दामानऽः तुहुन्दुइ असि छु रुउटऽमुत
वारऽ बूज्य्तौ अज़ सऽऽन्य् फर्यं याद ॥८॥

वहिकऽः गटऽपछ़ऽः बऽऽश दोह ज़ामुत
अबतऽऽर आमुत सोन गुऽरऽः पाद ॥९॥

अमि खुऽतऽः छुनऽः असि बुउड दोह कान्ह ति
नम्रतायि सऽऽत्य् वनौ अज्य् बेदाद ॥१०॥

साष्टाग डण्डवत प्रणाम अऽस्य् अऽज्य् करौ
लोलऽः सऽऽतिन रटोक पम्पोशऽः पाद ॥११॥

प्रेमय भावऽक्य् पोश पूज़ि लागौ
रऽटय् रऽटय् मणगौ ब्ययि अऽऽशीर्वाद ॥१२॥

कृपायि कुछि पनऽनि बर वऽथ्य त्रऽऽवियौ
खुलऽः दिलऽः करियो दया, ज्यादऽः खुऽतऽः ज्याद

दर्शनुक नवीदा असि ख्यावऽःनऽऽवितौ
"दीनस" दिय्तौ कथन दयायि हुन्द दाद ॥१४॥

## सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो

१९६९

सत्गुऽरऽः सऽई कर ज़ारऽः पारऽः पानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो
भवऽः सरऽः तार दियि सुई पऽऽन्य पानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥१॥

सुई छुई अछऽनई गाश अनानो
असलऽच शेछ सुई छु वनानो
दया दृशटियि, सुई च्ये: रछानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥२॥

ब्रह्मा व्यषण रुद्र सुई पानो
गायत्री सावित्री ति आसानो
दोह त रात पूजुन जानऽः मनऽः पानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥३॥

क्याज़ि छुक मनऽः चऽः कुन ति नचानो
गुऽरऽः द्वारऽः दासऽः आस ठहरानो
तमि सऽऽत्य तऽस्य्सुन्द लौल बडि पानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥४॥

संद्या सुऽई छ्यई युसऽः सु वनानो
पूज़ा समावीश हावानो
सिर्यि: चन्दरमऽःसई पान पुशरानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥५॥

हर वक्तऽः ह्यस आस तऽस्य कुन थवानो
उपदीश याद आस पावानो
पादि कमलन हुन्द, ध्यान आस करानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥६॥

दया हऽन्ज़ भिक्षा सुई च्ये: दिवानो
बानऽः आस वारऽः पऽऽठ दरानो
लोलऽः सान जय जय बरऽः तल: वनानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥७॥

ब्ययि छ्यई नऽः केन्ह च्ये: उमेद पानो
कार कुस कुउरमुत छुई जानो
ख्रावि जोरऽः सई आस पूज़ा करानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥८॥

महारा कनऽः प्यठऽः छुस प्रारानो
ज़ऽऽरी आस्तऽः जल बोज़ानो
दर्शुन दित कृत: कृऽत्य् म्ये: करानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥९॥

दर्शनऽः सऽऽत्य छुस थुउद ब वुऽथानो
पऽऽन्य् पानऽः पनुन पान परजानो
अक रछ़ क्या: ताम कस आसानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥१०॥

तुहन्दी आलऽःवऽः तुऽहि कुन इवानो
दास च्योन लोल छुस काँछानो
छुक चऽः मोल, बोल, आस, म्योन बोज़ानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥११॥

यमि कथि तमि कथि तुही ब वनानो
प्रथ वति तुहि कुन लारानो
आकाशऽः पोश छुसनऽः केन्ह छारायो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥१२॥

रछतम रछतम बुऽछि म्ये: लगानो
कुछि तुहन्जि छा जान्ह कम गछानो
मऽन्य् मऽन्य् मुग्गमृत मऽन्गुता मन्गानो
सत्गुऽरऽः सुन्द रठ दामानो ॥१३॥

पूज़ा ब कर:हऽऽय सारि सामानो
पानुक धूप दीप आलऽ:वानो
दीह प्राण ह्यत पोश च्ये: लागानो
सत्गुऽरऽ: सुन्द रठ दामानो ॥१४॥

यन्द्र्यंयि मन बऽ: सामग्री सानो
बुउज़ गंगऽ: ज़लऽ:, सई मिलऽ: वानो
श्य: च़टित शुऽद्धः व्यद्यायि गोड दिवानो
सत्गुऽरऽ: सुन्द रठ दामानो ॥१५॥

सोरुई ज़गथा च़ऽई आसानो
चोनुई रूप इ: ज़ोतानो
च्ये: वरऽऽय कति केन्ह, कुनि आसानो
सत्गुऽरऽ: सुन्द रठ दामानो ॥१६॥

छुस अनाथ "दीन" बे सरुसामानो
बन म्ये: नाथ, साथ दिम भगवानो
ईश्वर स्वरुप तुऽहि नाव आसानो
सत्गुऽरऽ: सुन्द रठ दामानो ॥१७॥

## आवऽ: आव

ही भगवानऽ वन्तऽ: क्या छुक करान
अज्ञानस मऽन्ज़ म्ये: फाटऽ: नावान ॥१॥

कुनि छुम भासान च़ऽई छुक सोरुई
कुनि पानई म्ये: भासऽनावान ॥२॥

ज़ऽऽन्ा ज़ऽऽन्ा पनऽन्य् ज़ान, न ज़ऽऽनित ह्यकान
फीर फीर ब सुऽई ज़ान मशऽरावान ॥३॥

अज़ छुक वनऽवुन कर पाठ पूज़ा
पगाह सोरुइ केन्ह त्रावऽ:नावान ॥४॥

लऽऽग्य् लऽऽग्य् पनऽ:निस नावस कुन म्ये:
ब्ययि सम्सारस फाटऽ:नावान ॥५॥

कुरुई क्या म्ये: वनतऽ: बालन त बठय्न
लऽगित छिहऽम न वथ हावान ॥६॥

वथ हऽऽव्य् हऽऽव्प् छुक ब्ययि रावऽ:रावान
क्याज़ि छुक न स्युद स्युद पकऽ:नावान ॥७॥

लोलऽ: वथ आस्तम जल नऽन्य् हावान
भक्ती हुन्द तऽथ गाश त्रावान ॥८॥

यूग तय ज़प तफ किथऽ: कऽन्य् कऽरऽ: ब:
छुम ऽजर त ज़ीवुत मारऽ:नावान ॥६॥

गुल्य् गऽन्डित छुइ "दीनऽ:" ज़ारऽ: पारऽ: करऽ:वुन
भक्ति रूपऽ: शक्ती, आस्तस दिवान ॥११॥

तमि की प्रभावऽ: बे रोक टोक पनुनइ
दर्शुन सदा आस करऽ:नावान ॥१२॥

खबर छयम पूरऽ: पऽऽठ्प् तुउह्य् दया म्ये: कर्यो
वऽऽनी पनऽन्य् तुऽह्य् ज़ान्ह अपऽज न कर्यो
चेरऽ सऽऽत्य् छुस मरान वुन्य् जलदी कर्यो
कर कर्यों कर कर्यो तुउहि दया कर कर्यो?

# प्रसाद

य: प्रसादलव ईश्वरस्थितो
        या च भक्तिरिव मामुपेयुषी
तौ परस्परसमन्वितौ कदा
        तादृशे वपुषि रूढिमेष्यत: ।।
                शि: स्तो: ८. १.

प्रसाद का कना सा मेरे ईश्वर से
मेरे पास आया है भक्ती के रूप से
गले मिल के दोनों यह पूरे प्रेम से
ठहरेंगें स्वामी कब अपने स्वरूप से ।।१।।

प्रसाद का वहां है अनन्त ही खज़ाना
मेरे वास्ते था बस इक ही दाना
ठहरा है मुझ में वुहीं बन के भक्ती
शाकिर इसी में हूं है यह मेरी शक्ती ।।२।।

न समझो कि कन्जूस था मेरा मालिक
कसर थी मुझी में न था लायक सालिक
बान्टना था जगत को वह सब खज़ाना
इस तरह मुझ को दिया बहुत दाना ।।३।।

इस भक्ती को तोला तो मैं ने देखा
प्रसाद तो मुझ को मिला है बहुत सा
जितना है उतना ही मुझ को बहुत है
मेरा पात्र भी तो तन्ग ही बहुत हैं ।।४।।

इन दोनों में अब चाहता हूं शादी
नतीजा: हो जिस का मेरी आबादी
जभी यह दोनों गले से मिलें गें
चिदानन्द रूप फल मुझ को तो दें गें ।।५।

करते रहें यह हमेशा समागम
तभी मेरा आनन्द ज़रा भी न हो कम
अजब है प्रसाद यह अजव हैं यह भक्ती
सन्तान होगीं अजब मेरी शक्ती ।।६।।

इनका समागम सुख होगा मेरा
बिछड़ना इनहीं का मुझे दुख का घेरा
उसीं शक्ति बल से उद्धार होगा मेंरा
प्रसाद ओर भक्ती का सन्तान प्यारा ।।७।।

रहूं शाकिर मैं हर इक हाल में
न कांक्षा कोई हो किसी भी काल में
"दीन" हूं मैं नाथ मेरा सत्गुरु देव
जय बोलूं हरदम जय जय गुरु देव ।।८।।

१९७०

## जन्मदिवस २-५-१९७०

रऽति द्वहऽ: तुहुन्दई जयकार परने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने ।।१।

तोह्य् छिवऽ: मऽऽलिक सऽऽन्य ही स्वामी
तोहि बरऽऽय् छुनऽ: असि ब्ययि कांह वऽऽली
ब्ययि कुउत गछो अऽस्य् फऽर्याद करने
आमऽप्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने ।।२।।

सारऽ: रुउस सम्सार पतऽ: असि लुउगमुत
काल ति छु वुछान प्राण कति थौमुत
कर वटि अछय् इ: लगऽ:होस फरने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने ।।३।।

पनऽ:नुई कसूर छु वनौ क्याः भगवन
वऽलमऽत्य् पऽऽटय् क्यम सऽन्द्य् पऽऽठय् ज़ालन
तुहऽन्ज़ी दयायि सऽऽत्य् खुलि तोर बरने
आमऽत्य् छि अऽस्य तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने ।।४।।

मलौ सऽऽत्य् मलिनी अऽस्य् छीं गऽऽमऽत्य्
हिलौ किथऽ: हिलवौ ज़न छी ख्येमऽत्य्
कऽरतौ कृपा असि, आमऽत्य् छि शरने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने।।५।।

कमौं वलिमऽत्य् अऽस्य् अऽऽस्य् कऽऽफी
जन्मस आमऽत्य् शऽऽपी त पऽऽपी
तुऽहि कुर्वंऽ: आलौ त भाग्य् आय फुलऽने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने।।६।।

रुत गौ नसीबऽ: सोन ज़ोन असि अज़ इ:
उत्सव सोन ज़न्मऽ: द्यन तुहुन्द, अज़ इ:
छुनऽ: असि बुऽ:य लगुन ज्यनिः या मरऽने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने।।७।।

तुन्हदि दर्शनऽ: सऽऽत्य् गऽई रिन्द तरिथई
ह्यस दितुवऽ तुऽहि असि ज़िन्दय छि मरिथई
चमौ अमृतऽ: मस छलित तुहन्द्य् चरन
आमऽत्य छि अऽस्य् तऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने ।।८।

शिवऽ: नाथ: प्यठऽ: पृथवी ताम सोरुई
ईश्वर स्वरूपई असि बुज़्य ज़ोनुई
तुहि भ्यन छुनऽ: केन्ह ती आय वनऽने
आमऽत्य् छि अऽस्य तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने ।।९।

भावऽ: पोश लागोवऽ: अऽस्य् तुऽहि चरनन
करुन क्या छु असि पोथ्यन त परनन
तरौ सागरस लगिथ तुहुन्द नाव सुऽरऽने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने।।१०।।

"दीनन" प्यठ करियौ स्यज़ नज़र भगवन
प्रारान अऽस्य् स्यठाह् कालऽ: प्यठऽ: भगवन
वछ:वऽ: त्यलि असि कुन लगौ यलि मरने
आमऽत्य् छि अऽस्य् तुऽहि ज़ारऽ: पारऽ: करने।।११।

## फऽर्याद

ही सत्गुऽरऽ: पाद बूज़तौ फऽर्याद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद
छुनऽ: भगवान असि रोज़ान याद
छुनऽ: मरनुई असि रोज़ान याद ।।१।।

मूलऽ: मायि गिलठ मायायि कुउर असि
खुउत सु रण्गऽ: बदरण्ग गऽई बुउरबाद
फिकिरि: तुउर न केन्ह असि, क्या गव कमज्याद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।२।।

शुऽद्ध रूप अऽऽसित ज़ोन पान फरहाद
टयुठ जगत मोन शीरीन, कुउर याद
कोह बीठ चटनि अऽस्य गई तऽति नामुराद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।३।।

तुउग न अन्दर्य् बोज़ुन अनाहत शंख नाद
द्वह त रात न्यन्दिरम वऽन्य् अपज्ज्य राद
ती वऽन्य् वऽन्य् गयि वऽऽन्स असि बुउरबाद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।४।।

गाश अऽऽसित गाश ज़ोन असि गटऽ:वाद
अनि गटि मऽन्ज़ कुउर स्यठाह ककऽ:नाद
ज़ऽन्य् ज़ऽन्य् ब्ययि ब्ययि मऽशरोव पुऽज़ नाद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।५।।

युस न वनऽ:नऽ: इवान तमि कुई वाद वाद
अपऽज़ुई कऽर्यं कऽर्यं कुउर दिल शाद
ज़ानौ किथऽ: कऽन्य क्या छु स पुउज़ मवाद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।६।।

असलऽकिस ज़मीनस फसऽल वोव बेस्वाद
मलऽ: नऽई हऽन्ज़ मलिन त्रऽऽवस खाद
हृरदऽ: क्या वटौ अऽस्य गछौ मा नामुराद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।७।।

अक उमेद वुछ असि तऽमि सऽऽत्य् गई शाद
तुहि कुउरवऽह पानऽ: अनुग्रह दितुवऽ: नाद
तमि सऽऽतिन छ्यनऽन सऽऽन्य् इम अपराध
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।८।।

"दीनऽ:" आव टऽण्गऽ: वुऽन्य कऽर्यं कऽर्यं कथऽ
दियितोस इछऽनई तुह्य् वुऽन्य दाद ज्याद
भऽरतोस हलऽमाह करित, पूरऽ: मुराद
छुनऽ: पनुन पान असि रोज़ान याद ।।९।।

## आः हा

(सत्गुरऽ: दया)

चज़िमय त गजिमय
मोहऽ गट: गजिमय
सत्गुऽरऽ: दयायि सऽऽत्य्
मोहऽ गट: गजिमय ।।१।।

उपदोश करिथई
वनऽ: क्या म्ये: बुनऽनम
सोरुई चऽई छुक
मोहऽ गट: गजिमय ॥२॥

ई छुक त ती छुक
युथ छुक त्युथ छुक
शिवई ज़ीव: रूपऽ: छुक
मोहऽ गट: गजिमय ॥३॥

कुन छुई न गछऽनुई
केन्ह छुई न करऽनुई
पान चऽ: शिवई ज़ान
मोहऽ गट: गजिमय ॥४॥

क्या जि छुक बेकलान
दीह पान ज़ानान
ज़ानुन इ वुपरई
मोहऽ गट: गजिमय ॥५॥

पान छुई न पनऽ:नुई
अदा वन्ध बान्धऽवई
धनऽ: द्यार मायित्री
मोहऽ गट: गजिमय ॥६॥

ई दयन च्य: दितुमुत
वलुन ख्युन च्युन क्युन
रटनऽ: रुउस ति वरताव
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥७॥

क्या: छु यति रटऽ:नी
क्या: छु यति त्रावनी
अहं रट, कार त्राव
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥८॥

अहं रूपऽ: पानई
सोरुइ चऽ: ज़ानई
सम्वित्त छु ज़गऽथई
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥९॥

विश्वतीर्ण स्वरूप
विश्वमय ति सुई रूप
अहमऽ: निश न भ्युन रूप
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥१०॥

कार त्रावुन छुनऽ:
कार न करऽनुई
कऽर्यं कऽर्यं न करऽ:नुई
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥११॥

पुऽज़ छूक अपुज़ छूक
न पुऽज़ न अपुज़ छूक
पऽज़ि अपऽज़ि थुउद छूक
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥१२॥

ई छुक चऽ: छान्डान
तुउत न कान्ह वातान
अऽऽसथई छु अन्दरी
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥१३॥

सु चितानन्द स्वरूप
यच्छा ज्ञान क्रिया रूप
छु शिव शक्ती स्वरूप
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥१४॥

शास्त्र त गुऽरऽ: दीव
वतऽ: हावक छि दीव
चेनुन अन्दऽर्यं दीव
मोहऽ गटऽ: गजिमय ॥१५॥

अन्दरऽः ति सुई छू
न्यबरऽः ति सुई छू
अऽऽसित न कुनि छू
मोहऽ गटऽः गजिमय ॥१६॥

करतऽः प्रणाम तस
श्री लक्ष्मण जुवस
यऽम्य् दितुनय च्येः ह्यस
मोहऽ गटऽः गजिमय ॥१७॥

गुऽरऽः दर्शनऽः स्वरूप
ईश्वर स्वरूप रूप
"दीनऽः" पनः नुई स्वरूप
मोहऽ गटऽः गजिमय ॥१८॥

# पनुन पाय

पानस प्यठ त्राव पनऽ नुई सायो
सुई छुई असलुक सायि पानो
शकऽः सऽऽतिन रूदुक चऽः कमि छायो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥१॥

शक यऽम्य् गोलनय बन तसुन्द दायो
दाय तऽम्य् दितुनय दानऽः दानो
बानऽः थौ साफ चऽः दानस जायो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥२॥

चऽई छुक सोरुइ चऽई केन्ह नो हो
ई ती च्योनई, सामानो हो
रावऽः रोवुत कवऽः जूव त जानो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥३॥

ज़ोनमुत अज़ ताम कऽऽन्सि ति सु नो
तुऽत ताम मन बुऽद्ध न वातानो
इहऽऽय कथ ज़ान छिय सन्त बनानो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥४॥

करऽनुई न केन्ह तय गछऽः नुई कुन नो
पानय छुक जानानऽः जानो
यति तति वुछनो अहं आसानो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥५॥

बोज़त्य असलस कुन वुछानो
पायि पनुन्, पान छु आसानो
ज़ाननऽः बापत, करुन बनानो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥६॥

रोवमुत न्येः केन्ह नो, क्याः छान्डानो
ईरऽः गोख टन्ग् वीरः, मग्गानो
पानऽः रुऽस पान छुक, दीनऽः आसानो
पायि कर पनुन् पान, पानऽः ज़ानो ॥७॥

# शाहमार

पतऽः ब्रोंह छिम शाहमार लो लो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लो लो
सतगुऽरऽः म्यानि दिम तार लो लो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लो लो ॥१॥

अकिस सऽऽत्य् गऽछ्य् करऽम्य् नाहकऽच कथ
व्ययिस गऽछ हावऽन्य् अपज़िच वथ
इथय पऽऽठ्य् रोव सम्सार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥२॥

लोकऽचार रोवुम छालऽः मारान
याछुन तावनुन गरऽः सुऽम्बरान
बुडित वुऽन्य् मऽऽनिम हार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥३॥

करऽः क्याः छुम नऽः जाँह, जान कोरमुत
च्योन नाव छुम नऽः, जाँह ति सोरमुत
गोब छुम पापुन भार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥४॥

ह्यु तऽनम चोण्ग वुऽन्य् छ्यतऽः गछुन
दोह कऽचताम छिम अदऽः गछुन
जल जल करतम कार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥५॥

रावः रावान छुस दोह त रात बः
छा खबर कर रटऽः कुस सात बः
स्वात्मुक दिम दीदार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥६॥

आमुत छुस बऽः वुऽन्य शरण च्येः
सुलि नऽः रटुस चीर म्यः चरण च्येः
दयायि चानि हुन्द खासगार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥७॥

दीन छुस व "दीन छुस दास च्योनुई
छ्यम खबर दवा आम रास च्योनुई
तबाबत करुम बलगार लोलो
भगवानऽः म्यानि दिम तार लोलो ॥८॥

# दियि तौ दर्शुन

(जन्म दिन १६७१)

सतगुऽरऽः दियि तौ पनुन दर्शुन
करऽः होवऽः भावऽः पम्पोशि वर्शुन ॥१॥

दूरि प्यठऽः आय अऽस्य करनि प्रणाम
हलम दऽऽरित मंगान दया हुन्द दान
तुहुन्द इः पनुन अक कुनुई दर्शुन
करऽः होवऽः भावऽः पम्पोशि वर्शुन ॥२॥

रछऽवऽन्य छिवऽः तुह्य, सोरुई जगत
करित सृष्टी त पानऽः सई लय तथ
क्युथ छु आसान सुः शुऽभऽः दर्शुन
करऽः होवऽः भावऽः पम्पोशि वर्शुन ॥३॥

अऽछ्य टीण्टि अकि मऽन्ज़ वुजऽः नावान
मशरोवमुत पान याद पावान
लीला इः अदभुत तुहुन्द दर्शुन
करऽः होवऽः भावऽः पम्पोशि वर्शुन ॥४॥

भाग्यवान क्याः अऽऽस्य तिम ईत्याह
नाराण दास अनिमाल त कऽऽत्याह
वहिकऽः गटऽः पछि बाह बन्योख दर्शुन
करऽः होवऽः भावऽः पम्पोशि वर्शुन ॥५॥

अवतऽऽर्यं यलि अऽऽवः, ही गुऽरऽः दीव
तऽऽर लऽजनऽः नचऽनि लऽग्य, श्री राम दीव
गटऽः चऽज्य् गाश आव, बन्यौ दर्शुन
करऽः होवऽः भावऽः पम्पोशि वर्शुन ॥६॥

प्रकाश तुहुन्द छू युथ ज़ोतान
बाह सिर्यिः ताम छू, तल सु करान
वेमर्शंः रूप परामर्शि दर्शुन
करः होवः भावः पम्पोशि वर्शुन ॥७॥

रोज़ः हऽऽ बः चरनन तल, तुहऽन्द्यन
कृपा तिछ़ करितौ, जल भगवन
बुडयोस वऽन्य दूर छुम, कूठ दर्शुन
करः होवः भावः; पम्पोशि वर्शुन ॥८॥

कऽऽत्याः तऽऽरवक तुहि जगतस
"दीन" अऽस्य थौतौ असि ति च्यतस
नाद दित दियि तौ, बिन्दः दर्शुन
करः होवः भावः. पम्पोशि वर्शुन ॥९॥

## सत्गुऽरः देव शिव

भगवानः म्यानि, सत्गुऽरः दीवः शिव
छुक साक्षात ईश्वर, स्वरूपः शिव ॥१॥

रछ़तम रछ़तम, वति वति रछ़तम
जायि जायि रछ़तम, हो गुऽरः दीव
ख्यवान छिम नतः, चोरि पासः शिव
छुक साक्षात ईश्वर स्वरूपः, शिव ॥२॥

यस अथऽ प्यठ थवान, तरिथई गछ़ान
यस नज़र तुह्य् करान, फुऽलिथई गछ़ान
मुउदुऽर चऽऽन्य सुऽन्दर वऽऽनी शिव
छुक साक्षात ईश्वर स्वरूपः शिव ॥३॥

छुस वऽ भाग्यवान अकः दास चोन "दीन"
आमुत छुस च्यऽई खुरन तल "दीन"
रछ़ऽवुन छुक म्येः चऽई, पऽऽन्य् पानः शिव
छुक साक्षात ईश्वर स्वरूपः शिव ॥४॥

## निराभासात्

**निराभासात्पूर्णादहमिति पुरा भासयति यद्**
**द्विशाखामाशास्ते तदनु च विभङ्क्तुं निजकलाम्**
**स्वरूपादुन्मेषप्रसरणनिमेषस्थिति जुषस्**
**तदद्वैतं वन्दे परमशिवशक्त्यामं निखिलम्**

### अर्थ

छुस न केन्ह भास कुनि, पूर्ण छु पऽऽन्य् पानः
अहं रूपः पानऽसई, गुऽडः भासःमान्
पनऽनी कऽऽरीगरी, बुछनः बापत
पानय द्वगन्यार, धारन करान
अछ्य् मचरिथ फुऽलःरावान, जगतस
त वटःवुन पानऽसई सु गुपरावान्
तऽमिसई परमः शिव, शक्ति रूप कुनिसई
पूर्ण रूपस छुस ब नमान् ॥

## रऽऽज्ञऽऽय शारिकऽऽय ज़ालऽऽय बालऽऽय

रऽऽज्ञऽऽय शारिकऽऽय ज़ालऽऽय बालऽऽय
कडः तम यमि सम्सारः जन्भालऽऽय ॥१॥

यथ सम्सारस छु नः अन्द वोन्त केन्ह
बुउठ अपारि यपारि कऽम्य कर वुछ़ केन्ह
प्रथ केन्ह हावतम पनऽनि खतऽखालऽऽय
कडःतम यमि सम्सारः जन्भालऽऽय ॥२॥

सासऽ: बऽद्य् च्ये: नाव छी कोरऽ: बऽद्य् बोथ्य्
भासऽ: मान सोरुई चऽऽनी बोथ्य्
गऽछ् म्ये: आसऽन्य चऽऽनी यऽऽच् मालऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।३।।

च्ये: वरऽऽय वनऽ: कस, पनऽन्य बदहाल इम
च्ये: वरऽऽय छा कान्ह, करि पामाल तिम
मोह अनिरुक म्ये:, तुलऽतम ज़ालऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।४।।

फेरान छुस बऽ, अऽन्द्य् अऽन्द्य् पानस
छुम न फेरुण तगान अऽन्द्य् अऽन्द्य् नागस
फींय् फींय् छुस वछान पनऽन्य् इम कारऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।५।।

सम्सार ति छुनऽ:, केन्ह जन्झाला
पनऽ: नुई करुण पानस बन्द ज़ाला
कऽऽली मुऽकऽ:लावतम कोकालऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: ज़न्झालऽऽय । ६।।

आसि किथऽ: जन्झाल केन्ह इ: सम्सार
चऽई करन वाज्यन इम सऽऽरी कार
नाहकऽ: पाहकऽ: मटि ह्य तमुत म्ये: भारऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।७।।

पुउज़ छू छुम न गोमुत केन्ह बिलकुल
ह्यस त सुम्रत कोनऽ:, ती फुउलुम पोशिकुल
याद थावतम त याद पावतम पानऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।८।।

सम्सारस मऽन्ज़ छा कुनि कान्ह चीज़
युस न च्योन प्रकाश च्योनुई योत तीज़
होशि सान दितऽ: म्ये: ती अनुभावऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।९।।

नवि नवि दर्शनऽ: नुउन नोव नोव रूप
ज़ोतऽ: वुन त वदलऽ: वुन, च्योन रन्ग त स्वरूप
हाव दीनस इ: दित पनऽ:नुई ख्यालऽऽय
कडऽ:तम यमि सम्सारऽ: जन्झालऽऽय ।।१०।।

## पनऽ:नुई पान

यलि ज़ोन ज़ानान छिनऽ: अऽस्य् केन्ह ति
त्यलि ह्यु त ज़ानुन पनऽ:नुई पान
ज़ऽऽन्य् ज़ऽऽन्य् ज़ऽऽनिथ छि अनज़ऽऽनी
त्यलि ह्यु त ज़ानुन पनऽ:नुई पान ।।१।।

परान परान अऽछ्य् गयि काने
अलिफस सऽऽत्य् ति गयम नो ज़ान
स्वरान स्वरान द्वह त रात रोवुम
क्या गोम सहज़स नो वातान

पनऽ: न्यौ कुऽठ्यौ सऽऽत्य कुस कर तोर वोत
तोरऽ: किस आलऽवस छुस प्रारान
तोरय यलि सुई आलव वोतुम
त्यलि ह्यु त ज़ानुन पनऽ:नुई पान ।।२।।

पुउरमुत मगरूर यूताह ज़ोनुम
अथ बानस तस वाति कूताह
गाफुल पशेमान यूतऽई ज़ोनुम
कुऽदरत तऽमि सऽन्ज़ छे: त्योताह

ईश्वर स्वरूप म्ये: शिवनाथ ज़ोनुम
ज्यवि होश अऽछ्य् गाश तनऽ: म्ये: आम
"दीनन" म्ये: तऽस्य् पान पुशरोवुम
त्यलि ह्यु त ज़ानुन पनऽ:नुई पान ।।३।।

ॐ

# कूर लूकस नुऽश लूकस

कूर लूकस नुऽश लूकस, नाहकऽः लूकस म्यण्गऽः दग
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनुन छुक चऽः वक्त तण्ग ।।१।।

करुन क्या छु क्या छुक करान, करतऽः पानय सोच चऽः
पानई गांरुन पान व्यचारुन, पनुन करतऽः खोज चऽः
पानय पानस अन्दर अचित, वछतन तती आनन्द कन्द
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनुन छुक चऽः वक्त तण्ग ।।२।।

चलऽःवुन छु इः ठहरान ज़ान्ह नऽः, लिथवान पानस सऽऽतित काल
अऽथ्य् प्यठ खऽस्य् खऽस्य् करुन गछि, पानय पनुन पान सम्भाल
ह्यस युस थवि नऽः अथ कुन पूरऽः, बन्दन मऽन्ज़ छु गछान बन्द
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनुन छुक चऽः वक्त तन्ग ।।३।।

क्याः छु समय क्या छु पकुन, कति छु आसान हू त इः
कऽम्य् ज़ोन अज़ ताम, जानुन क्या छु, मानुन कुनई बऽ त इः
स्युद्ध स्युद्ध पकुन, दितःमुत रट्ठुन, दययि ज़ानुन अन्दऽ वन्द
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनु छुक चऽ वक्त तण्ग ।।४।।

ब्ययि सुन्द वऽन्य् वऽन्य् क्याः च्यः नेरी, सोचा कर चऽ पूरऽः पऽऽठय्
अथ्य् वक्तस मऽन्ज शिव शिव शिव सुउर, अभिज्यत् अथि इयि इथय पऽऽठ्य्
पनुन पान यलि पानय ज़ानक, फिकिरऽः खोफ च्येः गछनई बन्द
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनुन छुक चऽः वक्त तण्ग ।।५।।

गोमुत केन्ह ति छुई न बोज़ू, मऽशरोवमुत छुई पनुन पान
पानय अऽऽमित पानय पानस, प्यठ छुई खोरमुत पनुन पान
सऽऽयं् सऽऽयं् सारुन चऽऽयं् चऽऽयं् चारुन, कति छु वुठ तय कति छु दन्द
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनुन छुक चऽः वक्त तण्ग ।।६।

कऽयं् कऽयं् करुन केन्ह ति गछि नऽः ज़िन्दय पानय गछि मरुन
पुशरित पानाः बडे बडिसई, तमी कुउर इः भाव भरुन
चूरस अथि छि बऽड श्राखा इः, मुजरा ह्यज़ि नऽः अऽथ्य् मऽन्ज़ गन्ध
क्याज़ि करान पऽऽन्य् पानय, पनुन छुक चऽः वक्त तण्ग ।।७।।

मल त्ये: ज़ानुक क्या: छि आसान, वलान तिमई च्योन स्वरूप
गुऽरऽ: सई नमिथ, उपदीश रटित, नुउन कऽड पानय पनुन रूप
स्वातमऽ: रूपुक आनन्द मस च्यथ, "दीनो" बऽडराव रिन्दन ग्रन्द
क्याज़ि करान पऽऽन्य पानय्, पनुन छुक चऽ: वक्त तण्ग ।।८।।

## नोवुई चीज़ा

वुछ वुछ ज़ान ज़ऽऽन्य् ज़ऽऽन्य् वुछ, नोव नोव नोव नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्ये: वुछुम बनान, अकिस पतऽ: अक नोवुई चीज़ा ।।१।।

गहे वुछमस हुत्यन यतिनस, अगल अलग नोवुई चीज़ा
गहे वुछमस सुई चींज़ा, सुबन शामन नोवुई चीज़ा
सिलसिल दार, बनोवुन पऽऽन्य्. पानस नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्ये: वुछुम बनान, अकिस पतऽ: अक नोवुई चीज़ा ।।२।।

गहे मशरिक गहे मगरिब, खसान वसान नोवुई चीज़ा
गहे जाफ़ुर गहे गुलाब, विजे विजे नोवुई चीज़ा
अज़ अऽऽस तऽऽर पगाह् वुशनेर, समय ती गव नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्ये: वुछुम बनान, अकिस पतऽ: अक नोवुई चीज़ा ।।३।।

ज़ानान सुई त करान सुई, पऽऽन्य् पानस नोवुई चींज़ा
कुनुई छु कुन अऽऽसित गव, स्यठाह बनिथ नोवुई चींज़ा
वनिथ कुस ह्यकि क्युत आसान, प्रोन छा नोव नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्ये: वुछुम बनान, अकिस पतऽ: अक नोवुई चीज़ा ।।४।।

छु तऽऽजऽब म्ये:, वनस क्या नाव, वुछ वुछ वुछ नोवुई चीज़ा
वऽन्य् छू सू, वऽन्य् छू हं, चन्द्र सिर्या:, नोवुई चीज़ा
द्वन मऽन्ज़ बाग केन्ह नऽ: ति:, सोरुई सुई, नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्ये: वुछुम बनान, अकिस पतऽ: अक नोवुई चीज़ा ।।५।।

छु कुन सू छुस न सिलसिलऽ: केन्ह, केन्ह न तऽ केन्ह नोवुई चींज़ा
बऽन्दिश छ्यस न मुलेह केन्ह, करान पान बन्द नोवुई चीज़ा
बन्द अऽऽसित ति छू यलय़, अजब कऽऽदा नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्ये: वुछुम बनान अकिस पतऽ: अक नोवुई चींज़ा ।।६।।

यलय छ्व अक करान पान बन्द, अदय बनान नोवुई चीज़ा
पनऽन्य् कुऽदरत पानय वुछ, वुछान पानय नोवई चींज़ा
प्रचा बनान बननः रुऽस, पनऽःनी ज़ान नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्येः वुछुम बनान, अकिस पतः अक नोवुई चीज़ा ॥७॥

समय छु सिल सिलः दार, सिलसिलः दार नोवुई चींज़ा
अकिस निशि ब्याक बिलकुल भ्युन नोवुई चीज़ा नोवुई चीज़ा
बनावुन नोव नोव तस रुस, कस ताकत नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्येः वुछुम बनान, अकिस पतः अक नोवुई चीज़ा ॥८॥

सिलसिलः छु मायऽऽयी तति ओर कुन नोवुई चीज़ा
तति अक त लछ कुनुई, पतः ब्रोन्ह अक, नोवुई चीज़ा
तमी मऽन्ज़ः द्वावः ती, ती तऽथ्य् शुऽप, नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्येः वुछुम बनान, अकिस पतः अक नोवुई चीज़ा ॥९॥

खटित रोज़ुन नुउन नेरुन, अकी वक्तः नोवुई चीज़ा
स्वभावई तस अज़ूबाः छु फिकिरिः तरिः कस नोवुई चीज़ा
स्यद्य् साधः क्या, गाटऽल्य् रऽऽव्य्, वछान वछान नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्येः वुछुम बनान, अकिस पतः अक नोवुई चीज़ा ॥१०॥

प्रथ मनऽशस बुउड शोखा वुछः हऽऽ नोव नोवुई चीज़ा
वछः हऽऽ नोव ख्यमः हऽऽ नोव करऽ हऽऽ नोव नोवुई चीज़ा
बेखबऽरा वछान पानय, पनः नुई पान नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्येः वुछुम बनान, अकिस पतः अक नोवुई चीज़ा ॥११॥

हा "दीनो" शरन तऽस्य रोज़ पथ कुन वुछ नोवुई चीज़ा
पनुन पान तऽऽजबः वुछ क्युथ आसान नोवुई चीज़ा
नोव छुनः केन्ह, ई छुतऽ ती, कुनऽई आसान, नोवुई चीज़ा
कुनिसई म्येः वुछुम बनान, अकिस पतः अक नोवुई चीज़ा ॥१२॥

## क्याः छू पान

सनतौं वोनहम जगतस सनतो
वछतौं क्याः छू पान आसान ॥१॥

गुऽरऽः सुन्द वाक चऽः दयि वाक जान्तो
बनऽनऽः रुस बन्तो सोरुई केन्ह
तऽम्य् सऽन्जिई कृपायि सऽऽत्य् पोश चऽः फुऽलतो
वछतो क्याः छू पान आसान ॥२॥

पानऽः रुस पान चऽः वारऽः पऽऽठ्य् वछतो
जिन्दऽः रोजुन ह्यछ मऽर्यं मऽर्यं चऽः
अन्दरी अन्दर पानस अचऽः तो
वछतो क्याः छू पान आसान ॥३॥

रूजित जगतऽः निशि न्यबर वछतो
जगथई पानय दय आसान
विश्वतीर्ना विश्वरूपई बनतो
वछतो क्याः छू पान आसान ॥४॥

थुउद रूप खटित छू ह्यस चऽः करतो
सुई रूप नऽन्य् पऽऽठ जगत आसान
सऽऽर्य् सऽऽर्य् यऽथ्य् मऽन्ज सोरुई वछतो
वछतो क्याः छू पान आसान ॥५॥

सऽन्य् सऽन्य् खऽस्य् खऽस्य् नुउन मतऽः वनतो
बऽन्य् बऽन्य् बनिथ छा वनिथ ह्यकान
वुछ वुछ दीनो ब्ययि ब्ययि वछतो
वछतो क्या छू पान आसान ॥६॥

## शैव

सतगुऽरन वुननम, इहोय गव बा शैव
कसताम छुक मण्गान, केन्ह नतऽः केण्ह ॥१॥

छुऽऽण्ड म्येः दिच्ऽऽयम, शैव बः वछःहऽऽक
लऽब्य् लऽब्य् लबिम, तिम बस सिरिफ त्रेह ॥२॥

अक ओस शिव नाथ, सर्वदा समऽऽज मऽन्ज
विश्वतीर्न अऽऽसित ति विश्वमय देह ॥३॥

सतगुऽर पनुन ईश्वर स्वरूप जी द्रयुम ओस
तस ति श्यशन हुन्द, छ्यनऽः रूस स्त्रेह ॥४॥

श्यशन मऽन्ज़ दप्योम, कान्छाः लभऽःहऽऽन
तिम सऽऽरी कान्छान, दयि सुन्द नेह ॥५॥

जेन फलेश जेन बोनस, मऽन्ज़ चूर्यंम होवनम
चूर्मिस थप दिथ, छुऽपऽः करिथ बेह ॥६॥

सतगुऽरऽः दया छ्यम, मऽञ्ग्य् मऽञ्ग्य् मऽञ्ग बा
किथऽः करऽः "दीनऽः" छुऽपऽः, वनि छुम हेह ॥७॥

ही सतगुऽरऽः म्यानि, स्वात्मऽः रूप हावतम
पानय करऽः बऽः छुउपऽः, वुथ्यम शैवी रेह ॥८॥

## हेह क्या गव

न द्राव केन्ह कऽऽन्सि निश
त न अलग छु केन्ह
सुई ब त बऽई सुः
ब्यनऽरुक छु सिरिफ हेह

१९७२

१९७२

# छुऽटयन लफज़न मऽन्ज़

जन्म दिवस १९७२

भावऽ: पम्पोश लागोवऽ: प्रेमऽ: ही
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥१॥

करौ पूजा अऽस्य, गुल्य् जऽ: गन्डित
गोर छुनऽ: कान्ह बकार न जि कान्ह पन्डित
मौनऽ: सऽऽत्य् मन थ्यर, तारक छु सुई
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥३॥

वनौ क्या वऽऽनी छि, तुहुन्दुई विकास
व्यमर्शऽ: रूप सोरुई तुहुन्दुई, प्रकाश
परा ह्यथ वैखरी, तुऽही, छिवऽ: ती
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥३॥

तुही होवऽवऽ: असि सीर्यं चन्द्रमऽ:
ख्यनऽ: ख्यनऽ: रचि रचि प्रथ अन्द्रमऽ:
इडा पिन्गला सुशुमना पानऽ: सई
सत्गुऽरऽ सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥४॥

ललि वुछन हू त हा छु तरुन तुउत
वनान तुह्य् भीद ज़ानुन गव मुउत
द्वयतऽ: मऽन्ज़ऽ: अद्वयत वछि यूगो
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥५॥

यति केन्ह तति केन्ह तुहुन्दुई स्वरूप
तुऽहि भ्यन्न न कुनि चीज़स नाम रूप
नतऽ: आकाशऽ: पोश, योत आसि सुई
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥६॥

शिबऽ प्यठऽ: प्रथवी ताम सोरुई
दर्शुन तुहुन्दुई असि इ: कोरुई
तुऽही असि दीवता तुऽही दीवी
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥७॥

मन बुऽद्ध अहंकार धूप दीप पोश
भक्ती नार असि अऽऽस्य्तन जोश
शरीरई हुमनस किच् सामग्री
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥८॥

यन्द्रययि: सार्यं सुम्बरोक अऽस्य्
अन्दगी पूज़ि तुहन्ज़ि लागोक अऽस्य्
न्यब्रऽ: सोरुई छु मायऽऽयी
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप ज़ी ॥६॥

पोशि माल वऽर म्ये:, ताज़ऽ: ताज़ऽ: अज़
भाव प्रेम; पोश छिस, लोलऽच्य् रज़
निराकार रूपस स्वरूप वऽऽनी
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप ज़ी ॥१०॥

दयायि प्यठ इयि तौ तुह्य पानय
स्वात्मऽ: रूप हऽऽव्य्तौ सानि जानय
"दीन" छु करान अज़, ज़ारऽ: पारऽ: ती
सत्गुऽरऽ: सानि ईश्वर स्वरूप जी ॥११॥

यत्रासि माता न पिता न बन्धुः
भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च ।
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः
तत्रात्मदीप शरणं प्रपधे ॥

# सुई छू

अन्दरऽः ज़ोतान न्यब्रऽः चमकान सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू
सू छू हम छू सू छू हम छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥१॥

यस न मोल मऽऽज़ कान्ह यार बान्धौ छू
यस न ब्यनि भोय कान्ह ति अऽऽशानाव छू
यस रात दोह ताप अनिगउट कुन छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥२॥

व्यन जगतन युस कुन मऽऽलिक छू
यथ तथ सऽऽरिसई युस सऽऽलिक छू
सहज़ऽः स्वभाव युस हऽऽविथ सहज़ छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥३॥

गण्डऽःरूउस त बन्धऽः रुउस युस आसान छू
गण्ड तिः बन्ध तिःयुस आसान छू
सुई दुरलब लबुन, सुई आसान छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥४॥

ब्रह्मा विष्णू शंकर, सुई छू
कर्ता धर्ता हरता, सुई छू
सोरुई करित, केन्ह, न करान सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥५॥

ज़ोन्मुत सुई, ज़ानन वोल, सुई छू
ज़ान ज्ञान सोरुई,सुई पानय छू
व्यनऽः वऽन्य् मऽन्ज़, व्यनऽवऽन्य् थुउद सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥६॥

वुद हुश्यार जाग्रत ति सुई छू
पनऽः नुई तीज़ स्वपुन ति सुई छू
स्वशपती ज्ञानऽः रूप न्यन्द्र ति सुई छू
आत्मऽ दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥७॥

व्यनऽःवऽन्य् दशायन मऽन्ज ह्यसऽसान छू
चूर्युम प्रथ विज़ि सुई सगऽःवान छू
चीनिथ ज़ानान, अनज़ानान छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥८॥

शिव शक्ती सदाशिव ति सुई छू
ईश्वर शुऽद्धऽःव्यद्या ति सुई छू
मायायि प्यठऽः पृथवी ताम, सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥९॥

निराभास अऽऽसित आभास सुई छ
निराकार साकार सोरुइ सुई छू
कुन सुई अऽऽसित लछ सास सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥१०॥

पूर्णं पानय अपूर्णं सुई छ
अलौकिक भ्यन्न त अभ्यन्न सुई छू
दूर भऽऽसित पानस, निशि सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू॥११॥

ईश्वरस्वरुप महताब राम सुई छू
सुदर्शन प्रसाद लक्ष्मन सुई छू
गाश गुलाव मुकन्द नारान छ
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥१२॥

तारा व्यशिमाल तीज़ऽःमाल सुई, छू
उमरा ज़यिमाल रऽच़ सुऽन्दर छू
राधा राधा जूनऽः माल सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू॥१३॥

मखनलाल शिबन राज ति सुई छू
दुलारी वीना योगिन्दर जी छू
कान्ता जान्की ब्यनि शुर्यं सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू॥१४॥
अन्नपूर्णा इन्दू, आशुतोश छू
ईशान गऽञ्जू राधिकाति सुई छू
अन्नुराधा सुमीना सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू॥१५॥
श्मशेरि चुऽटमत नऽः नारऽः दुऽदमुत छू
ज़ान्ह नाराज़ऽः न खुऽश गौमुत छ
वावऽः हुऽख नऽः, नः ख्यौ ज़ान्ह कालन सू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू ॥१६॥

नाथ निराकार निविकल्प सू छू
शिव शंकर सर्वात्मन सुई छू
"दीनऽः" दयाल दीनानाथ सुई छू
आत्मऽः दीवस तऽस्य् म्योन प्रणाम छू॥१७॥

यदनात्मन्यपि तद्रूपा
- वभासनं तत् पुरा निराकृत्य
आत्मन्यनात्मरूपां
भ्रान्ति विदलयति परमात्मा
परमार्थसार, ३६

कन थव ह्यस थव छुखय त्रुक
परमार्थसारुक सार छुय इहोय टुख
शुर्यं बऽऽच़ लरि धनऽः शरीर गव न पान
इहऽऽय गटऽः यलि अछ्यौ प्यठऽ छु तुलान
दय दया अदऽः पूरऽः पऽऽठिन करान
व्यराठ स्वरूप विश्व युस छु भगवान
सुई गव पान त सम्वित्त सुई गव ज़ान
नी भास छुस पूरऽः पऽऽठ्य् करऽनावान

---

नोट :- श्लोक १२ ईश्वर स्वरूप मेरे भगवान गुरुदेव, महताव (काक) = परमगुरु (श्री) राम (जी) परमेष्ट गुरु, स्वुदर्शन, प्रसाद, लक्ष्मन=तिपा, पितमह, प्रपितामह, गश गुलाब मुकन्द=तीन माता मह श्लोक १३ तारा, व्यशिमाल, तीज़ऽः माल=मेरी तीन मातायें। उमरा, ज़यिमाला रऽच़, सुन्दऽर= पितमही से बृधप्रतामही तक। राधा, राधा जूनऽः माल=तीन माता मही नाराण=मेरे एक मामा जी पूर्ण सन्त थे। श्लोक १४ माखनलाल शिबन (जी) =दो सुपुत्र, दुलारी बीना दो बहू, राज योगिन्द्र जी =पुत्री और जामाई, कान्ता (कर्णल) जान्की (नाथ) वहन बहनोई, श्लोक १५ अन्नपूर्णा, इन्दू, आशुतोश = माखनलाल के बच्चे ईशन राधिका=शिबन जी के बच्चे। अनुराधा सुमीन =राज की लडकिया गुन्जू = हमारी जाती का नाम

# मे नास्ति किंचन, अथ मे सर्वं

केन्ह छुनऽ म्योन कुनि, म्योनुई सोरुई
अपज़ुई सोरुई, पुज़ई हा सोरुई ॥१॥

छुस न बऽ केन्ह ति, भई छुस सोरुई
तन नो म्यऽऽन्य केन्ह, अहमई सोरुई ॥२॥

अहमक मो बन, मशरांव तन मन
मनऽ ह्युर खस चऽ:, तऽत्य वुछ सोरुई ॥३॥

यति नो केन्ह ति, तऽथ्य् मऽन्ज़ सोरुई
व्योल वुछ वुछिथई, कुल ज़ान सोरुई ॥४॥

कुल चऽ: अकुल ज़ान, ज़ानई सोरुई
सोर नो केन्ह ति, पानई सोरुई ॥५॥

धनऽ द्यार चऽऽन्य् नो, दयि सुन्द सोरुई
पान शिव ज़ान्तो, च्योनुई सोरुई ॥६॥

शिव चऽ: पानऽ छुख, शक्तीं रूप छुख
नर रूप चऽई छुख, च़ई हो सोरुई ॥७॥

नेत्रऽ: छि माया, अन्द्रऽ: अमाया
माया अमाया, चई हो सोरुई ॥८॥

अखलछ अख छु, लछऽ नोव कुनुई छू
अख वारऽ:, चेनतो, लछ चई सोरुई ॥९॥

चेनुन छु क्या:. चेनऽवन चऽई छुक
करनुई छुनऽ केन्ह, करिथई सोरुई ॥१०॥

करुन छु स्वभाव, ज़ानुन ती गव्
कर्य् कर्य् न करुन, गीता सोरुई ॥११॥

ह्यस कर ह्यस छुख, चेन वुन्य् ह्यस छुख
ह्यसऽ: म्यन केन्ह नो, ह्यसई छु सोरुई ।१२॥

ह्यस यनऽ: मशरूथ, सम्सऽऽय् बन्योख
सऽऽर्य् सऽऽर्य् वारऽ चार, सम्सार सोरुई ॥१३॥

सम्सार चऽई छुख, सारुन चऽई छुख
सारी कति क्या:, सार छु सोरुई ॥१४॥

ई छु ती छुख, यति तति चऽई छुख
"दीनो" ती ज़ान, नाथई सोरुई ॥१५॥

सतगुऽर ज़ोनथन, भगवान वारऽ: पऽऽठ्य्
श्री ईश्वर स्वरूप, शिव नाथ सोरुई ॥१६॥

शेख नूरदीन

तलऽ: छुई ज्युस तय, प्यठऽ छुख नचान
वन्तऽ: मालि मन कवऽ:, व्यचान छुई

हारनि गरमी, पोह त माग गोम
हाह गोम नीरित हृदऽ: अन्दरय
म्यूठ त मुऽदुर खेय खये दिल सिया: गोम
ताह करुम पानस तक्तस प्यठ

# पान मन्दऽछोवुम

रन्गऽ: रन्गऽ: रन्गऽ: म्ये: पान मन्द छोवुन
पानऽ: मशरोवुम पनऽनुई पान ॥१॥

वेरण्ग पानस बद रण्ग खोरुम
तऽथ्य् खुर्य् नोवि मऽन्ज़ द्रास सऽऽलस
क्रूठ सदराह म्ये:, म्यूठ घरऽ: जोनुम
पानऽ: मशरोवुम पनऽनुई पान ॥२॥

याद म्येः रूद नऽः क्या बऽ ग्रोसुस
कति प्यठऽ ग्रामुत त कुत छु गछुन
शाहनशाह पान बेछऽवुन बनोवुम
पनऽः मशरोवुम पनऽनुई पान ॥३॥

इ बन्यौ ति सोरुई पनुन कार ज़ोनुम
म्यई कुउर वनऽनस पुशऽरुम पान
करन वोल भगवान नाबकार ज़ोनुम
पानऽः मशरोवुम पनऽनुई पान ॥४॥

रणगऽ रुउस पान म्येः रणगदार मोनम
नाव कर्य् कर्य् ग्रदऽः कुउरमस नाद
नावि हुन्द वावऽःहऽऽन्ज़ ज़ान्ह न परज़नोवुम
पानऽः मशरोवुम पनऽनुई पान ॥५॥

ज़ानुन क्याः छू ज़ोनुम ज़ान्ह नो
ज़ानन वोल कुस खबऽरई न केन्ह
ग्रपज़ुई जन्झाल पनुन पान ज़ोनुम
पानऽः मशरोवुम पनऽनुई पान ॥६॥

ज़ेन हुन्द पुतऽला भगवान मोनुम
ग्रन्दर्युम यार छोन्डुम न्यबऽरय
पनुन पान न्यबऽरय कनि छ्चऽरोवुम
पानऽः मशरोवुम पनऽनुई पान ॥७॥

गिन्दन वऽऽल सुन्द गिन्दुन वऽछ्य् बऽछ्य् न ज़ोंनम
वऽऽय् वऽऽय् करान मारऽः कुउर म्येः पान
मरनऽः बरऽऽई मूदुस मोनुम
पानऽः मशरोनुम पनऽनुई पान ॥८॥

मुऽरदस मरिस म्येः ज़िन्दऽः नाव थोवुम
ज़िन्दऽः लाल ज़ोनुम पूरऽः मुऽरडऽः
नाथ ग्रऽऽसित पान "दीनाः" बनोवुम
पानऽः मशरोनुम पनऽनुई पान ॥८॥

## पनुन ग्राकार

भगवान छा साकार किनऽः निराकार
नेरी ग्रमि ग्रऽन्ज़ऽः क्याः, ज़ान पनुन ग्राकार ॥१॥

छुखऽः चऽः इः शरीरा, ज़ानान युस चऽः पाना
तलऽः बा सोच व्यचार, ज़ान पनऽनु ग्राकार
जाग्रत ग्रगर छुक चई, न्यन्द्रि मऽन्ज़ कति चई
तति ति ज़ऽऽन्य्कार ज़ान पनऽनु ग्राकार ॥२॥

सुपुन क्या ग्रासान, पनुन तीज़ भासान
पनऽनुई कारुबार जान, ज़ान पनऽनु ग्राकार
सोच कर पान चोनुई, त्र्यनऽवऽन्य् मऽन्ज़ नोनुई
चू रिमिस खरीदार, ज़ान पनऽनुई ग्राकार ॥३॥

मुऽर चऽ यलि त्रावक, ज़ान पथ क्या थावक
मरिस ख्ययि ना नार, ज़ान पनुन ग्राकार
नार ख्ययस या म्यच, तमि वति तोत गई कऽच्
मुऽर ति ग्रोस न यार, ज़ान पनुन ग्राकार ॥४॥

व्ययि व्ययि करतऽ नज़र, गऽड्य गऽड्य ज़ोरऽः कमर
वुछुत क्या मददगार, ज़ान पनुन ग्राकार
शूर्य् बऽऽच् यार ग्रऽऽशनाव, त्रावन मऽन्ज़ सहराव
म्येचि बनि म्यचि भार, ज़ान पनुन ग्राकार ॥५॥

ग्रासऽहऽऽखय शरीर, कोत गछऽहऽऽक नीर नीर
त्रावुन ज़न छु भार, ज़ान पनुन ग्राकार
मरित करिहे ना वाद, क्याज़ि कोरवस बुरबाद
छुस ना बऽ सुई लोकऽचार, ज़ान पनऽनुई ग्राकार ६

ज़ाख त बऽड्योख चई, जवऽऽनी त बुज़र चऽई
बदलऽवुन ग्रोसः ग्राकार, ज़ान पनुन ग्राकार
कुस ज़ाव या मरिह, कुस न्यबर कुस घरि
सोरुई केन्ह निराकार, ज़ान पनुन ग्राकार ॥७॥

"दीनो" वुछ कारुबार, साकारई निराकार
म्यई कोर बुउड, भार, ज़ान पनुन ग्राकार
छुस ब कुस तान्यत, धनः दोलत लऽर ह्यथ
भ्रम यहोय बुउड भार, ज़ान पनुन ग्राकार ॥८॥

# अहंपापी

अहं पापी पापक्षपणनिपुणः शङ्करः भवान्
अहं भीतो भीताभयवितरणे ते व्यसनिता
अहं दीनो दीनोद्धरणविधिसज्जस्त्वमितरन्
न जानेऽहं वक्तुं करु सकलशोंक्ये मयि कृपाम

छुस बः पापी भगवानऽः च्येः सिवऽऽय
कुस सना पाप शाप गालि म्यऽऽनी
छुस कऽऽञ्प्योमुत ही शिवःनाथः बऽः
च्येः वरऽऽय ह्यकि न कान्ह थरह कऽऽसथई
छुस बः दीन प्योमुत ही ज़गतीश्वर
तुलन वोल च्येः भ्यन्न कति छु लभऽनी
वनऽः नस छुम न ताकत ही शंकरऽः
प्रथ विज़ि रोज़तम दया करऽवुनई ॥

# मामस भक्ष्यन

पाप छु पाप छू मामसऽ भक्ष्यन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन
जन्मऽ द्यन कि द्रोहऽ लोलऽः सान लूकन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१॥

शूभिदार द्रोह ओस वहि कऽ गटऽपछः बाह
लूक आय जोक दर जोक ईशऽबऽर स्यठाह
दर्शुन करुक द्वयदोहस ओस प्रज़लन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥२॥

सुबऽहऽऽय शिवऽः रूप होवुन सारिनई
दर्शनऽ अमृत चोवुन सानिई
फुऽलिमऽत्य् भकऽत्य् अऽऽस्य् जामन न व्यचन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥३॥

पूजायि वक्तन लोलऽ सान पूज़ा
हऽऽवऽन पतऽः वत किछ़ अऽऽस शूभा
शिव ओस पूज़ा पऽऽन्य् पानस करन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥४॥

सासऽ वदि वऽई ख्यौ नवीद क्या मज़ऽदार
फलिस फलिस मऽन्गःवऽन्य् अऽऽस्य् तिम
अन्नपूर्णा पऽऽन्य् पानय बऽऽगरन लोलऽदार
ओपदीश कोर श्रीं ईश्वर स्वरूपन ॥५॥

थज़रस प्यट भ्यूठ अदऽः सोन भगवान
अकि अकि पानय दया नवीद भऽऽगरान
शोकऽ तय ज़ोकऽ लूक च्यलऽ च्अट चालन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥६॥

द्वयि बजि ओपऽदीश करुण लोलऽ सान ई
सासऽ बऽद्य् लूक कन थवित बोज़ान ती
पाप छू पाप छू मामसऽः भक्ष्यन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥७॥

धर्मऽ शास्त्रस मऽन्ज़ वनान यागिन वलक
मामस ख्यनऽः सऽऽत्य् ज़न्मऽः ज़न्मन फलक
दिवान दुऽख ख्यनऽः वाल्यन छू आसन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥८॥

त्रेयि रूपऽ पाप छू ख्युन केन्ह मामस
प्राण हरन पीढा वींयक्षीप वनऽनस
ज़न्मऽ ज़न्मन ख्यनऽ वालयन मारण
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥९॥

प्राणहरन गव दयि दितऽमुत ज़ूव नियुन
पीढा खश करनऽ वक्तन दोद दियुन
ज़ोरऽ रटित मारनस वीर्यक्षीप छि वनन
ओपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१०॥

पकऽवुन खेलऽवुन श्रोस कटऽकाखा
वस ताम्य् ख्यमऽहऽऽस वनान बटऽ काखा
पुज्य् तस मारान तऽम्य्सन्दी खऽऽतऽरन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥११॥

मारन वोल थप करन वोल ब्यथि ह्यनऽ वोल
श्रनन वोल रनन वोल ब्यथि इः ख्यनऽ वोल
बऽऽगरन वालि सान पाप ह्यूव ज़ेनन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१२॥

प्राण हरनुक पाप पोशान ज़नमन
ज़न्मऽः ज़न्मऽ श्रडऽचोट पऽऽनी छु गछ़न
कुनि ज़न्मऽ वऽऽन्स न पूरऽः सु भोगन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१३॥

पीढा दिनुक बोज सज़ा बोढ मेलन
प्रथ ज़न्मऽः वोडिचन्ड ज़ीवस छि मेलन
मोल मऽऽज़ शूर्य् बऽऽच ताडना छिस करन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१४॥

वीर्यंऽ क्षीपुक डन्ड कम न केन्ह श्रासन
ज़न्मऽ ज़न्मऽ बेमऽऽरय् लारऽलार छस करन
करज़दार छु बनान डाकटरन हऽऽकीमन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१५॥

टाठ्यो त्रावतो वनि ति इह पाप
त्रावनऽः सऽऽत्य् गलान सऽऽरी प्रऽऽन्य् पाप
शाप तुउहि चलऽनवऽः सोज़नवऽः स्वरगन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१६॥

शामस तामत लुऽग ईः जलसा
बीरऽः श्रऽऽस्य् बडऽ, बोड श्रोस मेलः
लछः बऽद्य् मेलऽ इम "दीन" छु कान्छन
श्रोपदीश कोर श्री ईश्वर स्वरूपन ॥१७॥

# मलऽः त्र्यथि सन्यास

मौ चट पलौ चऽः मौ त्राव घरऽः बार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार
विज़ि विज़ि वुद रोज, रोज़ बेदार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥१॥

श्राणव मल बऽः श्रासऽनुक निशानऽनार
कारम म्यई कुउर इह कारोबार
माय़ी मल वनान, म्योनुई छु घरऽबार
मलऽः नई त्र्यन चऽ करु सम्हार ॥२॥

जिन्दय मरुन गव पानय बनुन नार
मल त्र्येः ज़ालऽन्य कलस प्यठ भार
स्वभाव ज़ानुन श्रनुत्तर श्रार पार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥३॥

करनवोल छुक चऽः कऽम्य् छुई वुनमुन
थोमुत करित करनवऽऽल्य् कारुबार
नाहकऽः पाहकऽः पानस प्यठ ह्यवान छुक भार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥४॥

लछ कोशिश करतऽः सासऽबऽध कर विचार
बनि ती ई तस श्रासि बकार
तस रुऽस हिलिनऽः ज़ान्ह श्रक मुऽई श्रक गुभार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥५॥

करनस कर्म छुक चऽः बुउड जिमऽदार
कर्मऽ फल दिनऽः वोल पानऽः दातार
फल मऽशरित कर कर्म चऽः लगातार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥६॥

ये सदैवानुरागेण भवत्पादानुगामिनः
यत्र तत्र गता भोगांस्ते कांश्चिदुपभुञ्जते ॥१॥

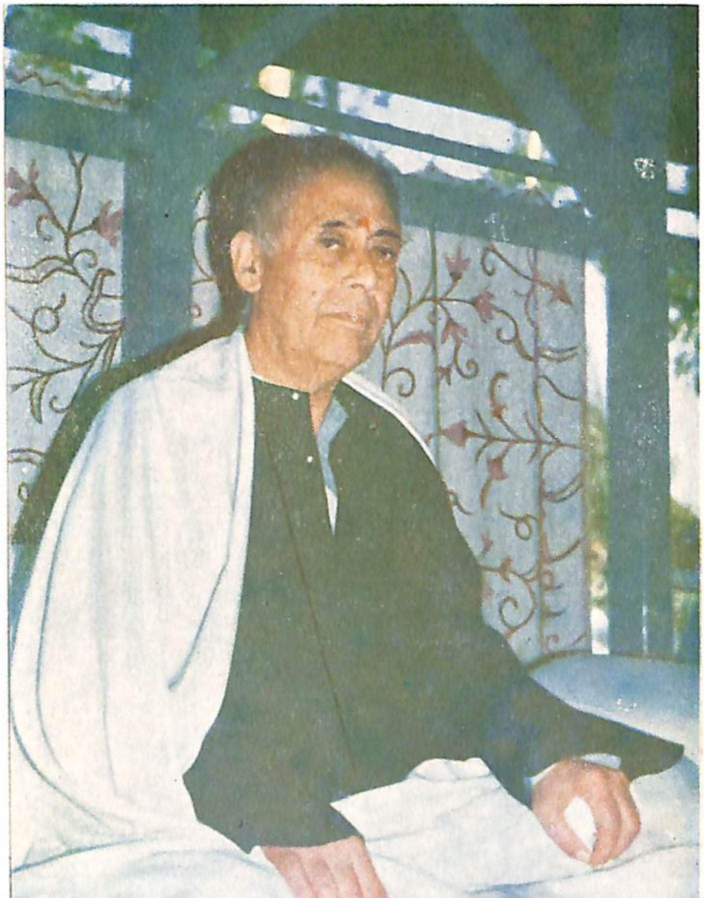

भक्ती त लोलऽः सान सदा त सर्वदा
प्रकाश व्यमर्श रूप चान्यन पद्यन
पतऽः पतऽ पकऽःवऽन्य् प्रथ दर्शायि मऽन्ज़
कुस्ताम आनन्द छि प्रावान नाथ ॥२॥

सम्सारस मऽन्ज़ रोज़ ख्यलऽ बत्रा:
प्रथ विज़ि सुऽरतऽ: प्रणव ओमकार
श्वासऽ: उश्वासऽ: सू हं सू उच्चार
मलऽ: नुई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥७॥

शरण रोज़ तऽस्य् नतऽ: छुक बेयार चऽ
द्यवऽ: पानय इयि: तस च्योन आर
करान रोज़् तऽस्य् योत दोह त रात जारऽ:पार
मलऽ: नऽई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥८॥

कर मऽ: आलुच ज़ान्ह रोज़् वुद हुश्यार
तमू गुण इनऽ:, च्ये: करी बेमार
रजूगुणऽ: सऽऽतिन तमू गुऽण चऽ: मार
मलऽ; नऽई त्यन चऽ: करु सन्हार ॥६॥

शुर्य् वऽऽच् बान्धब कान्ह यति छुनऽ: यार
मतऽलभऽ: की छी सऽऽरी यार
सऽऽत्य् कऽऽञ्सि नो गऽई धनऽ: द्यारऽ: अम्बार
मलऽ: नऽई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१०॥

घरि नेरनऽ: सऽऽत्य् कुन नो वातक
सन्यासऽ: मठ वुछ नोव कारुबार
लुऽत्य् पऽऽठ्य् पनऽनि: जायि कर सहज़ऽ विचार
मलऽ: नऽई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥११॥

गोर्य् बस्त्र छू अग्नुक निशानऽ: दार
यनि रुउस पलऽ:वस सुई रण्ग खार
दज़् लोलऽ: अन्दरी न्यबरऽ: कर छ्यतऽ: नार
मलऽ: नऽई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१२॥

पनऽ: नुई पान चऽ: सऽऽर्यं सऽऽर्य् ब्ययि चार
अहं योतनई वछ सारिकुई सार
दित थप अहमस गाल चऽ: अहंकार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१३॥

असलुक ब्योल वोव पज़रुक व्यवहार
अपिज़् सऽऽत्य् जेन मऽ: ज़ान्ह खुउट हार
वोनुई कऽम्य् खुउट छु जगतुक कारुबार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१४॥

मो त्राव मो त्राव मो त्राव आचार
अहं ति इदम ति शिव रूप व्यचार
पानऽ: सऽई व्ययि वन क्या: छु सुविचार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१५॥

सरतलि: प्यठ चऽ: मूलऽ: मायि मो खार
बनाव नारऽ: द्राव सुऽन पनुन आकार
फुकिनि सऽऽत्य् फुक्य् फुक्य् वछ छुक निराकार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१६॥

काम क्रूध नरकऽक्य् छीय बडऽ: बऽऽड्य् द्वार
लूभ मूह भ्यानक वुछ शाहमार
गालतक शत्र इम भवऽ: सरऽ: वुठ तार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१७॥

पनुन त परुद ज़ान्ह भ्युन भ्युन मो चार
विश्वरूप वछतन इ: सम्सार
समऽ: तवऽ: ह्यतऽ: गछि सन्तापुक नार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१८॥

अगर फल मेलिहे कऽऽमई करऽनस
लछऽ: वोल आसुन गोछ मजूरदार
दयि कृपायि सऽऽत्य भरनऽ: आव घरऽ: बार
मयऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥१६॥

बकारय इयिहे अचर त गाटऽजार
परनऽ: सऽऽत्य् लभऽहऽऽव भवऽ: सुरऽ: तार
गुऽरऽरूप शिवऽ: नाथई, दिवान नावि तार
मलऽ: नई त्यन चऽ: करु सम्हार ॥२०॥

ख्यवान प्रथ कान्ह छु नसीबुक आहार
पुऽछ् वछित क्याजि गोय बुथिस वुजऽजार
शुकर कर ह्यथ प्युई न गछ्न तसुन्द द्वार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥२१॥

अथऽः खोर अगर आव ज़ान्ह कऽऽन्सि बकार
जान गौ करुक तान्य् नखऽः वुथ भार
जनमन हऽन्ज़ि बऽन्दशि, इहोय छु मुऽकऽजार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सन्हार ॥२२॥

यहः लूक परिलूक स्युन छुनऽः आसान
द्वनऽःवय शिवऽः इच्छायि निरभार
युस यति खोश सु तति ति छु पार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥२३॥

धनऽः दौलत सम्पदा छिई दुऽखऽक्य् भार
पऽज्य् दौलत स्वात्मऽः साक्षात्कार
सन्तुऽष्ट रोजुन तम्युक निशानऽ दार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥२४॥

रातुक दोह गव इयि न दोबार
पगऽःहऽच्य् छा ख्बर आस्या वार
वऽनक्यनसई आत्मुक कर चऽः व्यचार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥२५॥

पत कुन करुत च्येः पुऽज़ अपुज़ कारुबार
वनि छु वक्त, गिन्द मऽ वुऽन्य् ज़ार
वऽन्क्यन साथ छुई सफरस गछ तयार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥२६॥

"दीनऽः" छुक करान चऽः, कथऽः इमऽः ज़ोरदार
अन्दरऽः पानसई पृछ् छुखऽ अथ तयार
लूकन तबावत क्याः करि बेमार
मलऽः नई त्र्यन चऽः करु सम्हार ॥२७॥

पञ्च महाभूत वृक्ष

आकाश = शब्द — क
वायू = शब्द + स्पर्श — ख
अग्नि = शब्द + स्पर्श + रूप — ग
जल = शब्द + स्पर्श + रूप + रस — र
पृथिवी = शब्द + स्पर्श + रूप + रस + गन्ध — म
... ... ...

भक्ति वृक्ष

शान्तभाव = निष्ठा — क
दास्य = निष्टा + सेवा — ख
सख्य = निष्टा + सेवा + असंकोच — ग
माधूर्य = निष्टा + सेवा + असंकोच + लालव — र
भक्ति = निष्टा + सेवा + असंकोच + लालव —
+ आत्मसर्मपण — म

क = बीज
ख = मूल
ग = तन्ना
र = शाख + पत्र
म = पुष्प तथा फल

और 'म' के हृदय में अनेक बीज रूप पूर्ण शान्ती।
"शमं कारणं उच्यते"

गाशऽः रूप पूर्ण
पानस मऽञ्ज़इ ठहऽरित पूर्णानन्द
यच्छा ज्ञान कृया
व्ययि सारी ज़गत शक्ती वोल शुद्धानन्द
न छिस व्यकल्प संकल्प
न माया गण्ड त ज्यनऽः मरनऽः निशि मुक्तानन्द
थऽदि खुऽतऽ थुउद
त श्ययित्रऽः तत्वन हुन्द ज़गत तऽस्य मऽन्ज बन्द
परमार्थसार १०-११

# श्री गुरस्तुती के अन्त पर दिये हुए श्लोकों का भावान्तर

ओमकार नाव यथ यथ अनाहत फुऽलान
कुन पुउज अछुर युस तीज़न तीज़ फुऽलान
शब्दऽ ज़गत सोरुई मऽन्ज़ रटित आसान
वऽऽतमत्यौ रुउट हृदि बति सुई पूज़ान ॥१॥

सिर्युंक चद्रमुक या अग्नुक प्रकाश
यथ न तल करित ह्यकान, युस तिमन गाश अनान
अन्दरिम अज्ञानऽः गटऽः झट छु गालान
चित प्रकाश बडि वुउड बति सुई पूज़ान ॥२॥

यथ कऽटऽः बहसऽः फऽहऽर ज्यौ ज़ान्ह न लभान
पननि अनुभवऽः योत युस अथि छु इवान
विकल्पन हुन्द वदुर रुग युस छु गालान
दयि सुन्द थुउद प्रकाश बति सुई पूज़ान ॥३॥

पम्पोशऽः आसन ब्रह्मा जीयस
चरणऽः पम्पोश लुउग लोलऽः सान पूजऽःनस
नाभि पम्पोश द्राव नारायनस
नेत्रऽः पम्पोश तऽम्य् पूजायि लऽऽग्य्नस

सिर्यि भगवान युस यार पम्पोशस
ताजि ज़ऽचऽ: लाजिनस पाद पऽऽरावनस
(ग्रादि प्रभातन ग्राव दर्शनस)
तऽस्य् शिव नाथस ऐश्वर्यि: रूपस
पादि पम्पोशस पान पुशरावस ।।४।।

ग्रगर छुक हर पाप शाप सऽऽन्य् जल हर
छुखय भव भवऽ: सरऽ: मऽन्ज़य नेर नुउन न्यबर
छुखऽ: शिव करतऽ ग्रसि पूरऽ: पऽऽठिन रचर
दुऽख त दऽऽद्य् सऽऽन्य् गाल छुक ग्रगर शंकर ।५।

डेकि चन्द्रमऽसई प्यमऽहऽऽ ब परण
हीमालऽ: सऽन्ज़ि कोरि रटऽ: हऽऽ बऽ चरण
द्वनऽ: वऽन्य ब्ययि ब्ययि ज़ारऽ: पारऽ: छुस करन
तिमौ भ्यन किथऽ: लाभऽ: कोनि केन्ह बऽ शरन।६।

प्रुछ् म्ये: पानस वनतऽ: कुस छुम पुउज़ यार
टुखऽ: तीरौ गोम हृदयस पुच़ऽ:पार
चन्द्रमऽ: सऽऽत्य् गुन्डमृत यऽम्य् जटऽ: भार
गछ़ शरण शरणागतस तऽस्य् बारबार ।।७।।

रामऽ: नामऽ: ज़पलस कति भयि खोफ ति
सन्ताप गालऽ:नस बडि बुउड छु तीर इ:
वछतऽ: मालि म्यानि बिज़ि नारुक इ थम ति
पोन्य् ज़न शीतल बन्यौ किथऽ: कऽन्य् इ:।।८।।

सुन्दर शरीरस ग्रलौक्यक व्यसतार
सुऽनऽ: सुन्द कोह ज़न ज़ोतान शूभिदार
पारि ज़ातऽ: कुलिसई तल तस घरऽ: बार
(श्रीरामऽ: चरणन तल तस घरऽ:बार)
वावऽ: लूकऽपालऽ: पुऽत्रस कर नम्सकार।।९।।

यति यति रामऽ: नावऽ: जयकारऽ: कीर्तन
तति डयकऽ: नुउमरित गुल्य् ज़ऽ: गऽण्डथन
लोलऽ: ग्रशि सऽऽतिन चशमऽ: ज़ऽ: भरिथन
हऽऽज़िर राक्षिसन गालऽ:वुन हनूमन ।।१०।।

पऽऽन्य् पानय ग्रगर प्योस, बऽ: वसित वुऽन
तोति वऽऽज़ऽव न दयि दास च़ऽ: त्रावहन
ग्रोन दान्द ग्रगर ज़ान्ह डेम्बस छु फटन
दयावान लूक तस खारऽनि छि गछ़न ।।११।।

यऽच्य् कऽऽल प्रऽऽव म्ये: मनषि ज़न्मऽच्य् इ: नाव
करऽ:नऽऽव्य् च़ऽ: प्रभू ग्रारई यस स्वभाव
भवऽ:सरऽ: तरऽनस यस युथ च्योन नाव
सुई बऽ: ग्रगर फटऽ: करन कस खन्दऽ: क्राव ।।१२।।

महीश्वर ग्रऽऽस्य्तन जगत ईश्वर सू
जनार्धन वनतस ज़गतात्मा छू
तिमन मऽन्ज़ ज़ोन्मृत नऽ ग्रक मुऽई म्येऽ भ्यन्न छू
तोति नोकरी मऽज़ऽ: शिवऽ: नाथऽनि छू ।।१३।।

खोवऽर्य् सीता ब्रोण्ठऽ: कनि हनुमान
पतऽ: कनि रूज़ित श्रीं लक्ष्मन
ईषानऽ: वांयु कूनऽ: गजगाह छि करान
भरत जी पानय ब्ययि शत्रुहन
चोरि कूनऽ: सुगरीव व्यभीशन युवराज
तारा सन्तान सऽऽत्य् जाम्बवन
मऽन्ज़ बाग कोमल ज़चऽ: छ़टऽ: त्रावान
शामऽ: रण्गऽ: श्रीराम मनऽ: भजतन ।।१४।।

हतय मऽऽज्य कति छ्य: ग्रलग केन्ह तोऽता चऽऽन्य्
सऽऽरी शबद इम छि ग्रंग ग्रंग त तन चऽऽन्य्
मनस मऽन्ज़ या न्यबर यति कुनि केन्ह छु
मिलऽ नावान म्ये: च्यई सऽऽतिन फुलय च़ऽऽन्य् १५
चीनित म्ये: ई यऽथ्य् ज़गतस ग्रन्दर ज़ाम
केन्ह करनऽ: रुस्तुई ख्यन ख्यन शहरु गाम
तोता ज़पऽ: पूज़ायि रुउस न केन्ह लभनऽ: ग्राम
रची चऽई छ्यक दिवान सारिनई दुऽखन दाम १६

कम ज्यादऽ: छोन त हुर ज़ोनुम न ज़ोनुम
पुउत ओन्ह त ओन्ह पथ युथ त्युथ स्ये: करुम
पूरऽ. व्यज़ पूर्वक केन्ह करुम न करुम
डजि मऽचि़ अकिल सऽऽत्य् क्या: वनुम न वनुम
दास ओरुत कम अकिल वोल छुस बऽ,
दयो वान करुनासागर छुक वनुम
प्रथ कथि तुऽतायि मऽन्ज़ च्यई व्ययि व्ययि वनुम
छुस नऽ बऽ दुऽखन हुन्द केन्ह बानऽ: ती वनुम
अदऽ: यथ सऽऽरिसई ही "दीनऽदयाल"
(अदऽ: यथ सऽऽरिसई ही स्यानि स्वामी
अदऽ: यथ सऽऽरिसई ही स्यानि भगवान
अनऽ: यथ सऽऽरिसई ही जगत अम्बा)
दया कर क्षमा कर दयालू च्ये: वनुम ।।१७।।

(कुछ और श्लोक)

गाश इनऽ: प्यठऽ: अनिगटऽ: गछनस ताम
अनि गटि प्यठऽ: व्ययि गाशस ताम
इ: केन्छा करऽ: हीं ज़गत अम्बा
बनितन चऽऽनी पूज़ा सुबऽ: शाम ।।१८।।

त्यन लूकन हऽन्दि ज़ुवऽ: राजि स्यनिये
श्री सुन्दऽर्ये पादन बऽ लगऽये
चानी हुक्मऽ: च्योन ध्यानः करिथई
सम्सारऽ: यात्रा वुऽन्य बऽ: करऽये ।।१९।।

सम्सारऽ: कारुबार वोथुस ब करऽने
चानी हुक्मऽ: ही त्रपोरऽ: सुन्दरी
अजरवुन नकऽहत क्रूध मगरूरी
भयि मतऽ: छिह तन स्ये: स्यऽऽज्य् स्यऽऽजी ।।२०।।

ज़ानऽनऽ: धर्म, केन्छा करुन बऽ:
जानऽनऽ: अधर्म केन्ह न करुन बऽ:
हृदयस मऽन्ज़ रूजि़त चऽ: भगवानऽ छुक
करान छुस ती इ: करऽ: नावान छुक।।२१।।

अक कथ मण्गऽहऽऽय व्यथि व्ययि भगवन
बोज़तम इ: ज़ार पारऽ: बोज़तम भगवन
यति आसऽ: तति आसऽ: इथऽ: आसऽ: तिथऽ: बऽ:
ह्यस स्पे: रोज़तन चौनुई भगवन ।।२२।।

# मैं (अहं)

तू तू मैं मैं मैं ने तू ने
तेरा मेरा छोड दे तू
तू ही मैं, मैं ही तू,
मैं ही मैं, तौ है तू ।।१।।

जग में क्या पाया तू
खुद हीं खुद को खोया तू
खुद ही खुद को पाले तू
मैं ही मैं तौ है तू ।।२।।

जितना बाहिर देखे तू
उतना खुद को खोए तू
अन्दर ताक जो है तू
मैं ही मैं तौ है तू ।।३।।

किस शक में है ठहरा तू
सुन सुन कर है बहरा तू
जो कुछ है तू ही तू
मैं ही मैं तौ है तू ।।४।।

जाने तू कर ले तू
ढंन्डे क्या पाये तू
जैसा है वैसा तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥५॥

काया नहीं न माया तू
भंवरा तू दीपक तू
जल कर सीखे जीना तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥६॥

जग में जोकुछ होता तू
होना होता है क्या तू
कर कर के नाकर तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥७॥

घर टबर न धन देह तू
कैसे जाना वह है तू
वह नही तू शिव है तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥८॥

जो यह परदा हटाले तू
दया दृष्टि पाए तू
सब है तू जाने तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥९॥

अपने गुरु को शिव जान तू
चरन उनके पहचान तू
सब कुछ ज्ञान अज्ञान तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥१०॥

किस ने जाना क्या है तू
खुद को माना क्या है तू
"दीना" जान अनजान है तू
मैं ही मैं तौ है तू ॥११॥

# मन

व्यचारऽ क्यौ लछऽल्यौ डुवी डुवीं अथ मनस
पानऽः अछ़ पऽऽन्य् पानऽः अन्दर अथ मनस
न्यब्रऽः खुरय् कान्गर आमऽच़ अथ मनस
पानऽः अछ़ पऽऽन्य् पानऽः अन्दर अथ मनस ॥१॥

करुण साफ सऽऽरी मल छ़ऽन कडिथ न्यबर
शक्ती पनऽन्य् लाग अऽथ्य् कुन च़ऽः अछ़ अन्दर
मल त पान यकज्राह न रोज़ान मऽन्ज़ मनस
पानऽ. अछ़ पऽऽन्य् पानऽः अन्दर अथ मनस ॥२॥

छु साफ न्यर्मल इ मन क्याजि भोरथस च़ेः मल
छ़निथ ओन्खरि जोन्खुर कोरथन इः न्यबंल
कंडित सोरुई अति हाय तुल अथ मनस
पानऽः अछ़ पऽऽन्य् पानऽः अन्दर अथ मनस ॥३॥

मनऽः रूप स्वमनऽः काक थवुन अन्दर मनस
गौ राम "राम जी" खोत यलि अथ वनस
"स्वरूपि ईश्वर" 'मऽहताब" गाश अथ मनस
पानऽः अछ़ पऽऽन्य् पानऽः अन्दर अथ मनस ॥४॥

इथुई मन इ क्याजि लोगथन लूकऽः कारस
लूकऽः कारन ओन बुजर लोकऽचारस
लोकऽचार वऽऽज़गार गौ फरित अथ मनस
पानऽः अछ़ पऽऽन्य् पानऽः अन्दर अथ मनस ॥५॥

लूकऽ कार ति सोरई मान च़ऽ दयि कार
दयि कारस रोजुन छु शुकुर गुज़ार
करिथ शिखुर दयि नाव थौ मऽन्ज़ अथ मनस
पानऽः अछ़ पऽऽन्य पानऽः अन्दर अथ मनस ॥६॥

शिखऽरिस ति इनऽ: ज़ान्ह वाति ब्रोर या काव
रोज़ ज़ागि कर मऽ: ज्यवि सऽऽतिन टाव टाव
करिथ छोपऽ: पानऽ: वृच् गालक अथ मनस
पानऽ अछ् पऽऽन्य् पानऽ अन्दर अथ मनस ।।७।।

वैराग त अभ्यास वथ छि वृच् गालऽ: नऽच्य्
शमऽ दमऽ पौशौ माल इ: मालऽनऽच्य्
गुऽरऽ: भक्ती यऽऽच् मुक्ती अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।८।।

सानि वति तर्क ति अंग छु यूगुक
व्यचारई गौ तर्क तरक कर भूगुक
भूगऽ: वैरागऽ: फुऽलि व्यूग मऽन्ज़ अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।९।।

श्रीचक्रुक व्यूग अति चऽ: चमकाव
त्रपोरऽ: सुऽन्दरी सोई पानय नज़र त्राव
बनिथ शिव गछ् लय तऽस्य् मऽन्ज़ मऽन्ज़ मनस
पानऽ: पछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१०।।

द्वई कास चऽ: त बऽ: यकदम मशराव
अहमई जगत ति बऽ: ति घनिराव
दोन सुम्ब जाय छ्यनऽ: कुनि वति अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।११।।

मनऽ: क्यौ कनौ वौज़ अदऽ: बोजख चऽ नाद
नादऽ: सऽऽतिन गछी मन पूरऽ: पऽऽठय शाद
शाद मरगी इनऽ: गछि ज़ान्ह ति अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१२।।

वटक अछ्य् अचऽ:नय अथ बडऽ: बऽडय् चूर
तिमौ कोरमुत बडयन बलऽ:वीरन सूर
अऽछ्य् वछ्ऽ गाशि रछऽ: वथ वन्द अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१३।।

चांचल स्वभाव छुस फीर्तन त थूर्तन
युत गछि तुउत गछुस ह्यथ दयि सुमरन
शिवऽ: संकल्पऽ: वगि लगि पकनि स्यज़ऽरस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१४।।

मन वन मनई छुक मनसई मऽन्ज़ रोज़
जेडुन छु छेडुन छुउटराव म्योन बोज़
सोम बन सई सुम दिथ पानऽ: अछ् मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अछ्य मनस ।।१५।।

शयित्रऽ: वय त्वत मनस् मऽन्ज़ गऽन्ज़राव
आरोह त औरोह तमिकुई अन्ज़राव
स औ त आ: बीज़ खन मऽन्ज़ अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१६।।

गुऽरऽ: उपदीशऽ लोलऽ: सगः ब्योल फुऽलराव
अहमऽ कुलिस अदऽ: ह्यलिसई गछि क्राव
पानई ब्योल पानई खल मऽन्ज़ अथ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१६।।

पानऽ: मन छु अन्दर रोज़ान चऽ: न्यबर
अहमुक व्यमर्श बन सुई अचुन गौ अन्दर
सुई व्यमर्श निरन्तर रोजुन छु मऽन्ज़ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१७।।

अहमुक व्यमर्श छुनऽ कुनि कोह केन्ह फिरुन
इ: करौ ज़ानौ तथ मऽण्ज़ बऽ: वुछुन
सम्बन्द सावधान यूगियस छु मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।१९।।

सम्बन्द सावधान क्या गौ आसुन
ज़ोनमुत त ज़ानुन पानस मिलऽ: वुन
तिमन गछि गछुन कुन हर दम मऽन्ज़ मनस
पानऽ: अछ् पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ।।२०।।

सृष्ट थ्यत सम्हार हर वक्तऽ: बनान
नोव नोव दमऽ दमऽ: शिव सु पानऽ: आसान
ती ज़ानुन अनुग्रह आसान मनस
पानऽ: अछ़ पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ॥२१॥

ह्यस रोज़ि नऽ: सृष्टी चक्र वुछनुक
आदत बनि अह् याद नऽ: थवनुक
निग्रह सुई गव रऽछतन दय मनस
पानऽ: अछ़ पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ॥२२॥

अनुग्रह तऽ: निग्रह द्वनऽ:वय छु पानऽ: दय
यस युथ बानऽ: ज़ानि: तस त्युथ दियि वय
अक शरण रोजुन दयस मंगतऽ: मनस
पानऽ: अछ़ पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ॥२३॥

शरणागती छय बोड ह्यू अनुग्रह
न्यबऽ: अन्दरऽ: पानस "दीनस" लोलऽ: रेह
सुऽई वऽऽनी त कर्मऽ: किन अऽऽसतन मनस
पानऽ: अछ़ पऽऽन्य् पानऽ: अन्दर अथ मनस ॥२४॥

## रऽऽज्ञऽऽय शरिकऽऽय

(पृष्ठ ४० पर लिखे हुए भजन का रूपान्तर)
भगवान गुरु देव के उस भजन में कान्क्षा का बीज होने के आरोप पर यह रूपान्तर पूर्ण शैव दृष्टी के आधार पर लिखा गया

रऽऽज्ञऽऽय शारिकऽऽय ज़ालऽऽय बालऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ॥१॥

यथ सम्सारस छुनऽ: अन्द वोन्त केन्ह
बोठ अपारि यपारि कऽम्य कर ज़ोन केन्ह
अथ केन्ह आसान चानि खतऽ खालऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ॥२॥

सासऽ: बऽद्य् च्ये नाव छी क्रोरऽ: बद्य् बोथ्य्
भामऽ: मान सोरुई चऽऽनी बोथ्य्
सोरुई केन्ह प्रकट चऽऽनी मालऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽ ॥३॥

रोशन छि च्यई प्यठ सऽऽरी हाल इम
चऽई छयक पानऽई रऽत्य् नाकारऽ: तिम
मोहऽ: अनिरुक म्ये: अजऽबई छु ज़ालऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ॥४॥

फेरान छयक चई अन्द्य् अन्द्य् पानस
पानऽ: चई फेरान अन्द्य् अन्द्य् नागस
फीर फीर रोशन चऽऽनी कारऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ॥५॥

सम्सार कऽम्य् वुउन छू जन्भाला
पनऽ: नुई करुन पानस बन्द ज़ाला
माया त तऽम्य्सऽन्द्य् पान्च इम लालऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ॥६॥

आसि किथऽ: जन्भाल केन्ह इ: सम्सार
चऽई करन बाज्यन सऽऽरी इम कार
क्याज़ि ह्यमऽ प्यठ बऽ: पानस भारऽऽथ
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भाऽऽय ॥७॥

पोज़ छु छुम न गोमुत केन्ह बिल्कुल
ह्यस त सुमरत कोनऽ: ती फोल म्ये: पोशऽ:कुल
याद थावतम त याद पावतम पानऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भाऽऽय ॥८॥

सम्सारस मऽन्ज़ छा कोनि कान्ह केन्ह
युस न चऽई प्रकाश चऽई पानय तीज़
ह्यसऽ: सान दितुथम ती अनुभावऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ॥९॥

नवि नवि दर्शनऽ: नोन नोव नोव रूप
ज़ोतऽ: वुन बदलऽ:वुन चोन रंग त स्वरूप
होवुत च्येः दीनस दित पनुन खयालऽऽय
चोनुई स्वरूप सम्सारऽ: जन्भालऽऽय ।।१०।।

१६७३

# हे प्रभू हे शम्भू

हे प्रभू हे शम्भू दींनऽदयाल
चठ चऽ: म्यऽऽन्य् संकट कर म्ये: रक्षपाल ।।१।।

ज़िन्दगी बनेयम पूरऽ:पऽऽठय् वबाल
छिम कर्म पनऽ: नी छुम न केन्ह मलाल
वनऽ: कस च्ये: वरऽऽय हाल ही कृपाल
चठ चऽ: म्यऽऽन्य् संकट कर म्ये: रक्षपाल ।।२।।

यार दोस्त भऽऽई बन्ध बनान पनुन हाल
शूर्यं् बऽऽच जुर्यं् पुतर्यं् पकाम नवई छि चाल
मऽन्ज भाग ह्यनऽ: आस गोस बऽ: निढाल
चठ चऽ: म्ऽऽन्य् संकट कर म्ये: रक्षपाल ।।३।।

मोहऽ मायायि हऽन्ज़ऽ: रज़ऽ: क्या: कमाल
ज़ऽऽन्य् ज़ऽऽन्य् पनुन पान मशान असल माल
क्या: थौ तऽ: प्रथ विज़ि: याद म्ये: बहाल
चठ चऽ: म्यऽऽन्य् सकट कर म्ये: रक्षपाल ।।४।।

वति प्यठ बेखबर छुस बऽ: कम खयाल
किथऽ: फेरऽ: पोत किथऽ: गछऽ: ब्रोंन्ह जदाल
अक च्यऽऽन्य् आशा तवय न केन्ह ज़वाल
चठ चऽ: म्यऽऽन्य् संकट कर म्ये: रक्षहाल ।।५।।

पकऽ: ब्रोंह बुथि छि व्यगण तय सवाल
फेरऽ: पोत छिम वछान कर्म दजाल
यति: थऽई छुस तती कर म्ये: वोन्य् निहाल
चठ चऽ: म्यऽऽन्य् संकट कर म्ये: रक्षपाल ।।६।।

द्यु तऽ: थम म्ये: वतऽ: हावुक च्ये: बाकमाल
बानऽ: औसुम नऽ: तोग न म्ये: करुन सम्बाल
द्वनऽ: वय कुनी छिवऽ: कर्यन दीनऽ: पार
चठ चऽ: म्यऽऽन्य् संकट कर म्ये: रक्षपाल ।७।

# ह्यस

सत्गुऽर बनान कन थव वनऽनस
दमऽ: दमऽ: वारऽ: पऽऽठय् थव ह्यस ह्यसस ।।१।।

ह्यस तय होश छुई थोद खारवुन ति
मऽशरक ज़गतस मऽन्ज छु फटुन ति
यादाश्त बनाव मशःनस मशनस
दमऽ: दमऽ: वारऽ: पऽऽटय् थव ह्यस ह्यसस ।।२।।

दमऽ: दमऽ: वछतन अहमई पाना:
दमऽ: दमऽ: वुछ सुई पानऽ: भगवानः
होशऽ पम्पोश लाग ह्यसऽ: भगवानस
दमऽ:दमऽ: वारऽ. पऽऽठय् थव ह्यस ह्यसस ।।३।।

पऽऽर्यं् पऽऽर्यं् लगऽ हऽऽ तऽम्यसऽन्दिस वनऽनस
यऽऽर्यं् यऽऽर्यं् योरनम गरीब बेचारस
फीर्यं् फीर्यं् दितुनम ह्यस बे ह्यसस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय् थव ह्यस ह्यसस ।।४।।

गोडऽ:नयथ ह्यस गछि करऽनुई कथऽनई
वाकईश्वरी हुन्द रूप मऽज कथऽनइ
नाहकऽ: कथौ सऽऽत्य् रावान छु ह्यस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय् थव ह्यस ह्यसस ।।५।।

ह्यस थव कतिनस फेरान दम छुई
ह्यस थव किथऽ कऽन्य् अचान नेरान छुई
मावसि मऽन्ज म्युल सिर्यस त चन्दरस
दमऽ: दमऽ: वारऽ: पऽऽठय् थव ह्यस ह्यसस ।६।।

ह्यसऽ: किन वुछतन वारऽ: पऽऽठय् आनन्द
गुऽडऽ:नी तति नस छू निजानन्द
तस सऽऽत्य जान कर रातस तऽ दोहस
दमऽ.दमऽ: वारऽ: पऽऽठय् कर ह्यस ह्यसस ।।७।।

सीवा कर वारऽ: निजानन्दस
मेवा दावी ह्यसऽ: अमृतऽ: रस
वातऽनावी सुई निरानन्दस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय् कर ह्यस ह्यसस।।८।।

प्रेमऽ: मऽई च्यई च्यई बन पूरऽ: बाह्यस
भक्ती रसऽ: सऽऽत्य अथि इयी ह्यस
लोलऽ: मयि रुउस छ्यनऽ: तति केन्ह खसऽ: वस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यसस ।।९।।

मऽस्ती अतिनऽच रोज़तन मूजूद
तऽथ्य् मऽन्ज़ आसान सोरुई वजूद
तऽथ्य् मऽस्ती मऽन्ज़ रोज़ुन गछि ह्यस
दमऽ.दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यासस ।।१०।।

गुऽरु दीव पनऽ:नुई छुई वतऽ:ऽ हावुक
अन्द्रयुम लोल गछि आसुन भावुक
चठ न्यन्द्रिम भाव पानऽ: बऽऽडरित ह्यस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यासस ।।११।।

अति ओर वनुन कस छु ताकत
हरकति मऽन्ज़ छय बऽड तति ब्ररकत
गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया शिव कृपा ब्रस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यसस ।।१२।।

इदमई अहं छु भास तीं ज़ान्तस
तस म्युन छुनऽ: केन्ह मनऽ: किन मान्तस
मानुन छु ज़ानुन अगर आस्यस ह्यस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यसस ।।१३।।

परानन्द ब्रह्मानन्द महानन्द चिदानन्द
समाधि जान्तन चऽ: जगतानन्द
सत आनन्द नाव सूहमऽ: सारस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यसस ।।१४।।

दीनऽ: रोज़ शरण गुऽरऽ: आनन्दस
ह्यस दित सुई चावि सतऽ: वय रस
लोलऽ: सऽऽत्य परज़ऽ: नावऽनानी अहमस
दमऽ दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यसस ।।१५।।

पूरऽ: आवनऽ: वनऽ: नऽ: क्या छु आनन्द
निरानन्दऽ ह्यु र क्युथ ह्यू छु आनन्द
तेलि वनि यलि अनुभव, "दीनऽ" करि ह्यस
दमऽ:दमऽ: वारऽ: पऽऽठय कर ह्यस ह्यसस ।।१६।।

## श्री कृष्णऽ प्यारे मुरली मनोहर

म्यन छुनऽ: बृह्मा विष्ण या महीश्वर
श्री कृष्णऽ: प्यारे मरली मुनोहर ।।१।।

परुना सोरुना ध्यान तप धारना
मलिनिस मनस कावस सज़ साबना
शुद्ध मन दित भावई म्ये: स्यद्ध कर
श्री कृष्णऽ प्यारे मुरली मनोहर ।।२।।

मूक्षि बोछा कर्मऽ: फऽऽन्स्य चटऽनऽ: बापस
पादन लोलऽ: सान हृदि मऽन्ज़ जाय कर
तुज्य् यन्द्रे यि प्राणऽ: मनऽ: ज्यवि किन पर
श्री कृष्णऽ प्यारे मुरली मनीहर ।।३ ।

देवी अनुग्रह शक्ती किन पानऽ:
पानस मऽन्ज़ पान सृष्ट थ्यत लय कर
न्यर्मल सु स्वरुप ज़ान्यस कर नर
श्री कृष्णऽ प्यारे मुरली मनोहर ।।४।।

पज़ि मनऽ: मुनियौ कऽऽचि वति यूगियौ
पाद चऽऽन्य् पूज़ी घरि घरि भऽक्तयौ
बऽ: त चऽ: "दीनस" जल जल वुऽन्य् हर
श्री कृष्णऽ प्यारे मुरली मनोहर ।।५।।

## शाहऽ पूज़ा

पानय पानस करु पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।१।।

पूजऽऽर चऽई छुख इष्टऽ दीव चऽई
पूजा अर्ग पोश धूप दीप चऽई
जिन्दऽ: मर रिन्दः बन करु पूजा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।२।।

न्यबरऽ: अछ़ अन्दर कुन छाव पम्पोश
पनऽ: नुई होश कर सुबह शाम नोश
गोशन मऽन्ज बेह करु पूजा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।३।।

पानय पानस वछ़ वया: मज़ऽ:
मल गाल यकदम चट चऽ: रज़ऽ:
स्वतन्त्र शक्तियि करु पूजा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।४।।

गोन्द छुई सासऽ: बर्गऽ: दार पम्पोश
पृथवी व्यूग छुई छुई अगर होश
शऽऽही नाबद पनऽन्य् पूजा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।५।।

केन्हनऽ अऽऽसित छुख सोरुई केन्ह
वुद रोज़ अख सात ज़ान्ह मऽ: बेह
न्येन्दरि मऽन्ज हुश्यार बऽड पूजा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।६।।

यथ नऽ केन्ह जवाब तीं छुख चऽ:
नऽ गुना: न सवाब ती छुख चऽ:
ज़ान कर पानस सऽऽत्य पूजा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।७।।

हावऽन इ ओब्नगजि सऽऽत्य् ति छु माया
छुक न चऽ: धन द्यार गुयं काय।
निरविकल्प विश्वरूप करु पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ।।८।।

आछ्य् प्यठऽ: अनि गटऽ: तुल जलजल
मोह माया ति च पानय छल
ह्यस कर ह्यसऽ: सई करु पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ।।९।।

वनऽ:नौ सऽऽतिन बनि नो केन्ह
अन्दरऽ: न्यबरऽ: आसऽन्य् गछि ज़ोश रेह
तोरऽ किस आलवस करु पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूजा ।।१०।।

पूज़ा छयई तोरऽ: कुई आलव
सतगुऽरऽ: चरणन पान आलौ
तिमऽई ज्ञान त क्रया छी पूजा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ।।११।।

ई छु मन्त्र, ती छुख चऽ:
मन थ्यर अऽऽसथई बे खबर चऽ:
करनी छ्यनऽ: कुनि केन्ह पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ।।१२।।

बनऽ: नी बन्योमुत छु अऽऽसथई
दयि कार कऽम्य कुउर जोव अऽऽसथई
म्येई कुउर फऽऽतिरन रऽन्ज़ पूजा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥१३॥

पनऽःनुई पान क्याज़ि सारिनई टोठ
यऽम्य ती ज़ोन सुई तुउर भवऽ: सरऽ: ब्रोन्ठ
सऽई ज़ान ज़ान छय स्यद्ध पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥१४॥

यमऽ: नेयमऽ: चुऽगऽ: यलि आस्यस नऽऽल्य्
दयि सऽन्दि घरि, जान्ह नेरिनऽ: खऽऽल्य्
शक्ती जय माल करय्स पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥१५॥

मनषऽ: मुउर प्रावुन छा मखोल
सहज़ऽ: व्यचऽऽरित गण्ड चऽ: खोल
ध्यान धारना अदऽ: बनि पूजा
शाह छुक शाहस करु पूज़ा ॥१६॥

मौ रावऽराव वऽन्क्यन इ: सात
रात गव पगऽ:हऽच्य् छा खबर बात
दमऽ: दमऽ: द्वादशान्त रठ पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥१७॥

शऽऽही पनऽन्य् क्याज़ि मशऽरऽऽवऽथ
कमज़ात गदऽऽई तनय प्रऽऽवऽथ
याद पाव छुख शाह बन पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥१८॥

वोनऽमय पोज़ म्ये: छुख चऽ: शाह
शाह गऽण्डित छुख शाहनशाह
करऽन्य् अगर तगी शाहऽ पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥१९॥

शयित्रहऽन अोण्गलन मऽन्ज़ बाग नछ
गुराह गण्ड तथ कर अन्दर अछ
गोडनिकि ब्रोन्ठई करु पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥२०॥

अऽथ्य् मऽन्ज़ गऽन्ज़राव कति छु काल
अकि चिहि प्यठऽ: अबदऽ:बऽद्य् इम साल
अकऽ:बुह सास शेह हत पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥२१॥

पानऽ: सई अथि छय सऽऽरई माल
फलि फिल फिर फिर दारुस नाल
शयित्रऽ अरदाह त हत पूजा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥२२॥

"दीनऽ:" दयालऽ: वन्यौ म्ये: दयाल
सत्गुऽरन दितुनम पनऽ: नुई ख्याल
ती म्ये: अऽऽसथई छे: पूज़ा
शाह छुख शाहस करु पूज़ा ॥२३॥

## छु कत क्युत

सत्गुऽरऽ: पादन तल नऽ कलऽ: थौवमुत
छु कथ क्युत छु कथ क्युत छु कथ क्युत छु कथ क्युत ॥१॥

सत्गुऽरऽ चरनन कुन न मन लुउगमुत
छु कथ क्युत छु कथ क्युत छु कथ क्युत छु कथ क्युत ॥२॥

पनुन पान पूरऽ: पऽऽठय तस न पुशरोवमुत
छु कथ क्युत छु कथ क्युत छु कथ क्युत छु कथ क्युत ॥३॥

# प्रणाम करान

कऽर्यं कऽर्यं न असि तसला इवान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥१॥
सुबहन छि असऽस्य् प्रणाम करान
शामन छि असऽस्य् प्रणाम करान
दोह रात असऽस्य् प्रणाम करान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥२॥

बिहित छि असऽस्य् प्रणाम करान
पकऽवुन ति छिन सू तग्ग करान
तोति सत्गुऽर न असि केन्ह वनान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥३॥

सत्गुऽर सोन कोताह छु जान
लोल माय कऽऽचाह असि बरान
स्वात्मुक नवीदा क्या: दिवान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥४॥

मनऽ: किन छि असऽस्य् प्रणाम करान
तनऽ: किन छि असऽस्य् प्रणाम करान
पुउज़ धनऽ: छु सुई असि बऽऽगरान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥५॥

दर्शुन यलि असि सु दिवान
आनन्दस मऽन्ज़ असऽस्य् गछान
बेबायि असऽस्य् प्रणाम करान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥६॥

शक्ती छु असि सुई दिवान
नाव तऽस्य्सुन्दुई मुऽक्ती दिवान
दूरि असऽसित ति नऽज़दीक अनान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥७॥

ई मण्गोस ती छु: दिवान
मऽण्ग्य् मऽण्ग्य् छिनऽ: असऽस्य् मन्दछान
भगवान सोन सुई, सुई सोन जान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥८॥

"दीनऽ:" वुछुथ सुलि कर श्नान ध्यान
सत्गुऽरऽ: ख्राब छय सनिदान
तऽथ्य् नम सुऽई ज़ान भगवान
प्रणाम करान प्रणाम करान ॥९॥

# सत्गुऽरऽ: दया

जन्म दिन १९७४

अज छुस खुऽश बऽ अज़ छुस व फुऽलान
दया सत्गुऽर अज़ पानय स्ये: करान ॥१॥

ज़न्मऽ ज़न्मन हुन्द मल मये: प्यठ खसान
क्या: वनऽ: कऽऽति कालऽ प्यठऽ: तथ मऽन्ज़ फटान
गाशि लऽई अख मुऽई वुऽन्य् छुस बऽ: वछान
दया सत्गुऽर अज़ पानय स्ये: करान ॥२॥

छुस न कुनि लायक यथ फखऽर बऽ करान
कुस कर्म कुउर स्ये: युथ बऽ केन्ह लय्यान
यमी ज़न्मऽ मुऽकऽलनऽच्य् तोति आशा करान
दया सत्गुऽर अज़ पानय स्ये: करान ॥३॥

योरऽवय् नाद स्यऽऽन्य् कर तोर वातान
आरऽ: क्रुन्द छुस बऽ: आरऽ: भुऽर छान्डान
तस तोरय स्योन आर अज़ छु इवान
दया सत्गुऽर अज़ पानय स्ये: करान ॥४॥

ज़ानान छुस नऽ केन्ह नः छुस केन्ह करान
लुऽकऽःचार जवऽऽनी बुजर आय मुऽकलान
तऽम्य्सऽन्ज़ी दयायि किन तऽस्य् बः प्रारान
दया सत्गुऽर अज़ पानय म्येः करान ।।५।।

कऽऽत्याः तऽर्य तऽम्य् कऽऽत्यन छु तारान
लुऽकऽःचारऽः प्यठऽः नाव तारऽन्य् छु ज़ानान
गुऽब नाव विजि वाव नम सुई छुम रटान
दया सत्गुऽर अज़ पानय म्येः करान ।।६।।

''दीन'' छुस बऽ तऽम्य्सुन्दुई नाव अख ज़ानान
तऽम्य्सऽन्दी भरूसऽः नाव यलऽः बऽः आवान
नज़रि तऽम्य्सऽन्ज़ि सऽऽत्य् अपोर ब वातान
दया सत्गुऽर अज़ पानय म्येः करान ।।७।।

## बुउड उत्सव

(जन्म दिन १९७५)

अज़ छु बुउड उत्सव सत्गुऽरऽः जन्म दिन
श्रद्धायि सान करव साष्टाङ्ग प्रणाम ।।१।।

सुई छु म्येः सोरुई व्यमर्श प्रकाश
अर्पन कुउरमस पनुन पान ताम ।।२।।

प्रभातऽच इ पूज़ा क्या सुऽन्दर दर्शुन
वुछ म्येः अऽथ्य् मऽन्ज़ जगतुक परिणाम ।।३।।

शिवऽः सुन्द स्वरुपऽः ईश्वर स्वरुप जी
समाद्ध व्यथान हमऽगी तमाम ।।४।।

पूज़ा छि करऽःवऽन्य् मग्गऽःवन्य् वऽन्नाक्यन
ब्रह्मा विष्णू यन्दराज़ऽः ताम ।।५।।

दितुनम म्येः सोरुई छ्यम न केन्ह कान्क्षा
भक्ती अमिसऽन्ज़ म्येः बडऽः बुउड यनाम ।।६।।

बऽडरऽऽवतन असि पनऽःनी भक्ती
''दीनस'' मसती लोलुक जाम ।।७।।

## स्यध

शरीरेव घटाद्यपि वा ये षटत्रिंशत्तत्वमयं
शिवरूपतया पश्यन्ति तेऽपि सिध्यन्ति

स्यध गछि़ सुति युस शरीरस त नटिस
श्ययित्रऽः तत्वमय शिव ज़ानान ।।१।।

स्यध गछि़ सुति युस पान त परुद ति
श्ययित्रऽः तत्वमय शिव ज़ानान ।।२।।

स्यध गछि़ सु ति युस कामना त्रऽऽवित
पूर्ण अहमस थप लायान ।।३।।

स्यध गछि़ सु ति युस सोरुई ज़गथा
श्ययित्रऽः तत्वमय शिव ज़ानान ।।४।।

स्यध गछि़ सु ति युस प्राणस अपानस
दोहस रातन ह्यस थावान ।।५।।

स्यध गछि़ सु ति युस सत्गुऽरऽः वाकस
श्ययित्रऽः तत्वमय शिव ज़ानान ।।६।।

स्यध गछि़ सु ति युस ज्यवि प्यतिस प्यठ
शिवऽः शिवऽः नावई नच़ऽ.नावान ।।७।।

स्यध गछ़ि सु ति युस प्रथ कुनि शब्दस
श्ययित्रऽ: तत्वमय शिव ज़नान ॥८॥

स्यध गछ़ि सु ति युस अन्दरऽ: अन्दरी
पनऽ: निस हृदयस मऽन्ज़ रोज़ान
शवऽ: नज़िरि: वछ़ित पनऽ: निस मरिसई
श्ययित्रऽ: तत्वमय शिव ज़ानान ॥९-१०॥

स्यध गछ़ि सु ति युस सऽऽरई कऽऽमा
कऽर्यं कऽर्यं करिथई छुनऽ: करान
करन वोल पानई करुन ति पानई
श्ययित्रऽ: तत्वमय शिव ज़ानान ॥११-१२॥

पऽऽञ्च़ कार शिवऽ: सऽन्द्य ज़ानान आसि
पनऽ:निस पानस प्यठ फालऽवान
तऽथ्य अनुसन्दानस मऽन्ज़ रोज़ि
श्ययित्रऽ: तत्वमय शिव ज़ानान ॥१३-१४॥

द्वयऽतस सम्हार करऽ:वुन रोज़ि
अद्वयऽतस सृष्ट थ्यत करान
अनुग्रह निग्रह सोरुई केऽछा
श्यचित्रऽ: तत्वमय शिव ज़ानान ॥१५-१६॥

क्या: करि सु कान्ह पानस त पनिनिस
योतई यति छु रुत कान्छ़ान
स्यध गछ़ि अखरऽछ़ रुत यछ़ि सारिनई
श्यचित्रऽ: तत्वमय शिव ज़ानान ॥१७-१८॥

"दींनो" स्वध गछ़ सत्गुऽरस आगमस
प्यठ च़ऽ: पूरऽ: पऽऽठय् पछ़ थावान
शकऽ: रुस थप कर सत्गुऽरऽ: चरणन
श्ययित्रऽ: तत्वमय शिव ज़ानान ॥१९-२०

# विरह

यह भजन बीबी जी ने मरने से चालीस दिन पहले स्वामी जी को सुनाया।

क्या सना कुउर म्ये: त्युथ च्ये: खरऽवोन
क्यजि त्रोवूत च्ये: घरऽ: युन म्योन
कऽम्य् सना वुनऽनय च्ये: क्या: ताम म्योन
क्याज़ि त्रोवुत च्ये: घरऽ: युन म्योन ॥१॥

याद छ़िम म्ये: तिम दोह लुऽकऽ:चारऽवय्
खेलऽ: खेलऽ:नऽऽवथस बऽ: प्रथ भावऽक्य्
मृशि किन छुख वछ़ान अज़ बुजर म्योन
क्यज़ि त्रोवुत च्ये: घरऽ: युन म्योन ॥२॥

मोन्गमुत छुमय म्ये: जेरो ज़बर
इथऽ: तिथऽ: ह्यतऽ: म्ये: सर्वदा खबर
छ्यस ब बेमार छुम दवा कुथ च्योन
क्याज़ि त्रोवुत च्ये: घरऽ: युन म्योन ॥३॥

कोता: म्ये: त्रावतम त्रावत न ज़ान्ह
बरऽ: तलऽ: दोहऽ दोहऽ ब करय सदा
नालव म्यऽऽन्यौ नरमि दिल च्योन
क्याज़ि त्रोवुत च्ये: घरऽ: युन म्योन ॥४॥

आदनऽकि लालऽ: सऽऽबऽ: बोज़तम म्ये: ज़ार
अकि लटि कन थाव इयम म्ये: करार
फुऽलऽ: राव "लीलायि" जल करमऽ लोन
क्याज़ि त्रोवुत च्ये: घरऽ: युन म्योन ॥५॥

## फुऽलरावतम

मऽञ्ग्य् मऽञ्ग्य् मतऽ: म्ये: योत मण्दऽ:छावतम
फुऽलरावतम जल फुऽलरावतम ॥१॥

विश्व रूपऽ: दर्शुन म्ये: जल जल हावतम
ती विशुर्तीण ज़ानऽ:नावतम
वुऽन्य् मतऽ: अख रछ चेर केन्ह लागतम
फुऽलरावतम जल फुऽलरावतम ॥२॥

कोताह बऽ: प्रारऽ: वुऽन्य् वऽऽन्स् आयि मुऽकलान
करसना होल म्योन चलि चलान
लोल म्योन पनऽ:नीं लोलऽ: ललऽ:नावतम
फुऽलरावतम जल फुऽलरावतम ॥३॥

छुख चऽ: ज्यवि करनऽ: ज़ऽऽन्य् निशि अपारि
आलव इ: कमजोर वात्या अपोर
"दीन" छुस ब दीनता दूर करऽ:नावतम
फुऽलरावतम जल फुऽलरावतम ॥४॥

## गाश हो आव

यह भजन जन्म दिन १९७९ पर पडा गया

अऽऽज्य् सोन सत्गुऽर अवतऽऽर्यं् आव
गाश हो आव गाश हो आव
ह्यसऽ: मऽस्रतियि: वुऽन्य होश हो आव
गाश हो आव गाश हो आव ॥१॥

अऽज्य्कि दोहऽ दर्शुन कर शिवऽ सुन्द
विश्वमय विश्वर्तीन गुऽरऽ: सुन्द
नाराग दासऽनि: घरि हो ज़ाव
गाश हो आव गाश हो आव ॥२॥

कुस वनि तस छु कुनि केन्ह मल
सऽदरस मऽन्ज़ शूभान ज़न ख्यल
वछनऽ: खऽऽतरऽ: भऽक्तिस भाव हो आव
गाश हो आव गाश हो आव ॥३॥

फीर्य् फीर्यं् तऽम्य् असि सीर हो भोव
वति प्यठ पनुन पान चोंग तऽम्य् होव
लोलऽ: सान गण्डऽहऽऽव तऽस्य् अज़ भाव
गाश हो आव गाश हो आव ॥४॥

मुउत होस ह्यस दिथ यऽऽर्यं् गुण्डनम
हुश्यारन लाकम रटनम
सहऽज़ऽई व्यचार मल जल त्राव
गाश हो आव गाश हो आव ॥५॥

अज्ञानऽ: ओन ओसुस बेहोश
नालन म्यान्यन थुवनम गोश
इशऽऽबऽर खारनि बुथि म्ये: आव
गाश हो आव गाश पो आव ॥६॥

बन्द इम चठ बा बऽ तऽ म्यानिक
म्येइ कुऽर म्येई कुऽर इ: वनऽ: नऽक्य्
अन्दर्युम पम्पोश अदऽ: करि काव
गाश हो आव गाश हो आव ॥७॥

सतऽ: कुई हृदय हृदयस मऽन्ज़
औ रूपऽ: चित शक्ती अछ मऽन्ज़
आ: आ: करिथई पान आलऽ:नाव
गाश हो आव गाश हो आव ॥८॥

अकि लटि वछतऽ: अन्दरऽ: न्यबऽर्युम वान
तति छूई बुउन कुउन खसुन आसान
तति न मलन हऽन्ज़ बोय या नाव
गाश हो आव गाश हो आव ॥९॥

शूभिदार वस्तू पोश चऽ चार
आत्मऽः दीवस तिम पूज़ायि खार
तऽथ्य् मऽन्ज़ ठहर सुई आसन प्राव
गाश हो आव गाश हो आव ॥१०॥

ज़गत तऽ कारुबार ज़ान शिव बुथ
कृपा रूप ज्ञान छु यच्छा़ हुन्द बुथ
चित आनन्द अदऽः पूरऽः पऽऽठय प्राव
गाश हो आव गाश हो आव ॥११॥

मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् दीनऽः बरऽवुन छु चाव
मुउदुर स्वात्मऽः नवीद सुई असि ख्याव
तऽथ कुस करि कऽऽमत या भाव
गाश हो आव गाश हो आव ॥१२॥

# मस प्यालऽः

**तत्तदिन्द्रियमुखेन सन्ततं**
**युष्मदर्चनरसायनासवम्**
**सर्वभावचषकेषु पूरिते-**
**ष्वापिबन्नपि भवेयमुन्मद :**
शि-स्व-१३-

**-अर्थ-**

प्रथ कुनि भावस घरऽःहऽऽ प्यालः
मस्ता भरऽः हऽऽस सहज स्वभाव
हवासऽ क्यौ अऽऽसव च्यई च्यई लगातार
मोताः बः बनऽःहऽऽ तमि कलि सऽऽत्य्

## यह पढ कर

सुर्या वऽछ्य् म्येः कुल कुल परान
कलऽः वऽऽल्य् वुननम कल छयिबा
मस म्येः थौवमय बर्य् बर्य् प्यालन
रिन्दऽः रोज़ मस्त च्यई च्यई कलि सऽऽत्य् ॥१॥

कल त कल आवतो कल घनिरावतो
कलऽः नुउम्रावतो तमि कलिः सऽऽत्य्
दीनो कुल छुख कुल परज़ऽःनावतो
बेलिस मऽन्ज़ वुछ कुल कलि सऽऽत्य् ॥२॥

नारई वुछ म्येः सोरुई केन्ह़ा
मऽन्ज़ बाग त्युग्गुला पननुई पान
अहमई नार छू अहमई त्युग्गुला
ओग्गुलऽः ओंगलऽः वछ़ बोन्गला कलि सऽऽत्य् ३

# रग्ग

रग्गऽःतम म्येः पनऽःनी रग्गऽः बेरग्गऽः
रग्गऽः रग्गऽः मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टग्गऽः
चानि लोलऽः च्यऽऽमऽच म्येः चऽऽनी भग्गऽः
रग्गऽः रग्गः मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टग्गऽः ।१।

भग्गि मऽन्ज़ नचुना गोम रग्गऽः रग्गऽः
ज़ोन कऽम्य् अज़ताम चोन कान्ह अग्ग
अग्गऽः अग्गऽः नग्गऽः छुक प्रथ कुनि रग्गऽः
रग्गऽः रग्गऽः मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टग्गऽः ।२।

लूकऽः व्यवहारन चचिनम म्येः फग्गऽः
कवऽः चेनऽः सुति चोनुई नय त चग्ग
चऽञ्ज्य् गुऽण ब परऽहऽऽ प्रथ कुनि भग्गऽः
रग्गऽः रग्गऽः मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टग्गऽः ।३।

ज़ानुन त करनुई म्येः शूभिदार अग्गऽः
यऽछऽः मऽच्य् म्येः चऽऽनी ज़ान प्रथ रग्गऽः
इमऽवई अछिबई वछ़ऽहऽऽत हग्गऽः मग्गऽः
रग्गऽः रग्गऽः मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टग्गऽः ।४।

क्याज़ि गछ़ऽ: ओरऽ: योर फुटरावऽ: ज़ण्गऽ:
पानऽ; पानऽ:सई अन्दर वुज़ऽ:वऽन्य् म्ये: गण्ग
गणिग मऽन्ज दज़ऽ: बुन वुछुम छुस कण्गऽ:
रण्गऽ: रण्गऽ: मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टण्गऽ: ।५।

रण्गऽ: रुउस काल छुम छ़नान म्ये: त्रण्गऽ:
अकल्यत वऽ अऽऽसित क्याज़ि आस टण्गऽ:
गाशि व्यमर्शऽ: प्रकाश हण्गऽ: मण्गऽ:
रण्गऽ: रण्गऽ: मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टण्गऽ: ।६।

मण्गुना ति बई छुस करान मण्गऽ: मण्गऽ:
मण्गऽवुन त दिवऽवुन बई निस्तृण्ग
युसऽ: तरण्ग यलि इयम तमी किन ब जण्गऽ:
रण्गऽ: रण्गऽ: मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टण्गऽ: ।७।

पानय ब सलाह फसाद त दण्गऽ:
पानय ब हुश्यार करान ईम जण्ग
सोरुई ब त चऽ "दीन" हमाहण्गऽ:
रण्गऽ: रऽगऽ: मऽञ्ज्य् मऽञ्ज्य् आमुत ब टण्गऽ: ।८।

## इन्सान भगवान

हतो पानऽ: मान हतो पानऽ: ज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान
मऽ बन हयवान मऽ बन खऽसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ।।१।।

यछुन कान्छुन छु पान मारुन
न छुई खारुन न छुई तारुन
इ: छु ती मान चऽ पनऽनुई पान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ।।२।।

द्वपुई कऽम्य् छुई च्ये: गोमुत केन्ह
छय्ऽनोमुत केन्ह हर्योमुत केन्ह
आसऽवुन छुख चऽ सहज़ई पान
चऽ छुख इन्सान चऽ छुख भगवान ।।३।।

सु भगवान ति बनोवथन च्ये:
इ दुनिया ति बनोवथन च्ये:
चऽई शेतान चऽई भगवान
चऽ छुख इन्सान चऽ छुख भगवान ।।४।।

यली चऽ: छुख त्यली छ्ये: ज़ान:
करुण क्रावुन ति चोनुई पान
पनऽ:नुई पान चऽ: सहज़ई जान
चऽ: छुख इन्सान चऽ छुख भगवान ।।५।।

द्वयुम कान्ह नो बऽई सु ति हो
यति तति म्ये: वरऽऽय कान्ह नो
फुऽल्योमुत छुख छय ती ज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ।।६।।

वनान छुख चऽ: बऽ छुस कुस्ताम
करान छुस केन्ह थवान ज़र जान
इ: छुई गुमान इ: छुई गुमान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ।।७।।

आसऽ:वुन छुख कुनुई भगवान
करित थौमुत इ: फुरसऽच सान
सोरुई तऽम्यसुन्दुई आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ।।८।।

युस भगवान सुई इन्सान
पनुन पान पानऽसई खटान
स्वभावई छुस इहोय ईमान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ।।९।।

बनस मऽन्ज़ ना च्ये: नेरी केन्ह
घरस मऽन्ज़ ना प्यर्या केन्ह वेह
यति तति चऽ: पनुन पान ज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१०॥

बजर कस सऽऽ अज़ ताम रूद
लोकुट कर सऽऽ जल जल मूद
असलस मऽन्ज़ छु इ: यकसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥११॥

कुन्यर छुख कुनिरऽ: मऽन्जय द्राख
नीरित ईत बोजनऽ: आख
न नेरुन न अचुन आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१२॥

ज़ऽऽनिथ छुख चऽ: सोरुई केन्ह
मऽऽनिथ पान सोरुई केन्ह
कुनिरई मान कुनिरई ज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छूख भगवान ॥१३॥

तथ नो कऽऽन्सि ल्युख ज़ान्ह कुउर
पोथ्यन मऽन्ज़ न कऽऽन्सी भुउर
अऽऽसथई युस छु कुल जू ज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१४॥

अथस मऽन्ज़ आव नऽ रटऽनय ज़ान्ह
दिलदार दिलऽ: नऽ नेरान ज़ान्ह
भक्तय् छिस बन्द तती करान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१५॥

कुनि तरफऽ: नऽ शकलि छु
कुनि जायि नऽ बन्द सू छु
परज़ऽ:नऽऽवित न कान्ह ह्यकान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१६॥

वीदन त पुरानन मऽन्ज़
निशानऽ: योत आगमन मऽन्ज़
अथस क्यथ कऽम्य् सु रुउट अज़ताम
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुक भगवान ॥१७॥

यमी ज़ोनुई तमी नो वोन
पनुन पान कुस न्यबर कडि नोन
ज़ऽऽन्थई छुख चऽ: पनुनुई पान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१८॥

अन्दर्यं् अनुभवुक आनन्द छुख
खयालौ निशि चऽ: थोद छुख
पूर्ण पानऽ: पनऽ:नई पान
चऽ: छुक इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥१९॥

करौ किथऽ: कऽन्य् तऽम्य् सऽन्ज़ कथ
अख छु लछ छु: सु हथ
न्यर्मल सुई योत आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२०॥

अछुर अछुर छु चोनुई नाव
नय तय सोज़ सुई ग्यवान
अन्दर्युम ज़ेरु बम बोज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२१॥

छुखय गाटुल वछुख यकसान
सतरुपई ज़गत आसान
नूरस मऽन्ज़ आ: फुऽलान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२२॥

युउत ताम छुख तुउत ताम छु
न्यबर अन्दर पुउज़ुई आसान
न अऽऽसित ति चई फुऽलान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२३॥

इ: न्यब्रिम शान गुमान ज़ान
छु असलुक पान थुउद आसान
न्यबर आव अन्दरऽ: चई रोज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२४॥

म्ये: हो बूज़ुई क्ये: हो बुन्थम
द्वई छय यमि ज़गतऽच थम
कुन्यर योतुई असल आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२५॥

अहं छुख अहमक मो बन
न्यबर आव अन्दर अहं रठतन
अहमस मऽन्ज़ छु सू आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२६॥

इ कायेनात कुल छुख चई
बेलिस मऽन्ज़ ति कुल हो चई
चई बऽ त बऽ: चई आसान
चऽ छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२७॥

कुनि चीज़ऽच करौ कस ग्राव
मल्य् ह्यचऽमऽच छि पानय ग्राव
सत्गुऽरऽ: व्याव छ्यदुन आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२८॥

न छु केन्ह बद न छु केन्ह जान
तिथुई छु युथ इ मन मनान
मनस थुउद चऽ: छुक यकसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥२९॥

छु नूरे हक इ: सोरुई केन्ह
नूरस मऽन्ज फुऽलान प्रथ केन्ह
नूरई चोन असली पान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३०॥

कुस छु ह्यन्द या मुसलमान
सिख ईसऽऽई या यज़दान
तस निश नो फरऽक आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३१॥

युत ताम छुख फरऽख मऽऽनिथ
तुत ताम नो पान ज़ऽऽनिथ
फरऽख ति छय सुई आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३२॥

इन्सऽऽनियत छि खुऽदऽऽयत
ब्येयि सुन्द दोद मनस मऽन्ज़ ह्येथ
ती नय छुई त छुख खऽरसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३३॥

पानस त पनऽनिस छू
हर काञ्छ्या यछ्नई जान
सारिनई जान अगर काञ्छ्यान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३४॥

वक्तुक ज़ान चऽ कदऽर
अदय चेनक चऽ मुकदऽर
दमऽ: दमऽ: आस सुई जेनान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३५॥

कथन मऽन्ज़ मो चऽ: रावर दोह
करनस मऽन्ज चऽ: मारू छोह
अदय वछक चऽ: क्याह आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३६॥

कर्म कर कर्स्यं कर्स्यं मऽशराव
फलस मुलेह मऽ कल चऽ: थाव
गीतायि मऽन्ज़ छि ई परान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३७॥

फरऽज़ युस छुई च्ये: मटि खुउतऽमुत
छुया सु च्ये: पूर कुउरमुत
कुउरथई पूर वछुत भगवान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३८॥

जिठयन हुन्द मान गुऽरऽ: सेवा
लुऽकुट पालुन दियी मेवा
लूकऽ: व्यवऽहार भगवान मान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥३९॥

करित सोरुई चऽ: केन्ह मो कर
वछित बोजित ज़िन्दय मर
मनऽच गाणगल अदय गल्लान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४०॥

मनस मऽन्ज़ कान्ह ति मल मो थाव
दमऽ:दमऽ: सुऽई कल घनिराव
कलि सऽऽतिन लभख चऽ: पान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४१॥

कल यस छे: तऽम्य् लुउभ कुल
लोलऽकि सगऽ: सऽऽत्य् बिलकुल
आलव तोरऽ: ती आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४२॥

आलव तोरऽ: यस ज़न प्यौ
मुकम्मल सुई बनिथ हो गव
योरय कान्ह न कुन वातान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४३॥

आलव गव म्यहऽरबऽऽनी
प्रान्यन हऽन्ज़ छि ती वऽऽनी
तमी आशायि ज़ीव ज़ुवान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४४॥

परमानन्द ति चऽई आसात
अज़ऽ: छिई "दीन" नाव करान
त्यलि या अज़ कुनऽई आसान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४५॥

वनख क्या "दीनऽ:" वन जल जाल
तुउत नो ज्यव त बुउद्ध वातान
अन्दरय वुछ चऽ: अन्दरय ज़ान
चऽ: छुख इन्सान चऽ: छुख भगवान ॥४६॥

जय जय जय जय जय गुरु देव
रछ असि रछ असि ही गुरु देव

## श्ययित्रऽ: पोर लऽर

खसतो खसतो असतऽ: असतऽ: खसतो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी
तथ प्यठ खसिथई कऽऽमिल बनतो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१॥

लऽर छय पनऽ:नी प्रुछुनुई छुई नो
पानय बनऽऽवथन पननि पानऽ: सऽऽत्य्
पऽऽन्य् पानऽ: पानस नज़राह करतो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२॥

चित भगवतियि: स्वात्मऽ: मूनिस प्यठ
पनऽनी बनऽऽवऽन लऽर पानऽसई
पऽऽञ पानऽ: अऽथ्य् मऽन्ज़ सुऽई रोज़ानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥३॥

मऽऽलिकि कुल छि स्वतन्त्र पानो
सुऽई छि बनावान लऽर पानऽसई
पऽऽन्य पानस छय: ब्ययि: अपरानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥४॥

पऽऽञ्च महाबूत सुऽन्दर बऽ सुन्बरानो
पऽऽञ्च तनमत्रायि मुऽटरऽऽवित
दऽह यन्दर्ययि: छुस मजूर लागानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥५॥

कारुबारऽक्य् इम वोह पोर वुछथक
बऽन्य् बऽन्य् बनान ठहरान गिरान
बनुन ठहरुन गिरुन अम्युक परज़ानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥६॥

मनऽ: किन छुस बऽ: यछान काञ्छानो
बुउज़ किन सुउन वोंगुन छुस बऽ: वछान
अहंकारऽ: रूपऽ: छुस लुऽत बऽ बनानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥७॥

प्रकृती त्रकि: मऽन्ज़ छुस तोलानो
त्य: गुऽन इनऽ: गछन कम ज्यादऽ:
समऽ: तवुक छुस शोंवलऽ: त्रावानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥८॥

चुवोह पोर हऽऽवमय क्या आसानो
पुऽरषऽ: रूपऽ: अक छुस बऽ: पऽन्ऽय् पानय
अमि ह्यु र व्यचारऽ: वान खसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥९॥

अतिनस श्य: पोर क्रीठ आसानो
तिमन हन्दि गऽन्डऽ: छू: बन्द सोरुई
तिमन हेरऽ: फिरित, पिशजि: आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनीं ॥१०॥

तिमन हऽन्ज़ तुऽता अलग बऽ करानो
माया भवऽऽनी गछित शरण
तिमन हेरन ह्यु र अदय खसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥११॥

वऽञ्चक्यन यथ ह्यू पान ज़ानानो
यमि किन केञ्छा वनान म्योन
अव्यद्या सराब सोन आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्वऽऽनी ॥१२॥

पऽऽञ्च इम त अकिस माया वनानो
फिरित हेरन यति वऽस्य वऽस्य प्यवान
अति खसित ज़ीवन मुऽखत बनानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१३॥

ओत तामत स्वात्म वृती वनानो
अमि ह्यु र कुन वीरन हऽन्ज़ कऽऽम
उद्यमो भैरव: तिमन गन्ज़रानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१४॥

धैरऽ:वान अतिनस युस आसानो
साहस वृती छू प्रावान
कूठि गण्डऽ: भवऽ: सरऽ: पान मुऽकलानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१५॥

खसऽनस किच अति छय अख हेरऽ:
गुऽरऽ: दया दयि कृपा आसान
शक्ती पातऽ. सऽऽत्य् अतिनस खसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१६॥

अनुग्रह रज़ यस तोरय प्यवान
सुई छु तिमन शन पोरन खसान
नतऽ: योरय न कान्ह तोत वातानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१७॥

ब्ययि ब्ययि लूकन ति लरि आसानो
पऽञ्चहि ज्यादऽ: न पोर ज़ानान
तमि ह्यु र न तिमन नज़र आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१८॥

पऽञ्चाचहि पोरऽ: प्यठऽ: क्या: इयि वछनऽ:
युस नजारऽ: श्ययित्रहि पोरऽ: प्यठऽ: छू
शैव यूगियस योत भूग मेलानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥१६॥

अकऽ:त्रऽ: पोर इम युत ताम वनिमय
सोरुई जगत अऽथ्य् मऽन्ज़ आसान
सत्रूप छु इ: शिव आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२०॥

बोज़ऽ:वय पोज़ काया शिवऽ: सऽन्ज़ छि
इम अकऽत्रऽ: पोरई आसान
अमि ह्यु र अमायक अद्वय ज़ानानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२१॥

इम अकऽ:त्रऽ: पोर इनऽ: वछ्यक न्यबर
पनऽ:नुई पान छू इति आसान
अशुद्धाध्वा मगर नाव आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२२॥

सकल प्रमाता बुउनऽ: रोज़ानो
प्रल्याकल प्यठिमिस पोरस
विज्ञानाकल हेरि आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२३॥

अमि ह्यु र कुन छि पऽऽञ्च पोर सुऽन्दर
शुद्धाध्वा नावऽ: छिख पूज़ान
शैव यूगी योत तुउत वातानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२४॥

शुऽद्ध व्यद्या द्वयित्रहिम पोर वछ
मऽन्त्रऽ: नऽऽव युगी तति रोज़ान
इदम त अहं अति ह्यू व तोलानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२५॥

कृया शक्ती अथ पोरस राज़:
आनव गलऽनऽच सखऽर करान
माया त कारम न अति आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२६॥

ईश्वर नऽऽव वछ पोर वुऽन्य् सुऽन्दर
अहमस मऽन्ज़ इदम अति श्रु परान
मन्त्रीश्वरन तति इदम प्रदानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२७॥

ज्ञानऽ: शक्ती अथ पोरस राज़ा
ज्ञान सारिकुई छू अति आसान
आनव गलऽनस तयार आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२८॥

सदाशिव सुन्द घरऽ: ज़ान वुऽन्य् पोरऽ:
मन्त्रऽ: महीश्वर करान छि निवास
अहं बन्येमऽत्य् इदम न ज़ानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥२९॥

यच्छा शक्ती अति हकूमत करान
यच्छायि सऽऽती सोरुई बनान
न्यर्मल अहं पूर्ण आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥३०॥

वुऽन्य् छी प्यठऽ: कनि की ज़ऽ: बऽडय् पोर
ज़ऽ: क्या असली छी तिम कुनी
पानऽ: शक्ती त शिव अति रोज़ानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥३१॥

स्वामि सोधम वनिथ श्री उत्पल दीव
इमय ज़ऽ: पोर छि सुम्रन करान
प्रछनऽ: यछनऽ: रुसतुई खसुन यच्छानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ॥३२॥

ब्रह्मा विष्णू इन्द्राद्यक छि:
कऽऽति कालऽ: प्यठऽ: डेडि तल प्रारान
तोरऽ: ची मरजियि: तुउत कान्ह खसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ।।३३।।

मल त्रे: युस गालि सुई तोर छु खसान
तस शक्ति पात पानऽ: शिव नाथ करान
भक्ती सऽऽती मुऽक्ती लभानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ।।३४।।

सतगुऽरऽ: दया त शिव कृपा वोल
अमि लरि हुन्द दर्शुन छु करान
नतऽ: दीनऽ: कुस छुक चऽ: आसानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ।।३५।।

घरा: असि वऽछ्य् शिव सुन्द मन्दर
कलश अमिकुई छु श्री परमऽ शिव
सुई आकाश गब कान्ह न वातानो
श्ययित्रऽ: पोर छय लऽर म्यऽऽनी ।।३६।।

# माया भवऽऽनी

श्ययित्रऽ: पोर लऽर आरम्भ करते समय पूज्यनीय श्री आचार्य रामेश्वर जी झा ने चिनौती दी कि माया भगवती का वर्णन केसे होगा ? जब पचीस मऽन्जि लऽर का ज़िकर समाप्त हुआ तो काम रुक गया और मैं आगे न चल सका । इन्ही दिनो दुर्गा पूजा का महोत्सव आया और मैं इसी चिन्ता में कि अब क्या किया जाय हर साल की तरह दुर्गा पूजा में लग गया । यह पूजा करते करते मुझे एक मात्र चिन्ता पचीस तत्वों से आगे श्ययित्रऽ: पोर लऽर पूरा करने की तरफ लगी । श्री गुरु कृपा और श्री दुर्गा भगवती की अपार दया से दुर्गाष्टमी के प्रात: काल यह प्रार्थना श्री माया भगवती के चरणों में बन गयो और दशमी के दिन पहला भजन श्ययित्रऽ: पोर लऽर भी समाप्त हुवा ।

शिवनाथन युसऽ: स्वतन्त्र शक्ती
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी
सुऽ ना कऽऽन्सि ति फिकिरि: तरऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ।।१।।

पानऽ: शिवनाथ ति तऽस्य् दाम्नऽ: रटान
विश्वतीर्ण अद: विश्वमय छु बनान
तस शरन गछ्ति व्ययि पान ज़ानऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ।।२।।

तस नामथई मन त बुऽद्ध छय वातान
घूर्य् ज़ऽ: चऽऽन्य् इम तुउत ताम्थइ खसान
ह्यु र त बुउन सुऽई यऽऽच, करिथ ह्यकऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ।।३।।

यलि शिवनाथ तस निश भ्युन्न आसान
कुनि वति छु नऽ: कऽऽञ्सि नुउन सु आसान
तथ सऽऽत्य् मीलथई अथि छु इवानई
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ।।४।।

तस रुउस बुन कुन केन्ह न ज़ानान
ह्यु र कुन अनुभव सुऽई वथ दिवान
ठुउर बुथि थावान थुउद ति तुलऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ।।५।।

यच्छा ज्ञान त कृया ब्योल छु आसान
माया खेति मऽन्ज़ फुऽलऽनस ईवान
स्वलभ त दुर्लभ ज्ञान आसऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ।।६।।

शारिका रऽऽज्ञा शारदा सऽऽरी
नाव इम तऽम्यसऽन्दी अऽस्य् इम ह्यवऽऽनी
असल नावस क्याज़ि अऽस्य् खोचऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् काया भवऽऽनी ।।७।।

सम्सार ति व्यवहार सुऽई छये: करान
यमि मऽन्ज़ऽ; मुऽक्ती सुऽई छये: दिवान
द्वनऽ: वय बुथ्य् इम तऽस्य् आसाऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥८॥

यमऽ: कऽऽली यलि अस्य् छिस वनान
द्वनऽऽवय बुथ्य् छिस नऽन्य् आसान
धैरऽ: वानस छय थुउद तुलऽऽनी
रोजु शरन तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥९॥

शिवऽ.नाथुन स्वभाव सुउई छे: आसान
शक्ती हुन्द रूप सुउई छे: आसान
परा ह्यथ वैखरी सुउई आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१०॥

तस रुउस पानो कुन न वातानो
ततिनस बुउठ केन्ह ज़ाँह ति तुलख नो
शक्तिपात भऽक्तिस सुउई दावऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥११॥

ब्ययि ब्ययि लूख छिई भ्युन्न तस मानान
द्वयत ती गब ती छिनऽ: ज़ानान
पऽन्चहि त्वत: ह्य र तिम न खसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽवी ॥१२॥

गछ्खय शरण तस बनि मुऽकलन पाथ
मशरहऽन सुऽ अगर ज़ोवतिस लगि आय
तसऽ:न्जाज़ई ज़ान छय पान ज़ानऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी । १३॥

पऽऽन्च फाँसि सुऽई हटिस वारऽ: पऽऽठय् त्रावान
श्यइम पान मिलवित षठकुन्चक बनान
तमि मऽन्ज़ऽ: मुऽकलुन ति तऽस्य् तगऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१४॥

माता रूपऽ: छय पय सुऽ दिवान
भऽऽरिया रूपऽ: विलास ति करान
लल द्यद ति मालायि कूठ वनऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१५॥

कूठ छे: कूठ छे: कूठ छे: आसान
यलि ज़ानोन त्यलि स्वरूप हावान
रछऽत्ऽन्य् त पालऽवऽन्य् मऽऽज्य् आसानी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१६॥

सृष्टी थ्यथ या सम्हार वनतस
प्यदान अनुगृह शक्तिपात वनतस
असली अनुगृह योत आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनौ ॥१७॥

बनावि नय जगत, कुस ज़ानि शिवस
आसिनय कूठ सुऽ: कुस पूज़ा करयस
कठ आसऽ:नुई छय: दया सुऽ करऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१८॥

बुथ छुस कूठ अन्दरऽ: छय सुऽ कोमल
बीम नय मऽऽज्य् थवि शुर पक्या स्युद्ध जल
भयि तऽम्य्सुन्दुई कृपा आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१९॥

भयि: तऽम्य्सुन्दुई छु शक्तिपात आसान
तमी सऽऽत्य् सुऽ छिन अऽस्य् अदऽ: छांडान
मऽऽज्य् लायान शुर वलनऽ: इवऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥१०॥

भयि तऽम्य्सऽन्दि मऽन्ज़ऽ: ज़य छु आसान
कहर ति म्यहरई सुऽ छे: करान
दुऽखऽ: मऽन्ज़ऽ: सुऽख छे: सुऽई दिबऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२१॥

धनऽ: द्यार दौलत ति बुथ्य् छो तऽम्य्सऽन्द
मान यज़थ बजर रऽत्य् छो तऽम्य्सऽन्द
इथऽ: कऽन्य् तिथऽ: कऽन्य् छिन पूज़ऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२२॥

शिवऽ: नाथस सऽऽत्य् कुन्य् छे: आसान
नार त वशनेर कुन छु आसान
सोरुई जगथ सुऽई पानऽ फुऽलऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२३॥

सुऽई छे: पूज़ा तऽ सुऽई छे: पुज़ऽऽर
सुऽई करान व्यचार व्यचऽऽर्य् व्यचऽऽर्य्
तऽम्य्सुन्दुई द्यान जप यूगी करऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२४॥

यलि इऽ: दयायि प्यठ त्यलि छिन ज़ानान
तऽम्य् सऽञ्ज़ी कृपायि सऽऽत्य् छिन मानान
स्वात्मऽ स्वरूप त्यलि अनुभव करऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२५॥

सुऽई छे: माया सुऽई महामाया
अविद्या बुथ शुऽद्धऽ विद्या काया
तुऽता तस कुस न करान आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२६॥

पऽऽञ्छ् रज़ऽ तऽम्य्सऽन्ज़य वारऽ: आस ज़ानान
काल कला नीत्य् राग अव्यद्या वनान
अथऽ: माया इमऽ: ओन्गजि: आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२७॥

स्वतन्त्र शक्ती शिवऽ: सऽन्ज़ इहऽऽय् छ:
जगत माता पूर्ण पानय छे:
अथि इइऽ शिव यलि सुऽ ज़ानोनई
रोज शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२८॥

व्ययि व्ययि लूक ओतताम नो वातान
पऽनचहन थफ करित थख तिम छि कडान
अमिचि ज़ऽऽन्य् पतऽ: शैव, शिव ज़ानऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥२९॥

अकऽ.त्रऽ: रूप अऽम्य्सऽन्द्य् यलि ज़ानव
सुई गव शिव सुई सत यलि मानव
औ ज़ऽऽनिथ अदऽ: आ: अऽस्य् फुऽलऽ:नी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३०॥

सुऽन्दर रूप अऽम्य्सऽन्द्य् आस रटान
आत्मऽ दीवस तिमई पोश आस लागान
तिमन मऽन्ज़ पान बन्द करणऽ: वरऽऽई
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनीं ॥३१॥

पान बलनय तिम तोति ह्यस चऽ: थावक
क्या: छुस वऽ: कथ इम बऽ: लागख
सुई ह्यस मुऽक्ती छु दीवऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३२॥

सुऽ त तऽम्य्सुऽन्द प्रपञ्च पानो ज़ानू
शिव शक्ति छि ई ती चऽ: मानू
अदऽ: पानऽ: शिव नाथ सुऽई हावऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३३॥

सुऽई न अऽऽसित छुस तोति सुऽई बऽ:
ती बन्योमुत छुस तमी बनोवमुत बऽ:
इ: सोरुई म्योनुई, रूप आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनीं ॥३४॥

तस रुउस ना छुनऽ: केन्ह ति आसान
यलि ती ज़ानौ पान छी ज़ानान
नासुन आसुन स्वभाव आसऽऽनीं
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३५॥

यमि रूपऽ तमि रूपऽ बऽई छुस आसान
माया अमाया ति बऽई छुस आसान
विश्वमय विश्वतीर्न आसऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३६॥

विश्वमय निरन्तर गव विश्वतीर्न
विमर्श विचार प्रकाश नेथरन
ज़ोनमुत ज़ानुन गाश आसऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३७॥

विश्वमयि प्यठऽ: यलि विश्वतीरन बनख
विश्वतीर्न प्यठऽ विश्वमयता वछख
द्वनऽ: वय इम हा अहं आसऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३८॥

यमि वति तमि वति सुऽई छिन पूज़ान
प्रथ जायि सऽऽरी तऽस्य् योत अर्चान
दूर न गछुन नऽज्य्दीक आसऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥३९॥

ज्ञान छे: अऽऽसथई पानऽ अमि भावऽच्य्
न्यबर्यं न्यबरी मगर छ्यनऽ: सुऽ तावऽच्य्
वऽऽलिञ्जि सनिथई खनऽनऽ: इवऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४०॥

अनः परनादिवत वुउन गुप्त दीवन
हृदयन्गम कुउर श्री गुऽरऽ दीवन
तऽस्य् निश अऽस्य ति छि ती ह्यछऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४१॥

लगुवृती त विज्ञानः भैरव
वारऽ: पऽऽठ हऽऽव असि पनऽन्यौ गुऽरौ
आचार्य जी ति वऽन्य् वऽन्य् वनऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४२॥

ईस्वी कुन्वुह शथ त चुसतथ
अन्गरीज़ अमरीकय् श्यश ति आय तोतथ
बटऽ वारि दोह अऽऽस्य् ई परऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४३॥

छुनऽ वनऽनऽ: इवान छुनऽ भावनऽ: इवान
कालऽ थुऽद मायायि थुऽद छु आसान
मायायि थप दित निशानऽ: हावऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४४॥

सास नाव इम भवऽऽनी हऽन्द पूज़ान
अख अख अऽम्यसुन्दुई दर्शुन आसान
हवन जप यज्ञः अऽम्यसुन्दुई करऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४५॥

अख हथ त बाह धारऽनायि इमऽ: छे:
तिमऽ: सार्यँ पूज़ा अऽम्यसऽज़ई छे:
अकि अकि सऽऽत्य छे: अथि इवऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४६॥

महा गायत्री हुन्द ज़प करतऽ: दोहोय
आत्मऽ: दीव सिर्यिः सऽन्ज़ऽ: ज़चऽ: वछतऽ: दोहोय
स्याज़ि वति बुऽद्ध छे: पकऽनावऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४७॥

अज़पा ज़प छे: दोह त रात इ करान
ज्यनऽ: प्यठऽ: मरुन तान थक ज़ान्ह नऽ कडान
ह्यसऽ: किन तऽति यूगी छिस वछऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४८॥

गोडन्यथ वऽन्य् असि शक्ती स्वतन्त्र
माया सुऽई गयि शक्ती निरन्त्र
माया त शक्ती नऽ भीद आसऽऽनी
रोज़ु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥४९॥

माया कुण्डलिनी क्रया मधुमती
चोवोह नाव अऽम्य्सऽन्द परतऽ: अती
अति ओह छुस न केन्ह वनिथ ह्यकऽऽनीं
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५०॥

यलि शिव शक्ती रूप छू फुऽलान
मल त्र्ये: प्यठ ह्यथ ज़ीव छू बनान
यच्छा ज्ञान त क्रया ती आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५१॥

सुई पानऽ: पती सुई पानऽ: पुउश छु
पुशपती नाथ नैपालऽ: ति सई छु
ह्यन्दऽ: रयन्दऽ: सुइ इशऽ:बऽर आसऽऽनी
राजु: शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५२॥

शिव त शक्ती छुनऽ: भीद केन्ह आसान
ज़ोर त ज़ोरावर अकुइ छु आसान
सऽहऽस प्यठ खसिथ ज़गथ ज्येनऽऽनीं
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥ ३॥

मधुकैटब शुम्भ निशुम्भ इम छि:
अन्दरऽ: पानऽसई अन्दर डाम्ब लऽऽगिथ छि:
इष्टऽ: दीवी पनऽन्य् इम मारऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५४॥

इष्टऽ: दीवी श्रीं शारिका भवऽऽनी
परभतऽ: त इशऽबऽर नऽन्य् आसऽऽनी
मऽऽज्य् सऽऽन्य् सुऽई छे: असि रछऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५५॥

प्रभा जी न्यर्मल गुऽरऽ: सीवक सुऽ
गुऽरऽ: दीवऽन्य सम्वित शुऽद्धऽ: मन सुऽ
सोम रस अमायक छे: चवऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५६॥

सत्यं ज्ञानं अनन्तं वन तस
दीहहंकारऽ: निश थुउद चऽ: वछतस
ईश्वर स्वरुप सुई पानऽ: आसऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५७॥

वुनुम गुऽरऽ: दीवस वुऽन्य् त्रावऽहऽऽ बऽ:
ज़गतऽ: निश न्यबर कुन रोज़ऽहऽऽ बऽ:
वुनुक बेमार पतनि रोज़ पलज़ऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५८॥

दुर्गा अष्टमी छि अज़ क्या: जान दोह
माजि हऽन्द गुऽण वनऽवान लोयुम छोह
बुऽद्ध वाग्य दोह छयम बुऽद्ध म्ये: फुऽलऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥५९॥

अऽऽठन दोहन माजि कुऽरनम म्ये: कृपा
वैखरी रूपऽ: छयम अज बऽड इ: दया
छय "दीनऽ." क्या: च्ये: मुऽधुर इ: वऽऽनी
रोजु शरण तऽस्य् माया भवऽऽनी ॥६०॥

# आदनऽच यऽऽरी

जन्म दिन १६८२ पर पडा गया

आदनऽच छयमय यऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी
पानय कऽरनमय यऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१॥

छ्यु सु पानय प्रकाश
सम्वित चित आकाश
आसान चवापऽऽरी
लगस ना पऽऽर्यं पऽऽरी ॥२॥

ओसुस न बऽ लायक
गा़ल शायक फायक
कऽरनम मीना कऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥३॥

योरय कुस तुउत वोत
नथ शिखऽरस कुस खोत
खऽऽरिन चऽऽर्य् चऽऽरी
लगस ना पऽऽर्यं पऽऽरी ॥४॥

अऽऽसिथ छु नऽ आसान
भऽऽसिथ छु नऽः भासान
तोति दया जऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥५॥

कति सना छु नऽः
क्याः करान छु नऽः
ज़ानान छिसय सऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥६॥

ज्ञानुक सुई प्रकाश
तऽम्य्सऽन्ज़ छ्यम म्ये आश
ईश्वर स्वरूप स्वामी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥७॥

वुछथय क्युथ छु सू
ईश्वर स्वरूपा ह्यू
रोज़ान इशः बऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥८॥

क्याज़ि छु मुउठमुत
न्यूरई दूर्योमुत
वऽन्य् दिस चुवापऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥९॥

छुनऽः कुनुई गोमुत
अन्दरऽः खटित थौवमुत
न्यब्रऽः छान्डान सऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१०॥

ज़ान तऽम्य्सऽन्ज़ यऽऽचई
न्यब्रऽः अन्दरऽः सु बऽई
खब्रि: रुउसतई जऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥११॥

वुछ म्येः यती तती
क्रहऽन्य् वुज़ऽल्य् त छती
बे रंगऽ मऽन्ज़ऽः जऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१२॥

मनि मऽन्ज़ म्येः थोवूम
रुमऽः रुमय रुवूम
केन्ह ना छ्यम नऽ खऽऽरी
लगस ना पऽऽर्यं पऽऽरी ॥१३॥

पानय आवय म्येः कुन
न हय ह्यु तुम न कुन
तसऽन्ज़ऽई खेल जऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१४॥

बऽति हय छुसऽः सुऽई
च़ ति वुछ्मख म्ये. सुऽई
तस त म्येः हय यऽऽरी
लगस ना पऽऽर्यं पऽऽरी ॥१५॥

कुत्र आया कोहं
यत्र अस्मि सोह
तसऽन्ज़ई जानकऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१६॥

कृष्ण वुछमय त रामई
मुर्लीधर हय शामई
राधायि कऽर म्येः ज़ऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१७॥

सीतायि कऽर म्येः ज़ऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१७ क॥

तीर कमान वछुमस
दशरथ सन्तान वुनमस

राम लक्ष्मन सऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥१८॥

शारिका तय ज्वाला
रऽऽज्ञा ब्ययि बाला
भगवती हऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरीं ॥१६॥

पानो वछतो इ बाग
गछतो वछऽत इ शाद
शाद मरगो मऽऽरी
लगस ना पऽऽर्यं पऽऽरी ॥२०॥

दीनो रोजु न्यर्मल
डलस मऽन्ज़ जन हा ख्यल
अदऽ: पम्पोश जऽऽरी
लगस ना पऽऽर्य् पऽऽरी ॥२१॥

## दीना नाथ

यह भजन हरमुकट गंगा पर लिखा गया

दीनदयाल हे दीनानाथ
मैं तेरे तू मेरे साथ
कौन है दीन और कौन है नाथ
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥१॥

दीन है नाथ है सब है एक
एक ही बनता है अनेक
ना कोई दीन ना कोई नाथ
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥२॥

देखता हूं तुमको हरदम
तुम ही ओले तुम शबनम
हर मुख से तुम ही शिवनाथ
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥३॥

जिस सिमत देखूं, तो हो तुम
कुछ नही खोया कुछ नही गुम
हम ही करते सब कुछ बात
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥४॥

जब हूं मैं तब ही हो तुम
मैं न हूं तो तुम भी गुम
आपस में हम पकड़े हाथ
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥५॥

ऐसा पकड़ो मेरा हाथ
फिर न बिगड़े अपनी बात
मैं रहूं तेरे साथ दिन रात
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥६॥

जब था खोया मैं जग में
तुम को ढूंडा बाहर में
सत्गुरु बोले अन्दर ताक
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥७॥

सत्गुरु ने की दृष्टि एक
अनेक दिखाया होता एक
आँखें खोलो समझो बात
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥८॥

दीन ने बोला जय गुरु देव
जय जय बोलूं जय गुरु देव
ईश्वर स्वरूप हो मेरे नाथ
मैं तेरे तू मेरे साथ ॥८॥

१९७५

# पज़ि हीं न बिलकुल

न सोढव्यमवश्यं ते जगदेकप्रभोऽिदम
महेश्वराश्च लोकानामितरेषां समाश्च यत
उ. स्तो व १०-१

पज़ि ही न बिलकुल बरदाश्त इ करुन
वऽऽह्दु-ला-शरीक ज़गत स्वामी
आसव अख च्ये: महीश्वर सऽन्य् दास
ब्ययि लूकऽ:नई, ही ति नाथ ॥१॥

ये सदैवानुरागेण भवत्पादानुगामिनः
यत्र तत्र गता भोगांस्ते कांश्चिदुपभुञ्जते
उ तो १०-२

भक्ती त लोलऽ: सान सदा त सर्वदा
प्रकाश व्यमर्शं रूप चान्यन पद्यन
पतऽ: पतऽ: पकऽ:वऽन्य् प्रथ दशायि मऽन्ज़
कुस्ताम आनन्द छि प्रावान नाथ ॥२॥

व्यथान अऽऽस्यतन समाध अऽऽस्सतन
व्यवहार अऽऽस्तन न्यन्दर या स्वप्न
अभ्यऽऽसो भक्त हर हालस मऽन्ज़
चिदानन्दऽ: रसऽ: अमृत चवान नाथ ॥१॥

वति कथि यति चऽ: कालस गालऽवऽनि
दुऽख त दोद तुउत कुउन कर वाति
भक्ती रूपऽ: लक्ष्मी चऽऽन्य् यस चन्द्रस
ब्ययि भूगऽच यच्छा तस कति नाथ ॥२॥

ही प्रभू अकि ख्यनऽ: यऽम्य् भक्तिज़नन
सुऽखऽ: सान प्राप्त कुउर चोन स्वस्वरूप
तनय प्यठऽ: तऽमिसऽन्ज़ सऽऽरऽई ज़िन्दगी
चानि आनन्दऽ: रसऽ: भरित छे: नाथ ॥३॥

# म्योन तमाह

जन्म दिन पूजा १९७८ पर पडा गया

म्ये छु तमाह बऽ सत्गुरन करऽ: सेवा
म्ये: छु तमाह बऽ तमिकुई ख्यमऽ: मेवा ॥१॥

म्ये: छु तमाह बऽ: पाद तऽमिसऽन्द छलऽहऽऽ
दोहऽ दोहऽ बऽ चरणऽ: अमृत च्यमऽहऽऽ ॥२॥

म्ये: छु तमाह बऽ: रोज़ऽ: हऽऽ तिमन निशन
करऽ दर्शुन न्यथ वोज़ऽ: गुरऽ: भाशन ॥३॥

दास छुस बऽ तिहऽन्द्यन दासन हुन्द
श्यशन सारिनई ब नोकर नोकरन हुन्द ॥४॥

म्ये: छु तमाह करेम ना स्यज़ नज़राह
चलि खय म्ये: त रोज्यम न केन्ह फरज़ाह ॥५॥

गोछ म्ये: भासुन ज़गत ति गुरऽ: सुन्द रूप
अहं इदम, इदम ति, अहमऽकुई रूप ॥६॥

म्यन्न म्ये: चलितन चऽ: न बऽ: आसऽनुक वुऽन्य्
पनुन पान चऽ:, पान नऽ:, भासऽनुक वुऽन्य् ॥७॥

छुम नऽ पनुन म्ये: केन्ह इ: करऽ: अर्पन
दृष्य सोरुई इ: तुहुन्दुई छु दर्पन ॥८॥

करऽ: कमि ज्यवि अस्तुती गुऽरन हन्ज़ बऽ:
अछुर अछुर तिमऽई छुस फुऽलऽ:मुत बऽ: ॥९॥

रुमऽ: रुमय बऽ करऽहऽऽ गुऽरऽ: दर्शुन
स्वरूपि ईश्वर तिमन करऽ: पोशऽ: वर्शुन ॥१०॥

कन्दऽ: प्यठय ब्रह्माण्डस तामत
पम सऽऽरी अछर त बीज़ तामत
गुऽरऽ: दर्शुन बऽ: करऽ:हऽऽ नऽन्य् पऽऽठिन
श्री शारिका त श्री झा सऽन्द्य् पऽऽठिन
११-१२

विन्दु: प्यठय भूपूरस तामत
त्ययितऽऽजि: चोत्रोऽ: त डुलऽ: न्ये: ह्यत
रचि रच्ये तति छु सत्गुऽर व्याप्त
ती भास म्ये: रूजतन सर्वदा प्राप्त
॥१३-१४॥

"दीनऽ:" दपान ब वछऽहऽऽन प्रथ शाये
सुबऽह् शामन दोह् त रात जायि जाये ॥१५॥

म्ये: छु तमाह् गुउछ न म्ये: तमाह् रोजुन
अऽन्य्तौ जमा: म्ये: भासनस करित आसुन ।१६।

## " आस "

कागा सब तन खयियो चुन चुन खायियो मास
यह् दो नैंन न खयियो प्रभू मिलन की आस

निराश नहीं मैं आस मुझे है
प्रभू मिलने की आस मुझे है ॥१॥

हू मैं अनपढ पापीं शापी
गुरू चरनन की आस मुझे है ॥२॥

जीवन खोया खेल कूद में
कृष्ण भी खेले आस मुझे है ॥३॥

योवन में किया गृहस्थ मैं ने
राम, भी गृहस्ती आस मुझे है ॥४॥

काम किया मैं ने सारी उमर
कबिरा जुलाहा आस मुझे है ॥५॥

मैला तन और वस्त्र मेरा
भसमाम्भर की आस मुझे है ॥६॥

प्यास मुझे है आस मुझे है
गुरु कृपा की आस मुझे है ॥७॥

आखों मे क्यों रोशनी मुझे दी
प्रभु दर्शन की आस मुझे है ॥८॥

आस न हो तो जियों न इक दिन
आशापुरी की आस मुझे है ॥९॥

सत्गुरु करता कृपा है मुझ पर
कृपा निधान की आस मुझे है ॥१०॥

जो कुछ मैं हूं मैं ही मैं हूं
वही जानने की आस मुझे है ॥११॥

दया बिखारी हूं में "दीन"
दयावान की आस मुझे है ॥१२॥

## क्या: छु करुण

ही म्यानि गुऽरऽ: दींवऽ: वन म्ये नादानस
क्या: छु करुण लभऽनस पानस ॥१॥

करऽ: हऽऽ बऽ: केन्छा लगऽ:हऽऽ ब ध्यानस
पूजा करऽहऽऽ भगवानस
इ: ति कारम मल लुउग म्ये डालऽनस
क्या छु करुण लभऽनस पानस ॥२॥

छुम पान मुउठऽमुत अऽऽसिथ अथि पानस
किथऽ: कऽन्य स्वस्वरुप वुऽन्य जानस
ज़ान कति इ ई: म्ये: न्यब्रऽ: छा कनऽनस
क्या छु करण लभऽनस पानस ॥३॥

ई बऽ: छुस ती लगुस बऽ: लभऽनस
प्रच़ इ अजऽब्रई लुऽगुस खोलनस
पानय बऽ: अऽऽसित लुउगस तोहि प्रछ़नस
क्या छु करुण लभऽनस पानस ॥४॥

शुर छुम कुऽछि क्येथ मनऽऽदी कऽर्य् कऽर्य्
छ़ान्डनस बऽ लुउगमुत बाजारस
इ: ति: छा स्वभावई लगऽ: हऽऽ बऽ ज़ानऽनस
क्या छु करुण लभऽनस पानस ॥५॥

पान छुम रोवमुत पऽज्य् पऽऽठय् पानस
नाव छुम कुउरमुत पान खानस
खानऽ: रोज़ि पथ कुन वड़ुन छु पानस
क्या छु करुण लभऽनस पानस ॥६॥

कान्ह छुस नऽ चटऽनस न कान्ह गालऽनस
वाव वऽडऽनावनस न नार ज़ालऽनम
न्यत्यस अन्यथ क्याज़ि लुउगुस बऽ: वनऽनस
क्या छु करुण लभऽनस पानस ॥७॥

युस बऽ अन्दर सुई क्याज़ि छ़ान्डऽनस
लुऽगमुन छुस न्यब्रऽ: यथ जहानस
न्यबर अन्दर छुस ना बऽऽ: कुनुई पानस
क्या छु करुण लभऽनस पानस ॥८॥

अनुग्रहमय छुक दय पानऽ: आसनस
अनुग्रह ति स्वभाव छा मशऽनस
मशऽनस त लभऽनस पानऽ: पात़ गण्डनस
क्या: छु करुण लभऽनस पानस ॥९॥

नाथ अऽऽसिथ क्वऽ: "दीन" नाव कुरऽहस
किथऽ: कऽन्य् छुस दीन, अऽऽसिथ च़ऽ: नाथ
दीन अनाथ नमऽ: दीनानाथस
क्या: छु करुण लभऽनस पानस ॥१०॥

# जान सुऽरतो

करतो करतो जान करतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥१॥

प्रथ वति टाठ्यो जान करतो
यति तति पानो जान करतो
यलि त्यलि हरदम जान करतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥२॥

पनऽ:न्यन परद्यन जान करतो
बुढयन लुउकट्यन जान करतो
योत ताम ह्यकख जान करतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥३॥

ॐ नम: शिवाय च़ऽ: परतो
ॐ नमो भगवती वासदीवो
जय गणपत दुर्गा वनतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥४॥

अल्लाह अखबर च़ऽ: परतो
दो आर्ट धऽऽट अऽन्जील परतो
गुरु नानकुन ग्रंथ, वारऽ: परतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥५॥

लूकऽ: दलवाञ्जुल चऽ: त्रावतो
जानस कुन योत कन थव्रतो
यस इ जान तस निश ति ह्यछतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥६॥

सुउरनई जान गव पान ज़ानुन
ती गव पूरऽ: भगवान मानुन
अन्दरऽ: पानऽसई जहान वछतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥७॥

सुउरखऽई जान त्यलि करनऽई जान
मन छुई अन्दर्युम अऽऽनऽ: आसान
मनऽ: किन सारिनई जान यच्छतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥८॥

गुऽडऽ: सुऽर जान अदऽ: कर सऽ जान
करिथ दफ करनवोल भगवान
तऽम्यसत्रन्द्य पऽऽञ्च कार वारऽ: वछतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥९॥

सुउरतो जान चऽ: जान यच्छतो
यच्छनुक बुउड ताकत वछतो
शिव यच्छनऽ: सऽऽती ज़गत बनि हो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥१०॥

यछिथई तऽम्य् कऽर ज़गऽतऽच्य् जान
जऽऽन्य् पतऽ: कुउडुन नुउन पनुन पान
पान ज़ऽऽनिथ व्ययि शिव बनतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥११॥

सुउरथऽई जान दीनऽ: कर चऽ: जान
लोल भऽर सारिनऽई भक्ती सान
लोलऽ: भक्ती सऽऽत्य् शिव लबतो
सुउरतो सुउरतो जान सुउरतो ॥१२॥

१९७६

# अख कथ

अख कथ मण्गऽ: हऽऽय व्ययि व्ययि भवगन
बोज़तम इ: ज़ारऽ:पारऽ: बोज़तम भगवन
यति आसऽ: तति आसऽ: इथऽऽ: आसऽ: तिथऽ: वऽऽ
ह्यस म्ये: रूज़तन चोनुई भगवन
याद म्ये: रूज़तन चोनुई भगवन
आश म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
उमेद म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
सायि म्ये: रूतज़न चोनुई भगवन
डुउख म्ये: रूज़तन चोनुई भगवन
भयि: म्ये. रूज़तन चोनुई भगवन
शय म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
कल म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
बल म्ये: रूज़तन चोनुई भगवन
इहऽऽय कथ मण्गऽ:हऽऽय चूरि पऽऽठय् भगवन
इहऽऽय कथ मण्गऽ:हऽऽय कऽन्य् तऽल्य् भगवन
ज़ान म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
शान म्ये: रूजतन चऽऽनी भगवन
दया म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
कृपा म्ये: रूज़तन चऽऽनीं भगवन
गर्मी म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
शर्म म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
हया म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
लिहाज़ऽ: म्ये: रुज़तन चोनुई भगवन
पास म्ये: रूज़तन चोनुई भगवन
मऽज़ऽ: म्ये: रूज़तन चोनुई भगवन
लज़ा म्ये: रूज़तन चऽऽनी भगवन
प्रसाद म्ये: रूतज़न चोनुई भगवन
शऽऽन्ती म्ये: रूतज़न चऽऽनीं भगवन
क्रऽऽन्ती म्ये: रूतज़न चऽऽनीं भगबन

# शारिका दीवी जयजय कार

करतम म्ये: पानऽई जल क्षमा
श्री शारिका देवी नमऽ:
ज़ा दोहऽ: च्यई परण प्यमा
श्री शारिका दीवी नम: ॥१॥

शक्ती छि नुउन रूप शिबऽ सुन्दुई
भीद छुनऽ: द्वन मऽन्ज़ आसऽ: नई
ती ज़ान्नऽ: सऽऽत्य् पान ज़ोनमा
श्री शारिका दीवी नम: ॥२॥

आदि शक्ती युसऽ: शिव: सऽन्ज़ऽई
ईश्वर स्वरूपस निश छि सुऽई
इमन म्ये:, आदऽनुक वाठ वुछा
श्री शारिका दीवी नम: ॥३॥

सत्गुऽरऽ: सऽन्दे प्रभावऽ: सऽऽत्य्
लुउग वाठ तस तऽस्य् सऽऽत्य् सऽऽत्य्
ती ज़ऽऽनिथऽई म्यति ती बन्या
श्री शारिका दीनी नम: ॥४॥

सऽन्यासऽ वृत चोन क्याः छु दुउर
निर्विकल्प निर्कान्क्षा च्ये मुउर
मुउर कर चोन शरनागथा
श्री शारिका दीवी नमः ॥५॥

परबतऽः सुऽई छये: ग्रासऽनई
इशऽः वऽर ति सुऽई छये: रोज़ऽनई
कुनी सुऽ जायि जायि वछतना
श्री शारिका दीवी नमः ।३॥

ज़गतस च्येः राज छुई करऽनुई
पनऽनुई च्येः साज़ छुई बोज़ऽनुई
यलि तस शरण रोज़ख मना
श्री शारिका दीवी नमः ।७॥

जय बनि जल जल तिमऽनऽई
जयकार इम तस करऽनऽई
जय लालऽः नी सन्तान छ्यना
श्री शारिका दीवी नमः ॥८॥

सोरुइ वुऽलुर छु श्रुकऽनऽई
सोपोरऽः यलि सुः नेरऽःनऽई
सोपोरि नऽई निशि द्रायिना
श्री शारिका दीवी नमः ॥९॥

दीवो दर्शुन दितऽः म्येः जल
सतगुऽरऽः सुन्द नुउन छ्यख चऽः बल
मल ज़ाल दीनस कर क्षमा
श्री शारिका दीबी नमः ॥१०॥

# संग्रहस्तोत्र का हिन्दी भाषान्तर

सुन सुन मालिक, सुख दुख मेरा
कम से कम, शब्दों में सारा
सुख है मुझको संग तुम्हारा
बिछडूँ तुम से, बनूँ दुखियारा ॥१॥

वहु सूक्षम हैं, ग्रन्दर मेरे
जो मल काले, तुम को छुपाते
हे प्रभू दूर, वह करके सारे
निर्मल ग्रपना स्वरूप दिखा दे ॥२॥

जगत से पूर्ण, तुम्हारा यह स्वरूप
ग्रविनाशी ग्रोर, चित् ग्रानन्द रूप
हर दम उसी में पूजूँ में तुमको
ज़िन्दः हूं मुर्दः, या ग्रौर कोई रूप ॥३॥

मैं ऐश्वर्यवान, ग्रत्यन्य सुन्दर
भाग्यवान पण्डित, बुहुत दरन्धर
यह सब ग्रभिमान, उसी को साजे
ग्रनुराग तेरा, जिसके ग्रन्दर ॥४॥

सो हे देवताग्रों, के देवता
ग्राप के ग्रभेद, ग्रमृत का न होना
गलने से जो, होता है पैदा
स्वभाविक ग्रभेद, ज्ञान सब वस्तू का
वह ही ज्ञान देकर, मुझको सर्वदा
ग्रपनी पूजा के, ग्राप लायक बना ॥५॥

कुछ ग्रचानक बने, ध्यान तुम्हारा
फिर बने दर्शन, ग्रोर मिलाप ग्रपना
पूजा महोत्सव, ऐसा है प्रभू
ग्रनुगृह से ग्रपने, दे मुझे सर्वदा ॥६॥

स्वभाविक स्वरूप, हर चीज का अपना
महोत्सव प्रभू. पूजा अर्चन का
एक दूसरे पर, दोनूँ है निर्भर
सचा भक्त इन, में विकसित है सदा ॥७॥

हर एक पदार्थ. बनावों प्याला
आप की पूजा, आसव निराला
हर इन्द्रय सुख, से पी कर सर्वदा
बन जाऊ में, मस्त मनवाला ॥८॥

जहाँ कुछ और, जानना ही न हो
सारा जगत, स्वप्रकाश रूप हो
चिदानन्द रूप, आप के उस नगर में
पूजा करू सदा, बसेरा मुझे दो ॥६।

दास की पदवी पर, मुझ को लगाया
अपनी इच्छा से मेरे भगवाना
क्या हूं ना पात्र, तेरे दर्शन का
चरण दबाना, काम करने का ॥१०॥

अनुगृह के समय, गलती से भी
मेरा पात्रवा को, सोचा न स्वामी
मुझ पर प्रभू अब, क्या है यह आबनी
स्वप्रकाश होने में, है देर लग रही ॥११॥

अन्दर बाहर की शय, में देखे गये
परा शक्ती का, संग पाये हुए
तीन लोकों से पू रण आप को सदा
पावों पूजा गया, अपने हाथो से ॥१२॥

जब चाहूं प्रभू, मेरा तेरे घर
रुकावट के बिना अटारी पेः चढकर
अनुगृहमय उत्तम, अमृत पी कर
सुख पाया हुवा, हो हमेशा बसर ॥१३॥

हर सुन्दर शय के, भोग मात्र से
अनभव में आने, वाले मज़े में से
भक्तशाली लोग हे, मेरे प्रभू
पूजते तेरा रूप, उसी सामग्री से ॥१४॥

खुद को खुद भासमान, हो कर हे प्रभू
जगत रूप खुद को, खुद खिलाते हो
नजारा इसका देख, आनन्द बना कर
अपनी मस्ती में. आप नाचते हो
तब आनन्द में, यह भाव मण्डल
विश्व भी झूमता, है नाचने को ॥१५॥

हे ईश जो इन, सब चीजूं को
निर्विकल्प जान कर, स्वरूप जानता हो
(विकल्क जान कर भी, स्वरूप जानता हो)
स्वस्वरूप पूर्ण, आनन्दघन उस
भक्त को जगत में, कब कोई डर हो ॥१६॥

ज़हर है मुझको, मीठा अमृत
आप से दूर हो ने से कलन्कित
हलाहल गले में, आप से अभिन्न है
मेरे लिए प्रभू, वह ही है अमृत ॥१७॥

प्रेम भरे शब्दो, से आप का गुणगान
करता यह मुख हो, सदा शूभायमान
आप की प्यारी, पूज़ा का काम
हृदय वाला हूं, में हरदम भगवान ॥१८॥

करतूतें अजब, आप की हैं यह
समझने की ताकत, किसको है यह
देके अपना स्वरुप, मेरे हाथ में प्रभू
मजे से देखने, देते नही यह ॥१६॥

सबका अपना ही आप, निर्विकल्प हैं आप
खा कर भी भूखे, अथाह गहरे आप
अभिन्न एक हो कर, में आप के साथ
करूं नित आप की, पूजा अस्तुती आप २०

हे मेरे गुरुदेव, हे ईश्वर स्वरूप
हे लक्ष्मन जू. हे निर्विकल्प रूप
पूजे "दीन" आप को, हर जगह हरदम
कामनायें बना कर, दीप धूप ।।क।।

"जय गुरू देव"

## वऽन्य्क्यन ज़ान

स्वतन्त्रा: स्वच्छात्मा स्फुरति सततं चेतसि शिव:
परा शक्तीश्चेयम् करण सरणि प्रान्तं उदित:
तदा भोगैकात्मा स्फुरति सततं जगत् इदम्
न जाने कुत्रायम् धुनिरनुपतेत संसृति इति

रठतो रठतो वऽन्य् भगवान
प्रऽऽविय छुख चऽ: पनऽनुई पान ।।१।।

त्रावतो त्रावतो हय गोम क्या:
त्रावतो त्रावतो वुऽन्य् बनि क्या:
वऽय्क्यनसऽई चऽ: रठ भगवान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।२।।

अऽऽसिथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान
ई छुख ती चऽ: ज़ान भगवान
अऽऽसिथऽई छुख अहं आसान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।३।।

गव इ: ति: नो व्ययि इयि ज़ान्ह
पुउकमुत पोन्य् नो ह्य ु र खसि ज़ान्ह
तिति अदऽ: सोरुई चोनुई पान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।४।।

बनि क्या: ओ़ह कुन जानि भगवान
कल तमिची आस तऽस्य् त्रावान
सुति हो सोरुई चोनुई पान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।५।।

गव इ पथ कुन गव तऽ मूद
इनऽ: वोल ज़ाण्ह ति छु नऽ मूजूद
वऽनक्यनसई रोज़ साविधान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।६।।

गोमुत केन्ह नो छुई बोजू
गछी केन्ह नो खुऽश रोजू
आनन्द ज़ान चऽ सऽऽरऽई ज़ान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।७।।

ह्यस थव ह्यस थव क्या: छुख चऽ:
करान ज़ानान किथऽ: कऽन्य् चऽ:
तऽथ्य् मऽन्ज़ आनन्द पनऽ:नुई पान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।८।।

अख अख शाह चऽ: रोज़ चेनान
शाहऽ मऽन्ज़ऽ: शाह चऽ: छुख भगवान
नऽ: चेनऽनऽ: किन रावान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।९।।

सोरुइ बदलान चऽ: नो केन्ह
बऽ तऽ चऽ: चऽ तऽ बऽ ज़ान नो केन्ह
योरऽ: तोरऽ: आसान पनऽ:नुई पान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ।।१०।।

स्वातन्त्र छुख चऽ: न्यर्मल पान
पानय पनुन पान गण्डान
तिति पनऽ:नुइ रूप आसान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ॥११॥

शिव नाथ ज़ोतान मऽन्ज़ हृदयस
अण्गऽ: अण्गऽ: भगवती छय फुऽलनस
इ: ज़गत सोरुई चोनुई पान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ॥१२॥

सत्गुऽरौ वुउनहय व्ययि व्ययि ती
ई छुख ती छुख ती हा ती
ती छय ज़ान ती ज़ान भगवान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ॥१३॥

"दीनो" दीन छुख नाथ छुख चऽई
सोरुई केन्ह चऽ: अऽऽसिथई
कमऽ:सऽई मऽन्ज़ चऽ: सोरुई ज़ान
प्रऽऽविथ छुख चऽ: पनऽ:नुई पान ॥१४॥

## बहुबलो बऽ हो बलो

चऽ: जल जल म्ये: निशन वुलो
बहुबलो बऽ हो बलो
बऽ बेमार चानी छलो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥१॥

दया पनऽ:नी म्ये: जल करतो
पाप शाप म्यऽऽन्य् जल हरतो
लायुम नाद वऽलो वऽलो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥२॥

वनय क्या: क्या: छु दवा म्ये:
मुउदुर दोद च्योन दूर्यर म्ये:
दिम दीदार बऽ युथ बलो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥३॥

च्ये: छुई दुउपमुत बऽ तस पलज़ान
म्ये कुन युस लोलऽ: सान इवान
लोल दिम ब: बरय लोलो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥४॥

चऽ: छुख प्रथ जायि मूजूदई
हर वक्तन वजूदई
अनुभव रूप म्ये: निश वलो
बहुबलो बऽ: हो बलो ॥५॥

मलौ सऽऽत्य् छयम अछय् म्ये: बन्द
मलौ सऽऽतिन फुटिम बन्द बन्द
म्यऽऽन्य् इम मल जल छलो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥६॥

पनुन पान पानऽसई खुउटमुत
पनऽने होछि कुऽले फुउटमुत
पनऽनुई पान बऽ कर लभो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥७॥

लभिथऽई छुम म्ये: सोरुई केन्ह
नाहकय प्योमुत म्ये: वेह
वेहऽ रुप ति चऽई छल्लो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥८॥

पूर्ण म्योन पनऽनुई पान
बहुबल छुस बऽ बुउड बलवान
ज़ान पनऽनी छि हलचलो
बहुबलो बऽ हो बलो ॥९॥

छुम नऽ: क्याजि भासान तिः
फरऽक केन्ह नो म्येः त च्येः इः
बऽ तऽ चऽः सोचि जल चलो
बहुबलो बऽः हो बलो ॥१०॥

म्येः कुउरमय पान अर्पन च्येः
वुछुम पान दर दर्पन च्येः
अकस तय बुथ छु कुन अलो
बहुबलो बऽः हो बलो ॥११॥

गुरौ वनिहम अकई कथ
अन्दर अचऽनऽच हऽऽवहम वथ
दुउपऽहम अथ्य् वती चलो
बहुबलो बऽः हो बलो ॥१२॥

"दीनो" सोच मो केन्ह कर
अहंकारुक त्राव फर फर
अहं रठ युस छु न्यर्मलो
बहुबलो बऽः हो बलो ॥१३॥

# टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य्

टाठयो कम च्येः जऽऽनथक टऽऽठ्य्
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥१॥

असली टोठ छुई अख भगवान
अनुगृह दोह त रात छुई च्येः करान
पऽऽन्छ़ कार तऽम्यसऽ द्य् वउछ्य् वारऽ पऽऽठय
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥२॥

सत्गुऽर छुई टोठ वारऽः पऽऽठ्य् ज़ान
तस निश अनुगृह आसु मंगान
सुई मोल मऽऽज्य बे गरज़ पऽऽट्य्
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अऽऽठ्य् ॥३॥

मोल मऽऽज्य् ति आसान भगवान
अगर छयई अऽछ्य् चऽः वारऽः पऽऽठ्य् ज़ान
कऽऽल्य् गछ़ान गऽऽब भगवानऽ सऽन्द्य् पऽऽठ्य्
तानऽः ह्यतऽ ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥४॥

अगर मोनुत पनुन, घनऽ घरबार
सोच वारऽः क्याः छु तिमन हुन्द सार
रऽऽछ़ तऽ मुउकलुन तम्युक दुऽख पूरऽ पऽऽठ्य्
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥५॥

शुर्य् बऽऽच़ ज़ुर्य् पुतर्य् गण्ज़रऽऽवथक
वुज़ऽलि कनि चुउप कडिथ कडऽनय् थख
अन ज़ऽऽन्य् बनऽनय वुउपरऽ सऽन्द्य् पऽऽठ्य्
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अऽऽठ्य् ॥६॥

यार अऽऽशनाव बनतऽः छी कऽऽत्याः
सऽर्य् तिमौ मऽञ्ज़ऽः वन द्राय कऽऽत्याः
लेन देन तिमन हुन्द कार पऽज्य् पऽऽठ्य्
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥७॥

बऽर्यां मऽऽन्य्मऽच्य् ह्यथन च्येः पनऽन्य्
दपान छय च्येः ओंह गछ़ऽस ब चलऽन्य्
च्येः त्राविहीय यऽत्य् सुऽ, यतीम सऽन्द पऽऽठय्
तानऽः ह्यत ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥८॥

अंग अंग छिई च्येः मऽऽन्य्मऽत्य् पान
करान ज़ानान तिम ज़गतऽच्य ज़ान
बेमार गछ़ित दिवान दुऽख पूरऽः पऽऽठ्य्
तानऽः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥९॥

शरीर इः पनुन मुउर छुई च्येः
पनुन पान ज़ोनमुत इः छुई च्येः
कऽऽल्य त्रावुन छ्यनिमति पलवऽक्य् पऽऽठ्य्
तानः ह्यतः ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ॥१०॥

प्राण छी ज़ऽऽन्य्मऽत्म् च्ये: पनुन पान
सऽऽत्य् छिनऽ: तिम ति: कऽऽन्सि गछान
नेरन मेलन शिन्यस, शिनिक पऽऽठ्य्
तानऽ: ह्यत: ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ।।११।।

अख पनुन आत्मा सोरुई केन्ह
तमि कुई ध्यान कर कुनि जायि बेह
सुई भगवान "दीनऽ:" चऽ: पऽज्य् पऽऽठ्य्
तानऽ: ह्यत: ज़ानतख टऽऽठ्य् अटऽऽठ्य् ।।१२।।

जय गुरू देव

# चिठी

जम्मू १०-६-७६

जय भगवान
कृपा निधान
सतगुरु मेरे
मेरी जान

जय जयकार है
दास बुलाता
रहो संग मेरे
मेरे दाता

मुझ को दे दो
बस इक शक्ति
सदा सर्वदा करों
आप की भक्ति

न मुझको छुए
और अभिलाशा
बस एक रहे मुझे
आप की आशा

कृपा का हूं
भिक्षु दीन
हे मेरे नाथ दो
शरण हूं लीन

ईश्वर स्वरूप है
आप का नाम
आत्म रूप दरशाना
आप का काम

दास
"दीन"

# करय घूर घूर

आदनऽकि यारऽ म्यानि वादऽ कर पूर
करय घूर घूर करय घूर घूर
मनस मऽन्ज़ चामऽत्य छिम म्ये: चूर
करय घूर घूर करय घूर घूर ।।१।।

दोपऽ:मुत छुई च्ये: मऽन्ज़ गीतायि:
भऽक्त्यन छुस थावान सिपर सायि:
छ्यदुन दिम पनऽन्य भक्ती हूर
करय घूर घूर करय घूर घूर ।।२।।

मनऽ: मन्ज़ऽलिस मऽन्ज़ बथरावय
कडिथ चूर अति बऽ जाय थावय
लोलऽ: रजऽवई बऽ: लमय भर पूर
करय घूर घूर करय घूर घूर ।।३।।

इथ रोज़तम म्ये: अछऽनई मऽन्ज़
ललऽ: नावत बऽ: कुउछनई मऽन्ज़
करय हो हो, म्ये: हावुम नूर
करय घूर घूर करय घूर घूर ।।४।।

शामऽ: लालऽ: छुख चऽ: शामऽ: रङ्गय
वाय बन्सी नय त चङ्गय
गिन्दनाव रास मसऽ: रोज़ दूर
करय घूर घूर करय घूर घूर ॥५॥

बऽ: छुस दास चोन पथर प्योमुत
अङ्गौ अङ्गौ हीन गोमुत
तिमन दित होश दोद कर दूर
करय घूर घूर करय घूर घूर ॥६॥

लायि हऽऽय नादा कति अनऽ: ज़ोर
वातऽ: कमि ताकतऽ: च्ये: निश ओर
आवलुक त पकनुक दि "दीनस" शऊर
करय घूर घूर करय घूर घूर ॥७॥

# जय शारिका

न्यर्मल इ: दीवी वछतना
जय शारिका जय शारिका ॥१॥

ऊतम चुऽलऽ: मऽन्ज़ऽ: ज़ायि सुऽ
बुउड यूग कोता: सादि सुऽ
तोति नरमी साष्टाङ्ग छ्य्ना
जय शारिका जय शारिका ॥२॥

भगवान ईश्वर स्वरूपऽ नुई
प्रकाश व्यर्मशऽ रूप वछतनई
ननिवानऽ: सुऽई गयि शारिका
जय शारिका जय शारिका ॥३॥

गुऽरऽ: भक्ती मऽन्ज़ लऽजमचई
रङ्गऽ: तऽम्य्सऽन्दे सुऽ रञ्जमचई
मशाल सऽऽन्य् सुऽई चमकना
जय शारिका जय शारिका ॥४॥

मऽञ्जहोरऽ: ज़ूनऽ: पछऽची इ: द्वय
जा दोह तऽम्य्सुन्द क्या: वनय
ऊतम इ: उत्सव ज़ानतना
जय शारिका जय शारिका ॥५॥

सम्सारऽ: मायि बऽ: वुऽलनसई
द्वपऽ:नम तमी मऽन्ज़ऽ: वुछतनई
फ़रज़ई छु, आत्मऽ: दर्शुना
जय शारिका जय शारिका ॥६॥

यमी मऽन्ज़: मऽऽज्य मुन्गऽमय
सबऽर तऽ शऽऽन्ती मऽन्जऽमय
चोनुई म्ये: डुउख छुम बुउड दुऽरा वडा
जय शारिका जय शारिका ॥७॥

दामानऽ: चोन यऽम्य् रूउटऽनय
गुऽरऽ: द्वारऽ: खऽऽली द्रावनय
गुऽन्ज पटवऽऽर्य् दर सपुरा
जय शारिका जय शारिका ॥८॥

दूरि प्यठऽ: "दीन" छुई अर्ज़ वनान
याद आस म्यति वारऽ: पऽऽठ्य थवान
दुऽख दऽऽद्य् म्यऽऽन्य् गालनावता
जय शारिका जय शारिका ॥९॥

न मांगों में कुछ भी, न चाहों मैं कुछ भी
भकशा है आप ने, मुझको तो सब ही
फिर भी ज़बान को, अरमान है इक ही
फिर भी जिगर को अरमान है इक ही
सदा कहती रहे, जय मेरे गुरु की

# शङ्कर भऽक्त्य्

जन्मदिन १९७६

शंङ्करस्य च ये भक्ता शान्तास्तद्गतमानसा
तेषां दासस्य दासोहं भूयां जन्मनि जन्मनि

शङ्करऽ: सऽन्द्य् इम छि टऽऽठ्य् भक्ति ज़न
पूरऽ: पऽऽठ्य् शऽऽन्ती बन्योमुत तिमन मन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽ:हऽऽ ज़न्मऽ: ज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।१।

इम सर्वदा स्वात्मऽ: स्वरूप ग्रासन
सोरुई ज़गत ग्रात्मऽ: रूपई ज़ानन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।२।

प्रथ कऽऽन्सि जानऽ: खोतऽ: जानई कान्छन
पाप शाप जगतस तिमई छि गालन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।३।

न्यबर्य् किन ग्रासन व्यवहारई करन
ग्रन्दऽर किन शिवस सऽऽत्य् ईकऽ:भाव हन हन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कऽन्ह तुऽहि भ्यन्न ।४।

तारवऽन्य् ग्रासन दासन त श्यशन
खारऽत्रऽन्य् छि तिम भवसरऽ फऽटमऽत्यन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽ:ज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।५।

श्यनऽ: वय वतऽ: तिम नऽन्य् पऽऽठ्य् ज़ानन
ग्रास छुख कुउरमृत मलन त व्यकल्पन
निहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽ:ज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।६।

पार छि गऽऽमऽत्य् शास्त्रन ग्रागमन
थुउद छि खऽतिमऽत्य् सारिनई उपायन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।७।

ग्रख हथ त वाह छिख टयन्डयन प्यठ ग्रासन
श्ययित्रऽ: ग्ररऽदाह त हथ छयख सुमरन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।८।

यन्दरियन प्यठ छि हकूमत तिम करन
प्राण त ग्रपान छिक नोकर ग्रासन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ।९।

न्यर्मल स्वरुप इम पनुन पान ज़ानन
ज़ऽऽन्य् रूप, थदि खुऽतऽ: थुउद, युस ग्रासन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न १०

ग्रातमऽच्य् ग्रग्नी तिमऽई परज़ऽनावन
संकल्प व्यकल्प तऽथ्य् मऽन्ज़ हुमन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्तुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न ११

ग्रहन्कार हर्ष काम क्रूद्ध ति त्रावन
शूक भय लूभ मूह पूरऽ: पऽऽठ्य् गालन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न १२

परमार्थ ज़ऽऽनिथ परमार्थऽई बनन
द्वयत ग्रद्वयत, ग्रकुई तिम ज़ानन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ ज़न्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽ: म्यानि छुनऽ: त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न १३

नांथ छि बन्येमऽत्य् पनऽःन्यन "दीनन"
असि छु तसली तिम असि तारन
तिहुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ जन्मऽज़न्मन
सत्गुऽरऽः म्यानि छुनऽः त्युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न १४

यमि किन नऽ युथ कान्ह तुऽहि भ्यन्न आसन
तवय तिरुन्दुई दास रोज़ऽहऽऽ जन्मन
लोलऽः सान नमित छुस ब अज ई मग्गन
इहोय वर्दान द्युत "दीनस" सत्गुऽरन

# वक्ति बद

बीबी की बेमारी में हस्पताल में लिखा गया

वक्ति बद यलि इयि रोज़ हुश्यार
भगवान मानुन छुई पूउज़ यार ॥१॥

करुन भगवानऽ सुन्द बदल्या जान्ह
सु नो यच्छान नाकारऽः जान्ह
अनुगृह योत छु तस कारुबार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥२॥

केन्ह छि वनान छु प्रालब
रूद नय प्ययि किथऽः वुउथि रब
मगर स्वातन्त्र भगवान निराकार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥३॥

कारमऽः मल छु असि ज़ोरावार
सोरुई वनान अऽस्य् छु पनुन कार
मऽशरोव भगवान वुउथ गटऽःकार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥४॥

करिथ थोमुत तऽम्य सोरुई केन्ह
प्रकृती हऽन्ज़ छय बऽड इ रेह
नाहऽकय द्युत असि पानस भार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥५॥

पऽऽन्च कार भगवानऽ सऽन्द्य् थव याद
सृष्ट, थ्यथ, संहार, म्यहर, कहर, बाद
अमि न्यबर ज़ानन वोल छु कफार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥६॥

गोडऽनिक त्र्यः छि तऽम्य् थौव्यमऽत्य् करिथ
कारण कृया कृयाफल वनिथ
पऽत्यम्यन द्वन हुन्द तऽस्य् यक्तियार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ।७॥

अनुगृह गव याद रोज़ि भगवान
निगृह गव सुई मशरावान
सुऽख दुऽख मानुन पकऽवुन कार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥७॥

सुऽखस मऽन्ज़ आसान छु दुऽख बन्द
दुऽखऽ मन्ऽज़ वुछ सुऽखुक आनन्द
ताप शहूल इथऽः पऽऽठ्य् बारम्बार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥८॥

सम्सऽऽर्य् सुऽख गव माया ज़ाल
दुऽखन वुउलमुत, खुऽश इवऽवुन नाल
अऽथ्य् मऽन्ज़ आनन्द वारऽः पऽऽठ्य् चार
भगवान मानुन खुई पुउज़ यार ॥९॥

प्रकृती छु चलावुन कारोबार
गुऽण त्र्येः छिस थवऽन्य् ह्यव्य यखबार
सुऽख दुऽख कति छु तलऽः बा सार
भगवान मानुन छुई तुउज़ यार ॥१०॥

मरुन ज्युन छुनऽः केन्ह आसान
पलव प्रोन त्रावान नोव छि छ़नान
दोद दग शरीरऽक्य् बुथ्य् ज़ोरदार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥११॥

असली दोद छु वनय बऽ: क्या:
शरीर इ: मानुन आत्मा हबाह
इहोय छु सोरुई केन्ह गटऽ: कार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥१२॥

पनुन पान करिथ बन्द शरीरम मऽन्ज़
ह्योनऽ: तऽ: निनऽ: आख ज़गतस मऽन्ज
वारऽ: वुछ विश्वरूप छुख निराकार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥१३॥

विश्वतीर्न छुख चऽ: विश्वरूप
छुखय त्रुक ज़ान चऽ: पनुन स्वरूप
दीह धनऽ: शुऽ बऽऽच कान्ह नऽ पुउज़ यार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥१४॥

जगतस मऽन्ज़ फ़ुऽल अख पोशा:
वछन वोल गछि फ़ुऽलुन ज़न पोशः
छुख आनन्द बऽऽगर ती बार बार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥१५॥

सोरुई केन्ह छु बस आनन्द
रोज़ऽखय वुद छुख पानऽ: आनन्द
"दीनऽ:" कुउर ईश्वर स्वरूपन पार
भगवान मानुन छुई पुउज़ यार ॥१६॥

# ज़िन्दगीत मरुन

कुस यति जिन्दऽ: रोजि कुस दोहऽ: मरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥१॥

युस कान्ह जान करि सु पानऽसुऽई करि
युस नाकारऽ: करि सु ति पानऽसऽई फरि
न्यर्मल पनुन पान युस थवि सु न मरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥२॥

ईश्वर स्वरूपस युस भक्तीं करि
लोल तमिसई योत पजि मनऽ: युस भरि
दुऽख तऽ दोद सोरुई तस यखदम हरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥३॥

दोह त रात युस क्या: गोम क्या गोम करि
यच्छान त काण्छान हरदऽ: थऽर ज़न हरि
सु छु नऽ: ज़िदऽ:, मऽरथई छु घरि घरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥४॥

भगवानस युस पनुन पान पुशरि:
पञ्चकृत तऽम्युसुन्द सुऽर्य् सुऽर्य् व्ययि सुऽरि
रिन्दऽ. ज़िन्दऽ: मरित जान्हति नो सु मरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥५॥

सुऽखस त दुऽखस भीद युस न करि:
दोह त रात श्हुल ताप ह्यू तिमन ध्यान करि
गमऽ: रुउस त फिकिरि: रुउस सुई योत दोह भरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥६॥

प्रथ कान्ह द्वन्द युस आनन्द गऽन्ज़रि:
पनुन त परुद युस पनुन पान परज़नि:
तस नो ज़ान्ह ति महा काल केन्ह फरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥७॥

छ्यनऽ: रुउस नाराण नाराण युस करि
ह्यसऽ: सान पनुन पान पानय सुऽरि: सुऽरि:
सु नो ज़ान्ह ज़ाव सुई नो ज़ान्ह मरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥८॥

पानो ह्यसऽ: रोज़ मुउर आत्मस फरि:
दीह अभिमानई दोद छुई लरि लरि
त्रावखय इहोय योत दय च्ये: लोल भरि
पर मनऽ: घरि घरि हरऽ: नाराण ॥९॥

शुर्यं बऽऽच् धनऽः दौलत युस पान परि
म्येइ कुउर लूकऽः व्यवऽहारऽः युस करि
सु कति अथि इयिः, सु कर न मरि
पर मनऽः घरि घरि हरऽः नाराण ॥१०॥

दयी छु करऽःवुन युस यति सुम्मरि
तस रुउस किथऽः कऽन्य् कान्ह केन्ह ज़ान्ह करि
कर्यं कर्यं सोरुई नऽ करि नऽ मरि
पर मनऽः घरि घरि हरऽः नाराण ॥११॥

ज़गतस मऽन्ज़् रोज़् न्यर्मल घरि घरि
जानई कान्छ, कर, यस तस घरि परि
शक्तिपात ती गव, करई दय अरि अरि
पर मनऽः घरि घरि हरऽः नाराण ॥१२॥

## अऽऽद्य् अऽऽसऽम् त
## वुऽन्य् नय छ्य्म नय

बीबी के मरने के तीसरे दिन (२५-४-७७)

अऽऽद्य् अऽऽसऽम त वुऽन्य् नय छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥१॥

कुउर म्ये व्यवऽहार वरिहे बदि नऽई
वुछ म्ये लोला समये वदि नऽई
अथि हार ति वुऽन्य नय छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥२॥

ब्रोण्ठऽः कनि दोह त रात रूज़ित
लोलऽः कथऽः तऽम्य् सऽन्ज़ऽः बूज़ित
प्रानि यादऽः रुउस केन्ह नय छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥३॥

अऽर ज़न अऽऽस नऽ ज़ान्ह ति रोज़ान
मगर लोल म्योन कोताः सुऽ भरान
मनः मऽन्ज़य नेरान छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥४॥

तेशल मन तऽम्य्सुन्द क्याः वनय
नेशऽः नावान प्रथ कऽऽन्सि क्या वनय
कथऽः करऽःवऽन्य् वुऽन्य् नय छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥५॥

बानऽः कुठ अऽऽस प्रथ कऽऽन्सि सुऽ
बरान माय अऽऽस प्रथ कऽऽन्सि सुऽ
माय तऽम्य्सऽन्ज़ मशान छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥६॥

दुऽख म्येः दितुमस कोताः बऽ वनय
सुऽख तमि ज़ान्ह तुल नऽ बऽ वनय
फीरिथ केन्ह ति वनान छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥७॥

कथऽः कर्यं कर्यं गयि बुऽन्य् तुउत सुऽ
महा गणिश्यश सऽऽत्य् गयि तुउत सुऽ
शिवऽः लूकऽः योर कुनि नय छ्य्म भय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥८॥

"दीन" वनऽः कऽऽत्य् गुण बऽ तऽम्य्सऽन्द्य्
गीत ग्यबऽः कऽऽत्य् अज़ बऽ तऽम्य्सऽन्द्य्
ज्यवि शक्ती तीच् म्येः छ्य्म नय
कुन गयि नय तोति यति छ्य्म नय ॥९॥

# मनऽः म्यानि क्याः गुउय

४-५-७७

मनऽः म्यानि क्या गुउय क्याज़ि छुख वदान
पुउकमुत पोन्य छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥१॥

सोरुई थौमुत तऽम्य् बनऽऽविथ
छुनऽः कान्ह आमुत तोरऽः फीरिथ
व्यचार क्याज़ि छुख न अज़ चऽः करान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥२॥

लेखनऽः आमुत छू हुऽखमुत
अथ कलम छुनऽः कऽऽन्सि, ज़ान्ह डोलमुत
क्याजि छुख फिकिरऽः पगऽहऽचऽः करान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥३॥

वुन भगवानन मऽन्ज गीतायि
मरनस शूक छु: वक्त जायि
मरनुई छु: नऽः केन्ह आसान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥४॥

पुउज़ छू ईति कालुक सम्बन्ध
जऽऽविज्यौ तारौ छुकरान बन्ध
छ्युन यलि छुनऽः पतऽः चारऽः आसान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥५॥

पुउज छु दुऽख छु बडऽः सखऽत् इह
सती शव ह्यथ दर-ब-दर शिव तिः
सुति अऽऽखरस अफसूस ख्यवान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥६॥

राम जीयन कऽर जऽऽरी वान्दरन
लभि-तोन साता, निथिः रावनन
बऽऽलियस च़ रि पऽऽठ्य तीर लायान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥७॥

वदनऽः मऽन्ज़ऽः नेरि क्याः च्यानि सोच
अशोचान अनशोचस्तम खोज
दयि करनस कोनऽः छुख चऽः नमान
पुउकमुत पोन्य् छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥८॥

ईश्वर प्रणिधाण गवऽः बा ई
ज़ऽऽनित मशरावुन ब्ययि तीं
मशनस यादाश्त, आस बनावान
पुउकमुत पोन्य छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥९॥

इः सूचित छू वुऽन्य् सम्भालुन
सत्गुऽरः हुकुम छू पूरऽः पालुन
ती गव गाटऽःज़ार ती गव ज्ञान
पुउकमुत पोन्य छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥१०॥

अज़ ताम गुउण्ड कमर गृहस्थ करनुक
ब्रोन्ह कुन चारऽः कर दय लभऽःनुक
ज़गतस मऽन्ज़ रोज़ धैरऽः सान
पुउकमुत पोन्य छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥११॥

"दीनऽः" गछ शरण वुऽन्य् शिव नाथस
चरणऽ पूजा कर सत्गुऽरस
तमी सऽऽत्य आसि खुऽश सुऽति गछान
पुउकमुत पोन्य छा ह्यु र ज़ान्ह खसान ॥१२॥

# मच़र या अहं परामर्श

त्वमेवात्मेश सर्वस्य, सर्वश्चात्मनि रागवान्
इति स्वभावसिद्धां, त्वत् भक्तिं जानञ्जयेज्जनः ।।
श्री-शि-स्तो १-७

चीज़ं ह्यकि इः ज़गत ज़ऽई बनिथ सोरुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥१॥

छु ना मच़र ख्यीं ख्यी ब्ययि ति ख्युनुई
छु मगर इ: ति कूशिश पान ज़ानुनुई
नवि नवि मऽन्ज़ऽ: वूछि हे, मज़ऽ: पनऽ: नुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥२॥

दातऽ नावान कऽऽत्य् दोहऽ दोहऽ शुम्शान
ज़ालनय ब्ययि ख्यनऽ: ची सऽन्ज़् छि करान
ज़न पतिम्यन छु नऽ: ज़ान्ह ति मरऽनुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥३॥

दोह् त रात कूशिश करान अऽस्य् अकऽई
इथ: तिथ: पनऽनुई पान खुऽश थवऽनुई
नतऽ: वनतऽ. क्या छु, रोवमुत लभऽ: नुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ।४॥

ख्युन च्युन वुउथुन बिहुन वछुन या ज़ानुन
करुन केन्ह सोरुई पानई छु मनऽवुन
ज़ाननऽ: वरऽऽय तिः छिन अऽस्य् ज़ऽऽनिथई
या छु मच़र या अह परामरशी ॥५॥

करन वऽऽल्य् कुउर इ: सोरुई विचित्र
अकिस ह्यू न अक चीज़ बदलवुन छु चित्र
चित्रऽ वहिकऽ: हारऽ: मऽन्ज़ऽ: सोरुई छु अकुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥६॥

मच़र आवऽ: तस किनऽ: असि छु गिन्दान
गिन्दऽ:वऽनि नज़ऽरि वछऽ:वऽन्य् छि रिनदान
गिन्दुना ह्यनऽ: द्यनऽ: रुउसतुई छु सोरुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥७॥

ह्यु न द्यु ऽन वनतऽ: कथ छि वनान
सऽऽरी लूक अऽथ्य् मऽन्ज़ छि रोज़ान
गाशदार अथ मऽन्ज तिः अहमई ज़ानऽनई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥८॥

"दीनऽ" ज़ान वारऽ: पऽऽठय् छुनऽ: केन्ह ति मच़र
छुस ब सोरुई मुउठ सुई छु इ: हच़र
मुउठमुत ति छुनऽ: केन्ह हेह छु अपज़ुई
या छु मच़र या अहं परामरशी ॥९॥

# यूगी

ग्राहग्राहक सम्वित्ति सामान्या सर्वदेहिनाम
योगिनां तु विशेषोऽयं संबन्धे सावधानता ॥
वि. भैरव.

लेन द्य़ेन कारुबार लूकन छु ह्यु वुई
यूगियस नज़र अति तिः लक्ष्यस कुनुई ।१।

लक्ष्य छुस प्रमाता तऽस्य् छु वुछान
कारुबार करऽ:वुन ति तऽस्य् छु लभान ।।२॥

अहं नय आसि कारुबार कुस करिः
लेनऽ: द्य़ेनऽ: मऽन्ज़ऽ: अहमई सु: खरऽ: करिः ३

वुछि प्रमेय त प्रमाण अहमस मऽन्ज सुः
ज़ानऽ: वऽन्य् हुन्द सम्बन्ध ज़ानि क्या छु ॥४॥

अऽथ्य् मऽन्ज़ वुछि सृष्टी चक्र सोरुई
पऽऽन्चऽवय दयि कार वुछऽवुन रोज़ी ॥५॥

ह्यस थवि ह्यस थवि क्पुथ क्या बऽ छुस
भऽऽरव सदाशिव ज़ीवऽ: रूप बऽ छुस ।।६॥

"दीनऽ:" कर अमिसई यूगियस नमस्कार
सोन गुऽरऽदीव युथुई भविनस जयकार ।।७॥

# शाम्भवोपाय। अनुसन्धान

रावर मो अक सात पानस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१॥

छुख पानय चऽ: ज़ाननवोल
पानय छुख ज़ऽऽञ्नारावनवोल
ती गव "चैतन्यमात्मा" बस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२॥

पानय करऽथ च्ये: पनऽ:नी ज़ान
ती बन्यौ अनज़ाऽऽञ्ञ हुन्द अदऽ: ज्ञान
आनव नऽऽव्य् ब्योल प्यौ ज़गतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥३॥

छुस न बऽ: पानऽ: शिव ज़ोनुथ च्ये:
इ: शरीर छुसना वारऽ:कारऽ: ब्ये:
इयम ज़ऽ: बुथ्य् छी अथ आनऽवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥४॥

अथ कुलिस लञ्जि द्रायि ज़ोरदार जऽ:
मायी त कारम मल बन्योख चऽ:
इथय पऽऽठ्य् अद्वयत वोत द्वयतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥५॥

छुस बऽ: कुस्ताञ्य् कम गोमुत
दीह ग्रं लरि बऽऽचऽई बन्योमुत
कारुबारुक शरीर छुस बऽ: मस
अनुसन्धान ह्यस कर ह्यस ॥६॥

इमऽई त्ये: रूप छि चान्यन मलन
निवऽ: वऽन्य् इमय छि पूर्णऽ: बलन
कुउरहक दर-ब-दर मऽन्ज शरीरस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥७॥

ब्यह्ऽनऽच प्यण्ड छय मऽऽज्य मातृका
ज़ानऽनय लऽऽज्यथन कथन कुन हबा
पीठीश्वीर्य: अऽन्द्य् अऽन्द्य् आत्मस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥८॥

अनज़ऽऽन्य् किन इ: वागीश्वरी
मलन त्यन सग छये: दिवान इ:
ज़ानुन पार गछ् यथ ज़गतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥९॥

ज़ानऽनस प्यठ छु: गण्डुन कमर
दयि दयायि सऽऽत्य् मेलि: सु समर
पूज़ा कर "उद्यमो-भैरवस"
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१०॥

यलि इ: मऽऽज्य् चऽ: परजऽ:नावऽह्ऽऽन
शक्ति चक्र अनुसन्धानस अनऽ:ह्ऽऽन
गालि पानय भीदऽ: रूप ज़गतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥११॥

त्यनऽ: वऽन्य् दशायन मऽन्ज़ करुस पूज़
ज़ाग्रत स्वपुन स्वशप्त इमन नाव बूज़
अदऽ: पानय दियी सुऽई पूरऽ: ह्यस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१२॥

ज़ाग्रत गव ह्यस रोज़ि पनऽ:नुई
नतऽ: मा जगतस मऽन्ज़ नचऽ:नुई
यूगी छुई हुश्यार ततिनस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१३॥

स्वपनस द्वयिम नाव ज़ान चऽ: व्यकल्प
ज़ागरऽच मऽन्ज़ सम्सऽऽर्य् संकल्प
नतऽ: मा न्यन्दरि: मऽन्ज़ सेनिमा बस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१४॥

स्वशक्तीं छुनः केन्ह नाव न्यन्दरी
जाग्रऽच हुन्द ह्यस यलि डली
मायायि हन्ज़ छ्यः इहऽऽय खसऽःवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१५॥

त्र्यनऽ वऽन्य मऽन्ज़ यलि रोज़ि हुश्यार
तुर्यी होश थवि वृछिः चमत्कार
क्या छु परवाय तस "वीरेशस"
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१६॥

अमि चमत्कारऽः सऽऽत्य् गछान हऽऽरतस
रहित रोज़ित गोमुत वुछ तस
अलौक्यक युथ वुछि मऽन्ज़ जगतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१७॥

यच्छा छ्यस बनान "उमाकुमऽऽरी"
यस यच्छि तारि यस यच्छि मारी
सोरुई त्राव रोज़ जागि शिवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१८॥

इः वुछिः तिः छुस पनऽःनुई शरीर
शरीरस ति छु वुछऽःवुन तमाशिगीर
आत्मऽः नज़रऽई छ्यस प्यठ जगतम
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥१९॥

चित प्रकाशस मऽन्ज़ मिलऽःवुन मन
त्र्यन दशायन मऽन्ज़ अहं बन बन
अभीदऽ रूपऽः किन वुछुन सम्सारस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२०॥

शुऽद्धऽः तत्वुक करुन दोह रात व्यचार
सुई अनुसन्धान, रूद तस कार
शिवऽः सऽन्ज़ शक्ती अथि आयस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२१॥

विश्वात्मा शिव छुस बः ज़ोनुन
तर्क वितर्क आत्मऽः ज्ञान मोनुन
सुई प्यो वऽऽतित असऽल तत्वऽस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२२॥

लूकऽः आनन्द तस बन्येयिः समाध
दोह त रात ज़गतुक रुत चऽः साध
समाधि सुऽख द्रास लूकऽः आनन्दस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२३॥

यलि करि सर्वदा शक्ति हऽन्ज्य् ज़ान
इः यच्छि तिः छु बनऽऽवित ह्यकान
सऽऽरी ताकत छिस मऽन्ज़ अथस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२४॥

पण्चमहाभूतन स्थुल छु करान
तिमन ब्ययि अलग अलग ति वछान
इथुय शक्ति अनुमन्धान फुउल तस
अनुसन्धाज़स ह्यस कर ह्यस ॥२५॥

पाट पूज़ ज़प स्तुता करुना
अनुसन्धान रूपय तिम आना
ज्यतऽः मर गऽज अनुसन्धऽऽनियस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२६॥

शुऽद्धऽ व्यद्या त्यलि इयस वुउदयस
माने ज़ानि मात्रिका चक्रस
थख छु कडान सुई मऽन्ज़ अहमस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२७॥

शक्ति चक्र सुई छु परज़ऽःनावान
सृष्ट थ्यत संम्हार अनुग्रह जानान
निग्रहस नाश छु गछान पूरऽः तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ॥२८॥

अनुसन्धानऽः सदरस छु फटान
अहं परामर्श इः गव ती ज़ानान
ई छु ती जान "दीनऽः" शिवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस ।।२६।।

# तरीका

किस ने कब जाना है कोई भी तरीका उसका
कि तरीके से बेतरीका है तरीका उसका ।।१।।

सब तरीके हैं उसी के, है वह इन सब के अन्दर
फिर भीं इन सब से है, बालातर ही तरीका उसका २

बन के बनना क्या है बनने वाले यह तो सोच
तुझ में क्या कम है जो ढूँडे तरीका उसका ।३।।

खुद खुदाई खुद है खोया, खुद है अब वह खोजता
न ही खोना न ही पाना, जान यह तरीका उसका।४।

जो भी देखो वह ही तू है, है तो सब कुछ तू ही'दीन'
किस वहम में तू पड़ा है ढूँडे तरीका किसका ।।५।।

# आः हा

अऽज्य् ज़ोन म्येः आः अडज्य् ज़ोन म्येः हा
स्वर व्यन्जन पर्यं, पर्यं, कुउर म्येः आः हा ।।१।।

छ्यम दया चऽऽञ्च इः ज़ोनुम म्येः क्याः क्या
मुउच्यौ यथ सऽऽर्सई पथ कुन आः हा ।।२।।

जय जय कार छुई जय जय भगवन
दर्शुन चोनुई छु यकदमइ अहं ।।२।।

आः हा परिथई कुउर अहं अहं
सारिनई दाद्यन बस कुन मरहम् ।।४।।

दीनुन ईश्वर स्वरूप जीं महात्मा
स्वरूप पनऽःनुई छू सोरुई स्वात्मा ।।५।।

ई छु ती छु ती ज़ोन अज़ म्येः
कडरवऽ दया ई ही गुडरऽ.दीवः म्येः ।।६।।

गुडरऽः दीवऽः छुख चऽः प्रकाश व्यमर्श
ती ज़ानुन छु पुउज परामर्श ।।७।।

कुउरमय म्येः अर्पण सोरुई केन्ह च्येः
थौथम न ज़ानुन न ज़ानुन केन्ह ।।८।।

स ति गव आः ह ति गव आः
त्रशूलाः मऽञ्ज़ बाग जानव क्याः क्याः ।।९।।

सूहं अह सौः सोरुई केन्ह इः
ओं छु शिव छु शिवशक्त छू इः

वुडन म्येः क्याः क्या ज़ानान छुस नऽः
ज़ानुन छा केन्ह ज़ानान छुस नऽः ।।११।।

ज़ोनुम अज़ न ज़ानुन छु ज़ानुन
ई ज़ानौ ती सोरुई मानुन ।।१२।।

पथ ब्रोन्ह सोरुई केन्ह छु अपज़ुई
वनवयनसई नऽच्य् नऽच्य् व्ययि नचुनुई ।।१३।।

नचि वया नचि कुस नचिथई छु इः
ई छु त तीं छु व्ययि केन्ह छुनऽः इः ।।१४।।

दीनो बस कर ज़ान दीनानाथ
ईश्वर स्वरूप युस ज़गतस अख नाथ ।।१५।।

# श्री शारिका कर चारऽः लोलो

करऽः किथऽः कऽन्य् ज़ारऽः पारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥१॥

छ्यक चऽः दीवी अष्टादश बुऽज़ी
दोयि बुऽज़ दर्शुन ईशऽःबऽर छुई
तारान भक्त्यन तारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥२॥

भगवान शंकर ईश्वर स्वरूप
शक्ती तऽम्यसऽन्ज़ नुउन चोन रूप
गुऽरऽः दया हुन्द बानऽः भारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥३॥

श्यशन हऽन्ज़ छ्यख चऽई पानऽः सरताज
थौमुत छुनय सत्गुऽरन कलस प्यठ ताज
क्याज़ि आसि कऽऽन्सि केन्ह खारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥४॥

करख यस कुन चऽः स्यज़ अख नज़र
तरि भवऽः सरऽः रोज्यस नऽ केन्ह कसर
चलऽनस पापऽन्य् भारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥५॥

ज़नम द्यन अज़ चोन वनऽः क्या बऽः
अर्पन क्या करऽः कथ लायक बः
अडऽः कजि ज्यवि वनय ज़ारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥६॥

छुस न बऽः गुऽणमात केन्ह ति जान
लुऽबर लोलो छुस तोति करान
सत्गुऽरन दितुःनम कारऽः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥७॥

गुऽण चऽऽन्य् वनऽऽवऽन्य् छा केन्ह मखोल
ईथुई तिथुई म्यति भुउर भक्ति सान लोल
"दीनस" ब्ययि क्याः छु कारः लोलो
श्री शारिका कर चारऽः लोलो ॥८॥

# बीबी को चिठी

मरने के नव मास पश्चात

अकि लटि रुय हाय बीबी म्यऽऽनी
होल म्येः कुउरनम लोलन चऽऽनी
लोलन चऽऽनी त शोकन चऽऽनी
होल म्येः कुउरनम लोलन चऽऽनी ॥१॥

जायि जायि छ्ऽऽन्ज़मख लभःहऽऽथ कुनि जायि
जायि जायि वुउनुनम छुस न कान्ह सऽऽनीं ॥२॥

तसला क्याः करऽः टऽऽठिस जानस
कुनि वति छुम न तसला इवऽऽनी ॥३॥

अोरऽः योर फ्यूरुस मश्यम ना इः दुऽख म्येः
करऽः क्याः बिलकुल छुम नऽः मशऽऽनी ॥४॥

कान्ह ति वुछुम नऽः कुनि जायि पनऽःनुई
खन्दऽः म्येः कऽरिहम छू वदऽऽनी ॥५॥

बन्द बऽ कुउरथस लोलऽः रज़न मऽन्ज़
चऽट्य् चऽट्य् छ्यम नऽः अख ति छ्यनऽऽनी ॥६॥

लुऽकऽःचार बऽऽज्य्गार दीहस खरीदार
यलि चुउल दऽहऽ रुस नार रोद दज़ऽऽनी ॥७॥

हुस्नऽः जोदूगार कोताः छु खूंखार
चुउटऽमुत कलऽः रिन्द छिस अनान डऽऽलीं ॥८॥

दोह तारऽः पतऽः ग्रोस मनऽःनई कारुबार
खऽऽर्य् खऽऽर्य् घरऽःबार ब्ययि खारऽऽनी ॥९॥

मनऽन हुन्द सु रिश्ता: कोता: मुधुर ग्रोस
सुऽख दुऽख इकऽःवटऽः ग्रऽऽस्य् चालऽऽनी ॥१०॥

वुऽन्य ग्रायेय दोह ग्रात्मऽकि मेलऽःनऽव्य्
ऋऽऽठ्य् कालन कर जोरि जुदऽऽई ॥११॥

ग्रात्मा छा ज़ान्ह ज्यवान या मरान
वऽन्य् वऽन्य् बुऽज़ इः ह्यनऽः ई बोज़ऽऽनी ॥१२॥

लूक ग्रऽऽस्य वनान समय भरान गाव
ग्रनुभव कुउर म्येः, तिग छि खुलऽऽनी ॥१३॥

ग्रख ग्राशा छ्यम च्येई सऽऽत्य् मेलऽनऽच्य्
तऽथ्य् ग्राशाइ प्यठ मरिथ ज़ुवऽऽनी ॥१४॥

क्याताम छुम वुऽनि यतिनस बाकी
मुऽकऽलिथ "दीन" ति च्यऽइ कुन इवऽऽनी ॥१५॥

## सम्सार

सऽन्य् सऽन्य् सऽन्य् सऽन्य् वुछ सम्सार
सऽम्य् सऽम्य् सऽम्य् सऽम्य् ज़ान सम्सार
सनिथ समख वुछित सार
समिथ ब्ययि सन छुख चऽई सार ॥१॥

कुऽलय गजी स्वलय रठ
स्वलय सुगन्धी कुऽलय ऋठ
विश्वमय वुऽछ्थन ग्रज़तामत
वितीर्न वुछ पऽऽन्य् पानऽः सार ॥२॥

ई छुख ती वुछ क्युथ ग्रासान
इ बन्यौ ति बन्यौ चऽई ग्रासान
सम्सारस सन ग्रदऽः रठ सार
समिथ ब्ययि सन छुख चऽई सार ॥३॥

सम्सुत्र करिथ पानसः छोण्डुत सार
सम्सुत्रऽः मऽन्ज़ऽः लब सुऽम सम्सार
सऽऽर्य् सऽऽर्य् ब्ययि सम ग्रदऽः लब सार
समिथ ब्ययि सन छुख चऽई सार ॥४॥

फिकिरऽः त गम चऽः त्राव पथ कुन
नम पूरऽः पऽऽठ्य् गुऽरऽः चरनन कुन
"दीनऽ" वुछ पनऽःनुई पान चऽः सार
नतऽः छुई सम्सार वुउड शाहमार ॥५॥

१९८७

## चऽई

नोट : सब च को च़ पढिये

कऽम्य् ज़ोन ग्रज़ ताम क्याः छुख चऽई
चऽई हा चऽई ऽचई चऽई चऽई ॥१॥

ग्रऽऽसित छुख न केन्ह ग्रासान
भऽऽसित छुख न केन्ह भासान
ग्रऽऽसित नऽ ग्रऽऽसित चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥२॥

स्वप्रकाश ति हा छुख चऽई
ग्रनिगटि मऽन्ज़ गाश ति चऽई
ज़ऽऽनिथ नऽ ज़ऽऽनिथ चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥३॥

ख्यनऽः ख्यनऽः ति हा छुख चऽई
जायि जायि ति छुख बस चऽई
यति तति यलि त्यलि छुख ग्रख चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥४॥

अनुभव यऽम्य कुउरनख चऽई
ज्यवि मऽन्ज़ऽ: द्राव नऽ, तस न्यबर ती
तमि पतऽ: सु, बन्यौ पानय चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥५॥

ओरऽ: योरऽ: ति वुछुमख चऽई
वुछमुत वुछान, वुछवुन चऽई
वाद व्यवाद, सोरुई चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥६॥

म्ये: द्वपऽ: मय, ब ति छुस चऽई
ओरऽ: द्वपऽथम . बऽई छुस चऽई
केन्ह ना भ्यन्न, बऽ तऽ चऽ चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥७॥

ज़ोन्नख कऽम्य, अज़ तासत
वुछनख कऽम्य् कर कतिनस
न वुछमुत, न ज़ोनमुत चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥८॥

"दीनो" अनुभव कर वारऽ: चऽई
पनऽ: नुई पान पूरऽ: छुख चऽई
सराब सर आब ति चऽई
चऽई हा चऽई चऽई चऽई चऽई ॥९॥

## प्राराण

प्राराण बऽ गुऽरऽ: दीव म्ये: स्युद वुछिना
तऽस्य शिव: नाथन बऽ पाद वुछिना
पादिकमलन सऽऽत्य गऽछ म्ये: ज़ान
छुम लोल तिमऽई दोह रात वुछिना
छुम होल दिलस गुऽरऽ दर्शनऽ: कुई
क्या सना अऽछयबरित सुई वछिना

पादि कमलन हुन्द मञ्गस अमृत
अमृत च्यथ अमर च्यथ वछिना
छुस आमुत बऽ: वेरि दर्शनऽची
कुनि किन म्ये: कुन क्या वारऽ: वछिना
यमि नज़ऽरि वुछुन शरिका दीवी
रामीश्वरस, तिछी म्येति वछिना
पान कुऽर म्ये: अर्पन तमिसई योत
केन्ह ति ज़ांह तस म्यन्न कुनि वछिना
सु छु भक्ती त मुऽक्ती भऽऽगरान
म्यऽऽन्य् वऽऽर्य् कर हिश वाति वछिना
अकि नजऽ:रि: तऽम्य् सऽन्ज़ी सऽऽतिन "दीन"
यमि भवऽ: सागरुक पार वुछिना
(तऽम्य सऽञ्जी कोंशिहुन्द पार वुछिना)

## अजब दोद

मरा दर्देस्त अन्दर दिल
अगर गोयम ज़बाङ सोज़द
दिगर दम दरकशम तरसम
कि मगजे उस्तखाँ सोज़द

दोदह छुम अजब अन्दर
कडन न्यबर दज़ान छ्यम ज्यौ
थौवुम वुञ्य अन्दरय अन्दर
त वसि ताञ्य सूर गछित म्ये: प्यौ ॥१॥

छु इ दोद च्योन कोताह कूठ
इथ वऽऽलिञ्ज अन्दर बियठ
दिवान छु मऽज़ऽ: ट्रताह म्यूठ
खुऽश करुण ति खरऽनुई गव ॥२॥

इनस च्ये: निश करेयम सऽन्ज़
रोज़ऽहऽऽ चऽऽनिसई घरस मऽन्ज़
बूजुम छुख चऽ: प्रथकुनि मऽन्ज़
घरऽइ घरऽ: च्योन बनिथ म्ये: गव ॥३॥

मशरुम यनऽ: पनुन चऽ: पान
म्यच्यियो इ: पान वुछुम जुव ज़ान
तनय प्यठऽ: गोस बऽ: हऽऽरान
हऽऽरऽऽनी ति मशरब प्यव ॥४॥

वुछुम वुऽन्य छुस न म्यचि लऽर केन्ह
नाहकय प्योमुत म्ये: वेह
करतम दूर जल इ: हेह
म्येह क्या: गव त म्येह क्या: गव ॥५॥

गोमुत छुम न केन्ह ज़ोनुम
चऽई बऽ: बऽ: चऽई मोनुम
मऽऽन्य् मऽऽन्य् तोति ब्यियि मशरुम
अन्दर केन्ह नो सनिथ म्ये: गव ॥६॥

अन्दर अछ़तम जुवऽ: म्याने
गाश अन्तम रवऽ: म्याने
बोज़ख कथऽ: चऽ कवऽ: म्याने
सोनन कुन यारऽ: सुन्द कन गव ॥७॥
(ज्यवि ति वुऽन्य् कजर म्ये: प्यौ)

करऽ: हऽऽय मनि मऽन्ज़ ब जाय
पूज़त तऽत्य् छ्यम इ: राय
अऽऽसिनय रुमऽ: रेशुन आय
वऽन्य् वनिई म्ये: आय हो गव ॥८॥

ही गुऽरऽ: दीवऽ: वनिथम कथ
पनऽन्य दिचऽथम म्ये: सुमरथ
वन्दऽ:हऽऽय जुव जान त रथ
वनुन चोनुई म्ये: स्यद्ध हो गव ॥९॥

हा "दीनो च्ये: क्या: गोमुत
लबुन छुनऽ: केन्ह न केन्ह रोवमुत
दयन पान नऽन्य् पऽऽटय् थौवमुत
ई छु ती दय हो गव ॥१०॥

सु नूरी इ: नूर वछ़तन
नूरस मऽन्ज मार वछ़तन
नूर तय नार कुन वछ़तन
द्वयत गव अख ती ज़ुऽन गव ॥११॥

# क्याज़ि हर्योख

ज़रऽ: ज़रऽ: करान हरऽ: हरऽ: बोज़तो
क्याज़ि हर्योख मरऽ: मरऽ: कऽर्य् कऽर्य्
मरऽ: मरऽ: लुऽगयो नाहकय पाहकय
क्याजि हर्योख मरऽ: मरऽ: कऽर्य् कऽर्य् ॥१॥

मरिसऽइ प्यठ चऽ: मऽर्य् मऽर्य् मुउरखो
मरनऽ: वरऽऽय् क्याजि रूदुक मरित
पान सुऽर्य् सुऽर्य् चऽ: ज़ान्ह न मरखो
क्याज़ि हर्योख मरऽ: मरऽ: कऽर्य् कऽर्य् ॥२॥

शुर्य् बऽऽच दीह लरि धनऽ: छुई अपजुई
अख दयि नाव स्वात्मऽ: ज्ञान छु पज़र
पज़रस कुन च्ये: थर क्याज़ि फिरथो
क्याज़ि हर्योख मरऽ: मरऽ: कऽर्य् कऽर्य् ॥३॥

घरऽ: पनऽनिच चऽ: ज़ान जल करतो
सेरि म्यचि लरि मऽन्जऽ: नेरी क्याह
सुउरतो विश्वरूप युस चोन घरऽ: हो
क्याज़ि हर्योख मरऽ: मरऽ: कऽर्य् कऽर्य् ॥४॥

हुरुन तय हरुन छुनऽः केन्ह यति ज़ानतो
हुरनस हरनस छुनऽः केन्ह भीद
कम ज्यादऽः छ्योन हुर ज़ान चऽः हरतो
क्याजि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥५॥

घरि घरि गुं क्याज़ि करनय घरनऽई
फर्स्य् फर्स्य् फलऽःवाल कुउरनक अऽम्य्
घरऽः रोज़ि यऽत्य् अऽस्य् घरऽः यलि गछ्वो
क्याजि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥६॥

घरि घरि खसऽवसि कुन ह्यस थवतो
शयत्रऽः गऽन्जरावतख अलौक्यक
इहोय घरऽः असलुक वुऽन्य् शूभरावतो
क्याज़ि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥७॥

मनि मऽन्ज़ गुऽरऽःदीव शिवनाथ वछतो
न्यबरऽः छु सोरुई तऽम्युसुऽन्दुई तीज़
तीज़स त सिर्यस वाठ चऽः ज़ान्तो
क्याज़ि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥८॥

तीज़ वऽशनेर त नार, कुन वऽछतो
सिर्यिः चन्द्रमऽः छु तमी सऽऽत्य् नुउन
अऽथ्य् नारस मऽन्ज़ दज़ऽवुन रोज़तो
क्याज़ि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य ॥९॥

वाठ दलनऽः मऽन्ज़ऽः नेरी च्येः केन्ह नो
असलस फराहस ज़ान क्याः वाठ
बेल्को वाटस कुन ह्यस थवतो
क्याजि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥१०॥

इः ज़ानऽनस छ्य छ्ुट वथ शूभिदार
गुऽरऽः दीव शिवऽः नाथऽन्य् पादि पूज़
तनऽः मनऽः धनऽः तऽथ्य् पूज़ायि लगतो
क्याज़ि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥११॥

मर्रि कुस मुउर छू ब्रोंठुई मुउरदई
आतमा छा ज़ान्ह ज्यवान या मरान
हा "दीनऽः" व्यमर्शः किन प्रकाश वछतो
क्याज़ि हर्योख मरऽः मरऽः कर्स्य् कर्स्य् ॥१२॥

# लदी शाह

पानो क्युथ छुक चऽः आसन
छुकना सः चऽः युथ आसन
आन करऽनावतन अन्दरी मन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१॥

यस मनस अन्दर छू मलिन्यार
इहऽलूकऽ परिलूकऽ छू बेमार
ह्यनऽरन मऽन्ज़ छु फटित आसन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥२॥

सुऽन्दर त साफ पलौ छनान
चूरि पऽऽठ्य् ब्यथिसुन्द वगुव चटान
छु बुथिस प्यठ दिवान जाय मलन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥३॥

न्यबरऽः भासऽःनावि छुस धार्मायि मऽन्ज़
अन्दरऽः धोखन त पापन सऽन्ज़
तस कर भरनऽः इन द्वयितऽक्य् खन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥४॥

मुऽदऽरिः कथऽः ब्रोम्ठऽः कनि आसि करान
पतऽः कनि बतऽः कनि चप छू ख्यवान
तस ह्यू नो कुनि कान्ह दुऽरज़न
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥५॥

भासऽनावि छुस बऽः बुउड दाता
त्रेशि गुउल दिनऽः सऽऽत्य् मुऽरुस ताता
बऽडरऽऽव ग्रन्द तऽम्य् कन्जूसन
बनि क्या छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥६॥

सुबहऽऽय मन्दरन मऽन्ज़ पूजा
दुहलि अदालतऽः गवाह अपुजा
पजरऽक्यन आसि चटान कलन
बनि क्या· छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥७॥

सोरुई छुम म्येः पनऽः नुई पान
इ बन्यो ति ब्न्यो म्योनुई पान
वन्य वन्य लूटान लूकऽःहुन्द धन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥७॥

सनतन त सादन निशि गछान
कऽरमत्यन अपऽज्यन क्षमा छान्डान
छयद न करान ज़ान्ह धोखन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥८॥

यति तति पनऽः नुई पान शेरान
या पनऽःन्यन हुन्दई ध्यान करान
परन जानान फेरऽवऽन्य् गुपन
बनि क्या छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥९॥

बडिस प्यठऽः कनि जाय त्रावान
गरीबस बर ति नऽ ज़ान्ह मचरान
कुउर दर-ब-दर दर्यद्र नारानन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१०॥

ग्रन्दरऽः अख कथ न्यब्रऽः ब्याख
अथि पोशिमाल वऽऽन्लिजि मऽन्ज़ श्राख
पुज्य सऽन्दि खुऽतऽः बदतर ज़ानतन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥११॥

मऽऽलिस माजि त धरित्र्यन दुऽख
जन्ता सीवाय वरऽऽय न सुऽख
लीडर मानतन हऽथ्ययार्यन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१२॥

सोरुई केन्ह छुस अख पऽऽन्सऽः
ती सुउम्भऽर्य् सुऽम्भऽर्य् रऽऽव वऽऽन्सऽः
वैराग ज़न हावन बावन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१३॥

कऽऽन्सि हुन्दुई न जान कान्छान
पानस पनऽःनिस कुनई वछान
म्यई कुउर कऽर्य् कऽर्य् मिनतऽः थावन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१४॥

हावान छान्डान पज़ऽरुक सार
न्यश्कारन वऽऽर छुस कारुबार
क्याः गछि पूर कावऽः गाटऽल्यन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१५॥

बतऽ. छिनऽः कऽऽन्सि हऽन्दि अथऽः ख्यवान
पापऽः सऽऽत्य कमोवमुत छुख प्रमान
डम्ब छु तिमऽ.नऽई नाल वलन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१६॥

दोह त रात आसान तोह तिम मुनान
लूकऽः दलवान्जुल फिर फिर फिरान
दयि नाव भासान छुक दुशमन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१७॥

"दीनऽः" कोताह चऽः गऽन्ज़रावख
लूकन कुनई क्याज़ि वछख
पानय मा छुख इथई आसन
बनि क्याः छ्यल छ्यल न्यब्रिम तन ॥१८॥

# हा ज़ीवो

तति छुख ज़िन्दS तS यति छुख हफ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥१॥

श्रपजूई छुई इः सोरुई शरीर
श्रपुज़ुई भऽऽई बन्द सऽऽरी वीर
छु इः बिलकुल पित वाय त कफ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥२॥

नाहकय गऽङज़ऽथ रज़ः पानस
करिथ क्षय कथ टऽऽठिस जानस
केन्हनस तजी न करऽण्य् थफ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥३॥

कति प्यठः श्राख चः कुउत चः गछ़ख
कऽम्य च्येः वुनः नय ज़ाख त मरख
व्यवः हार क्या च्येः क्याः मशरफ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥४॥

पऽऽञ्चन भूतन करुथ नालःमुऽत
मूहन त लोलन कुउरनख मुऽत
लारयोय क्या यति तलः बा दफ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥५॥

कथः कर्य् कर्य् रावऽरऽऽवऽथ बऽऽञ्स
डाङ डाङ करुथ ज़न छुख भऽऽञ्स
दयि नावः बदल करुथ वुउफ वुउफ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥६॥

छुख चः शिव, ती सशरोवुथ
पनुन पान पानय रावऽरोवुथ
वुनि केन्ह गव नः ह्य ज़ागरथ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥७॥

ह्यस थव ह्यस थव पऽऽन्य् पानस
पान श्रालव चः गुऽरऽ दीवस
दीनः ज़ान श्रदः क्याः छये प्रकरथ
हा ज़ीवो कुनि जायि श्रफ ॥८॥

# मोतऽच खबर

श्रागाह श्रपनी मोत से कोई बशर नही
सामान सौ बरस का कल की खबर नही ॥

केन्ह छुनः मऽऽलूम कऽऽञ्सि इन्सानस
कर छुम नेरुण सफरस श्रसलस
लरि धनः सामानः सुम्बरुण न त्रावान
जन छुस रोज़ुन यऽत्य् ता श्रबदस ॥१॥

जुमजुमन सोचाव रंगः डबः लदः हऽऽ
थजरस बजरस ता श्रसमानस
शाह यलि द्रास तय खबरऽई ह्यस न
सूर गोस श्रडिजन तल मऽऽदानस ॥२॥

सिकन्दरि श्राज़म यूनानः प्यठः श्राव
ताराज करऽ हऽऽ सऽऽरसऽइ जहानस
पचि प्यठ श्रोस सु श्रथः ज़ः हावान
वऽछतव न्योम मा केन्ह सऽऽत्य् पानस् ॥३॥

कम कम श्रवतार वल्ली तय श्रौवलिया
श्रज़लः प्यठः श्रज़ ताम श्राय सम्सारस
श्रऽऽखरस सऽऽरी मजबूर बनेय
श्रऽप्य् तल म्यचि या दऽद्य् मऽञ्ज नारस ॥४॥

पानो याद थव सऽऽत्य् केन्ह न्युन छुनः
सम्सऽऽरी यति प्यठ यथ शानस
कुउरमुत ई छुई ती छुई श्रथस क्यथ
रुत क्रुत युथ त्युथ ढऽऽल्य् नीन्य् यारस ॥५॥

यार बेपरवाय तस न खबरऽई
कऽम्य् ओन क्याः ओन सऽऽत्य् लामकानस
पनऽनी लऽज़ छय पानऽसऽई बछान
करान तय पानय पनऽनिस अज़लस ॥६॥

भोर छुई गुउब गुउब पानय तुलऽमुत
म्यऽई कुउर वऽन्य् वऽन्य् तऽम्यसऽन्दिस कारस
करन बोल सुई छु सोरुई पानय
न करनय करऽवुन सोरुइ जहानस ॥७॥

करुम, छुम, छुस बऽ, हथकरि नऽऽल्य् छय
अऽऽविजि जऽऽविजि खोश् इवान पानस
इमऽ वऽई गऽन्डय् गऽन्डय् बन्द चऽः कुउरहक
पानय पनऽनिस मऽन्ज़ जेलखानस ॥८॥

ह्यस कर पनऽनुई क्याः छुस कति आस
छा म्येः ताकत केन्ह यति करनस
ह्यसऽः कोई मस च्येः पान तऽस्य् पुशराव
"दीनो" लोल भर गुऽरऽः सरदारस ॥६॥
"दीनो" लोल भर सऽऽरिसइ जहानस

## स्वपुन

१६७६

स्वपनस मऽन्ज़ यलि बूट म्येः रोवोम
क्या वनऽः कोता सख फ्यूरूम
शीतन रुपयन हा ओसूम
क्याः वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥१॥

खान्दर ओसुम ब्यनऽः थरस
कशीरि प्यठऽः बऽ दिलि आसस
सूट तय बूट म्येः नोव ओनूम
क्याः वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥२॥

ब्यनऽ थऽर ति रोटुम पानस सऽऽत्य्
बाजरस मऽन्ज़ वछ बूट असि कऽऽत्य्
असली बाटा मऽल्य् ह्यतुम
क्याः वनऽः कोताः सख फ्यूरूम् ॥३॥

नेथर कुउर असि ब्यनऽःथरस
सूट बूट छनिथ यठ हऽऽवमस
यनि वोल तामत रोकऽनोवुम
क्याः वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥४॥

पछ खन्ड यलि गव खान्दरस
हलऽः गुलऽः मुऽकऽःल्यौ ब्यनि घरस
अन्दरऽः वनि म्येः शोर ओसूम
क्याः वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥५॥

अकि द्वहऽ वुछ म्येः क्या. स्वपना
कस तामत ओस यनिवोला
स्वपनस मऽन्ज़ ति साल ओमूम
क्याः वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥६॥

कम कम नज़ारऽः खान्दरऽक्य्
नऽव्य् नऽव्य् तमाशि अमि स्वपनऽक्य्
अन्दर्युम तीज़ न्यबर छुकुम
क्या वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥७॥

नेरनुक जलदऽई वकऽत म्येः वोत
शेक हेन्ड सारिनई करुन ह्योत
बूटन मऽन्ज़ नऽः बूट लभूम
क्या वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥८॥

स्वपनस मऽन्जई छुम फेरान
शीतन रुपयन बूट मेलान
वुऽन्य् क्याः करऽः म्येः बूट रोवूम
क्या वनऽः कोताः सख फ्यूरूम ॥६॥

शोर प्यौ प्रथ पासऽ: क्या छि दलील
दीना नाथन कथ छऽन्य् मील
गिन्दनस द्र्कनस पोन्य् त्रोवूम
क्या वनऽ: कोता सख फ्यूरूम ॥१०॥

ओरऽ: योर छुस बऽ: बूट छान्डान
अकिसऽई अकिसऽई छुस प्रछान
बूट म्योन कुउत गव छुनऽ: मोलूम
क्या वनऽ: कोता: सख फ्यूरूम ॥११॥

क्या वनऽ: कोता: छुम फेरान
नोव बूट मनि मऽन्ज़ऽ: छुनऽ: नेरान
वऽऽलिन्ज पूरऽ: पऽऽठय् तोल त्यूलूम
क्या वनऽ: कोता: सख फ्यूरूम ॥१२॥

अऽऽखरस कऽह्य् ताम गोस हुश्यार
नेन्दरि: मऽन्ज़ऽ: यलि गोस वऽऽ बेदार
खोश् गोस इ: स्वपुन ओसोम
क्या वनऽ: कोता: सख फ्यूरूम ॥१३॥

जल जल वोथुस वारऽ: वुछूम
बूट नोव पनऽ:नी जायि ओसोम
शुकरानऽ: दयि सुन्द अदऽ: करूम
क्या: वनऽ: कोता: सख फ्यूरूम ॥१४॥

सूचुम कोता: छुस बऽ: खुउट
माई मलन छुम चुउटऽमुत हुउट
स्वपनस मऽन्ज़ म्ये: बूट रोवूम
क्या: वनऽ: कोता: सख फ्यूरून ॥१५॥

हा "दीनऽ:" क्या गुई करतऽ: सोच
मलो चऽ: कुउरमुत छुख बेहोश
सत्गुऽरऽसऽई कोनऽ: पान पुशरूम
क्या: वनऽ: कोता: सख फ्यूरूम ॥१६॥

# रास

आया नन्दलाल बिन्दराबन
रास गोपियों से खेलने
साथ उसके बल बदरण
रास गोपियों से खेलने ॥१॥

सारे देवी और देवता
ग्वाल बन कर आ गये
बालकों का रूप बन बन
रास गोपियों से खेलने ॥२॥

नन्द जसुदा ओर सारे
गोप गोपियां खेले
देख देख कर कृष्ण दर्शन
रास गोपियों से खेलने ॥३॥

दैत कई कई भेजे गये
कृष्ण चन्द्र मारने
मार के तारे ऐसे दैतगण
रास गोपियों से खेलने ॥४॥

क्या है लीला क्या: है आनन्द
किस को ताकत कह सके
अनुगृह मय कृष्ण दर्शन
रास गोपियों से खेलने ॥५॥

गुरुदेव के आश्रम में
बिन्दराबन बन गया
दासीं साथ दीन बन बन
रास गोपियों से खेलने ।६।

# जो हूं

(जन्म दिन १९७९)

"दीनोद्धारैककृत्याय करुणागाधसिन्धवे
अनेकश्रीलसत्काय श्री लक्ष्मणाय नमस्तमाम" ॥१॥
आचार्य जीं

जो हूं जैसा हूं हूं इक आप का दास
दया दृष्टी कीजिए भगवन, आया चरणन पास १

प्रकाशां शीतलामेकां शुद्धां शशिकलामिव
दृशं वितर मे नाथ कामप्यमृतवाहिनीम्
शि. स्तो. ३, ५,

सदना तारा खेवट तारा तारे कई कई नीच
में उनमें इक और सही रख दो उनही के बीच २

मतऽ: वछतौ म्यऽऽनिस कर्मस कुन
मतऽ: वछतौ म्यऽऽनिस धर्मस कुन
मतऽ: वछतौ म्यऽऽनिस लुऽचरस कुन
नज़र थव्युव पनऽनिस बजरस कुन ॥३॥

इनऽ: के द्रहऽ: अरज़ि हाल करेयोव म्ये:
दुष्टेन कान्या: गति पनुन पान वनेयोव म्ये:
तोति थुउद तुलऽनुक वादऽ तुऽहि करेयोव म्ये:
वुऽन्यै गोम त गोम क्या: वनितोम म्ये: ३-ए

छ्यम खबर पूरऽ: पऽऽठय् तोह्य दया म्ये: करिइव
वऽनी पऽनऽन्य तौह्य ज़ांह अपऽऽज़ न करिइव
च़ेरऽ: सऽऽत्य छुस मरान वुऽन्य जलदी करिइव
कर करिइव कर करिइव तोह्य कृपा कर करिइव ४

कहऽवचि प्यठ यलि पान म्ये: खोरुम
खुऽट ब ओसुस तऽति पानई रोवुम
सरतलि तऽम्य् अदऽ: स्वन म्ये: बनोवुम
म्ये: छि गुऽरऽ: सऽन्ज़ दया सोई छ्यम बकार ५

तुहन्दे दर्शनऽ सऽऽती बऽऽ ज़न
थुउद छुस बुथमुत फुऽलनऽ: इवान
क्या: ताम कति ताम कम छुम वनि ति
जल जल अऽऽसतोम पूरऽ: करान ॥६॥

पानय ओनुवस यथ वति तुऽही भगवन
लोल दिथ ब्योल पोऽपरोववम तुऽही म्ये:
वोवुन, सग द्युन, छुवऽ: तुऽही मटि म्योन
लोन "दीनुन" सोरुई तुऽही अथि, जय गुरु देव ७

१९८१

# चरनन प्रणाम

जन्म दिन १९८१

सत्गुऽरन होवनम स्वात्मऽ: परिनाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम
सार तऽम्य् भोवनम हमऽगी तमाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥१॥

दर-ब-दर ओसुस मऽन्ज़ ज़गतस
अन्दर अछ दर्शुन कर स्वात्मस
उऽपदीश कुउरनम ती सुबऽ: शाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥२॥

शूभिदार इम चरन आनन्ददा
पऽऽर्य् पऽऽर्य् इमऽनई बऽ लगऽहा
ज़प बऽ करऽहऽऽ ईहुन्दुई नाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥३॥

अकी लऽटि चरनऽ: दरशनऽ: सऽऽत्य्
भऽक्तय् तऽर्य् भवऽ सरऽ क्या वनय् कऽऽत्य्
अमी दर्शनऽ: असि पाप गऽल्य् तमाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥४॥

व्यनऽवऽन्य् मलन लऽज यकदम लार
दूर गव पूरऽ: पऽऽठ् सोन अहंकार
पूर्ण अहमुक तिम छी धाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥५॥

वीदन आगमन मऽञ्ज़ इ लीखित
चरनऽ: कमलन ह्ऽञ्ज़ गर्द ति बनित
ड्यकस म्यऽऽनिस् खऽच्य् बन्योस ब अनाम
सतगुरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥६॥

इमऽनई पत: पत: पकनऽ: सऽऽत्य
घुन चुउल अऽस्य् बनेय गुणातीत
पुक्तऽ.कार बनेय इम तिम अऽऽस्य् खाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥७॥

भास द्वयतुक ओस असि अन्धकार
सुई बन्यौ ईकतायि समतायि द्वार
च्यत चरनऽ अमृत मन गव राम
सत्गुऽरऽ: चरनन सोन प्रणाम ॥८॥

समय छू कम नत: गुऽन इमन तीत्य्
जगत शिव वुछ इहिन्ज़ि कृपायि सऽऽत्य्
'दीनस'' इहऽन्ज़ नोकरी, मस जाम
सत्गुऽरऽ: चरनन म्योन प्रणाम ॥९॥

## सत्गुऽरऽ: दया

सत्गुऽरन करऽम दया, सत्गुऽरस करऽ: नम:
सत्गुऽरन करऽम कृपा, सत्गुऽरस करऽ: नम: १

द्युत म्ये: सोरुई तमी, यति इ: तति तऽम्य्सुन्दुई
तस वरऽऽय न दातऽ: कान्ह, सत्गुऽरस करऽ: नम: २

जगत छु तऽम्य्सुन्दुई स्वरूप, शिव छु ईश्वर स्वरुप
तस वुउड कुनि न कान्ह, सत्गुऽरस करऽ: नम: ३

आसि कुस त्युथ कुनि, सारुक ति सार वनि
सऽऽर्य् सऽऽर्य् सार छु हा, सत्गुऽरस करऽ: नम: ४

चऽऽर्य् चऽऽर्य् लुउभुम सुई, व्यचारवान वुउछुम सुई
साष्टांग परण प्यमा, सत्गुऽरस करऽ: नम: ५

धनऽ: दोलत म्ये: सुई, इ लूक परिलूक म्ये: सुई
शिवऽ: प्यठ: पृथ्वी छु हा, सत्गुरस करऽ: नम: ६

वारऽ: वुछ चऽ वारऽ: वुछ, भवऽ: सरुक इ तार वुछ
"दीन" दय इहोय हबा, सत्गुऽरस करऽ: नम: ७

## परमार्थसारुक सार

यदनात्मन्यपि तन्द्रूपावभासनं तत् पुरा निराकृत्य
आत्मन्यनात्मरूपां भ्रान्ति विदलयति परमात्मा
परमार्थसार, ३९

कन थव ह्यस थव छुखय त्रुक
परमार्थसारुक सार छु यहोय टुख
शुर्य् बऽऽच् लरि धनऽ: शरीर गव न पान
(दीह, प्राण, पुर्यष्टक, शून्य् गव न पान)
इहऽऽय गटऽ: यलि अछ्यौ प्यठऽ छु तुलान
दय दयां अदऽ:, पूरऽ: पऽऽठिन करान
व्यराठ स्वरूप विश्व युस छु भगवान
सुई गव पान त समवित्त सुई गव ज्ञान
ती भास छुस पूरऽ: पऽऽठ्य् करऽनावान

१९८०

# पानो ज़ान

पानो ज़ान क्या: छुक छाण्डान
रावनऽ रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥१॥

ज्यनऽ: वक्तऽ: प्यॖठय लऽऽजित छाण्ड
छ्ऽऽण्ड छ्ऽऽण्ड लऽम्य् लऽऽम्य् च़जिई न ज़ाण्ड
ई छुक ती छुक च़ऽ: छाण्डान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥२॥

ख्यनऽ: ख्यनऽ: जायि जायि छु इ: नोव नोव
नोव त प्रोण ज़ऽऽन्य् ज़ऽऽन्य् ब्ययि नोव नोव
अज़लऽ: प्यठऽ: असलऽच्य् मऽशिरऽत ज़ान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥३॥

असल माल चन्दस न्यब्रऽ: छोण्डुत
वुन्दम मऽन्ज़ अऽऽसित ज़ान्ह न जोनुत
कुउछऽ: शुर अऽऽसित पारयि छाण्डान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥४॥

नज़र कर अन्दर कुन अऽत्य् छुई पान
आद्य् मऽन्ज़ अन्द छुक पानऽ: आसान
दर ब दर कर गोख तलऽ: बा ज़ान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥५॥

पानऽ: नय आसऽ: हऽऽख कवऽ: ज़ानऽहऽऽख
ज़ऽऽनिथ मऽऽनिथ किथऽ: कऽन्य् करऽहऽऽख
जानुन् करुन पान आसऽनुक निशान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥६॥

शिव च़ऽ: पानय अन्द्रऽ: जोतऽ: वुन
शक्ती च़ऽई छुख ज़ोन थवऽवुन
इ जगत अहमऽई आनन्द तुलान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥७॥

पथ कुन अोसुख प्रथ रग्गऽ: चऽई
ब्रोन्ह कुन च्ये: वग्ऽऽई आसि नऽ किहीन्ज़
वऽन्क्यनस अहमई सोरुई ज़ान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥८॥

चऽ: नय आसऽहऽऽक ज़ानि ह्य स कुस
शिव या शक्ती पूज़िह्यस कुस
चानि: सऽऽतिई तिम छि आसान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥९॥

ई छुक ती च़ऽ: ज़ानक क्या
करन वोल सोरुइ करिई कान्ह क्या:
आगरस योरऽ: छा केन्ह ति अचान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥१०॥

काया क्याज़ि मऽऽनित पनुन पान
माययि हुन्द इ: रूप वारऽ: चऽ: ज़ान
कायायि मऽन्ज़ छुख शिव रोज़ान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥११॥

पानऽ: छुख शिव चऽ: ब्यायि न केन्ह
रूप च्योन शक्ती ब्ययि न केन्ह
सुऽई माया जगत नोन छि गिन्दान
रावनऽ: रुउस रोबमुत छुई क्या: ताम ॥१२॥

काया ति चऽई छुख माया ति च़ऽई
याद प्युन मशुन ति सोरुई च़ऽई
ख्यनऽ: ख्यनऽ: ह्यस थव आस मऽ डलान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥१३॥

ह्यस पनुन पान छुई अहमई योत
खसऽवस चन्दर सिथि वुछ कोत वोत
कर सन्ध्या म रावर वक्त इ: ज़ान
रावनऽ: रुउस रोवमुत छुई क्या: ताम ॥१४॥

पनऽनुई पान छुई सोरुई केन्ह
सत्गुऽरन वुनऽ:नय अन्दरऽ: कनि बेह
शास्त्रौ दिचऽ:है "दीनऽ:" ती ज़ान
रावनऽ रुउस रोवमुत छुई क्या ताम ॥१५॥

## व्याप्त चराचर

जन्म दिन १९८१

व्यप्तऽ चराचर छुख स्वरूपि ईश्वर
सत्गुऽरऽ: जल जल सारिनई दया कर
वादऽ: सु: पनऽनुई युउत इनऽ: दोहऽ कुई
अकि लटि याद कर सारिनई दया कर ॥१॥

वाऽऽञ्स आयि मुऽकऽलान चोंग डुबऽडुब करान
पतऽ चऽ: करख कर सारिनई दया कर
बऽ: आसऽ: कति ताम शरीर आसि सूर फाम
फेरिवऽ: बराबर सारिनई दया कर ॥२॥

धनऽ द्यार लऽर जाय, शुर्य् बऽऽच् शरीर काय
अपज़ुई सरासर, सारिनई दया कर
यऽथ्य् सम्सारस, सुऽख: दुऽखऽ यारस
शिव रूप नोन कर, सारिनई दया कर ॥३॥

ई छु त ती छू, पोज़ अपोज तऽ शून्य् छू
ती विश्वरूप पर, सारिनई दया कर
पर अपर परापर, किथऽ: कऽन्य् बराबर
ती म्ये: नोन कर, सारिनई दया कर ॥४॥

छिवऽ: तुह्य भासकर, शिवई चराचर
आसुन म्ये: भास कर सारिनई दया कर
भासुन छु आसुन, आसुनई भासुन
भास्तम भास्कर, सारिनई दया कर ॥५॥

छुस बऽ मलऽई योत, अन हुन्द फलई योत
अनऽ वऽन्य स्वरूप कर, सारिनई दया कर
युस म्ये: गण्ड छू, मोह अन्धकार छू
तऽथ्य् प्रकाश कर, सारिनई दया कर ॥६॥

शिवन ई: सोरुई, पऽऽन्य् पानस कोरुई
म्यई कोर शक हर, सारिनई दया कर
शकनई बऽ मोरनस, गऽण्ड्य् गऽण्ड्य् गुण्डऽनस
बन्धनई मोक्ष कर सारिनई दया कर ॥७॥

छुस बऽ ई ती स्वरूप योतई तीं
धारना म्ये: दृढ कर सारिनई दया कर
जोनुम म्ये: कुता: मोनुम म्ये त्यूता:
हृदयङ्गम कर सारिनई दया कर ॥८॥

न कर:नऽई केन्ह करुन, पऽऽन्य् पानस फरुन
सम्व्यत शुऽद कर, सारिनई दया कर
दीन छुस ब "दीन" त दास, तुहुन्दई दासि खास
खास म्ये: दयाकर, सारिनई दया कर ॥९॥

१९८२

## तयार रोज़

कमर बान्धे हुए चलने को याँ सब यार बैठे हैं।
बहुत आगे गये बाकी जो हैं तयार बैठे हैं

तयार रोज तयार रोज़, नेरनस तयार रोज़
कमर गण्ड सफरस, नेरनस तयार रोज़ ॥१॥

योर इनऽ वक्तय, तोरच कऽर सखऽर
पूरऽ हुउल गन्डित वुऽन्य, नेरनस तयार रोज २

दोह तारऽ गिन्दुना, पनऽनुई वुछुन ओस
वुछुत वुन्य् स्यठाह यति, नेरनस तयार रोज़ ३

पदिस तल महाकाल रोज़ान छुई च्ये:
तमिस कुन नज़र कर नेरनस तयार रोज ४

नेरऽनुइ छुई न केन्ह, नीरथई छि अऽऽसिथई
स्यठाह द्राय चऽ ति वुन्य्, नेरनस तयार रोज़ ५

सफरई छु सोरुई युन ति छु गछऽनुई
गछुन युन केनुई बोज, नेरनस तयार रोज़ ।।६।।

अपजुई छु घरऽबार अपजुई शरीर तान्य्
त्रऽऽवित यऽत्य् इः नेरनस तयार रोज़ ।।७।।

आत्मा कुन ह्यथ, छुख चऽ आमुत योर
सऽऽत्य सुई च्येः पुउज़ यार नेरनस तयार रोज़ ।८।

पनऽन्य् कुदऽरत पानऽः वछनि बऽः युत आख
वछित वुन्य इः तीचाह नेरनस तयार रोज़ ।।९।

अछिन प्यठ मोहऽ ची कनऽ पऽट गऽन्डिथई
दोरऽवुन घुर छुक नेरनस तयार रौज़ ।।१०।।

नऽ अऽऽसिथई सफरई, सफरई छु आसान
चऽ तऽ बऽः अपजुई नेरऽनस तयार रोज़ ।।११।।

चई बऽ तऽ बई चऽः, ज़ान्तो असल पान
पथ त्रोन्ह ति बई योत नेरनस तयार रोज़ ।।१·।।

अऽ प्यठऽ क्षहऽस ताम, कऽच्य् सना कदम छि
तुलान तिम चऽ. फीर्य् फीर्य् नेरऽनस तयार रोज़ १३

तिमन मऽन्ज़ सार अक अहं योत आसान
सुई योत रठिथन नेरनस तयार रोज़ ।१४।।

इः यति वुछ ति सोरुई, तमिची फुलय अऽऽस
तम्युक ब्योल तुलिथई नेरनस तयार रोज़ ।।१५।

ई छु ती छुख, अहमई चऽः अऽऽसिथऽई
अहमकानऽः मोह ओस, नेरनस तयार रोज़ ।।१६।।

मशराव इः सोरुई अहमस चऽः थपकर
ह्यस तम्युक करिथई नेरनस तयार रोज़ ।।१७।।

मूडऽः वयाः चऽ वनान, खामऽखाह परसान
सोरुई छु सोंहं नेरनस तयार रोज़ ।।१८।।

पनुन पान रावऽरित छान्डनि योत आख
सऽऽत्य् सऽऽत्य् च्येः सुई योत नेरनस तयार रोज़ १९

नेब्रऽ. छु भ्रम इः यऽभ्य् चऽ भ्रमरोवुख
अन्दरऽः चऽः पानय नेरनस तयार रोज़ ।।२०।।

अन्दरऽः न्यबरऽः पनऽनुई, पान चऽः वुछिथई
न्यबर ती अन्दर ती नेरनस तयार रोज़ ।।२१।।

अहमस अहमक, कान्क्षां बनावान
सुऽ त्राव पूर्ण छुख नेरनस तयार रोज ।।२२।।

यछुन कान्छुन योत, ज़ीवुस छु मारान
ज़िन्दय मर रिन्दऽ बन नेररस तयार रोज़ ।।२३।।

मोहऽ च्यौ रज़ौ च्येः, गण्ड क्याज़ि कोरहय
यती छुख तती रोज़ नेरनस तयार रोज़ ।।२४।।

अहं छुख अहमस मऽन्ज़ सर्वदा रोंज़
त्यली बऽऽतिथई छुख नेरऽनस तयार रोज़ ।।२५।।

मनऽच्य् कांक्षा क्याजि भ्रमरावी च्ये:
तमि थोद स्यठा छुख नेरनस तयार रोज़ ।।२६।।

शरीरन च्येः थप छऽई बडऽ सख करऽमऽच़
अमी गन्डऽः मन्ज़ऽ नेर, नेरनस तयार रोज़ ।।२७।।

तयार रोज़ित चऽ:, सुऽखऽसान खुऽश रोज़
असऽ वनि बुथि गछ़, नेरनस तयार रोज़ ॥२८॥

वोदुत इनऽ: वक्तन, लूकौ असुई चेः
आसन गछ़ वदिन तिम, तिमुई कर तयार रोज़ २९

# श्री शारिकाष्टक

शारिका देवी जी, जन्म दिन, १९८२

सारिनई लूकन यछ़ान ह्यतः कार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥१॥

समता भावुक तस आसन छू
ह्यसस कुन ह्यस तस आसन छू
द्वह रात तस छू ती कारुबार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥२॥

गुऽरऽ: सऽन्ज़ भक्ती करान दोह रात
शिव भक्ती यऽऽच् छ्यस कथ वात
कुनि जायि वुछ न म्येः तिछ़ कान्ह नार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ।३॥

शैवी शास्त्र परिमऽत्य छिन
क्रमुक क्रम कर्म तमि ज़ऽऽनिमऽत्य् छिन
क्रमई योत ज़ोन्मुत छुन कारुबार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥४॥

"वुन्य् क्याः गव" वनुन, वनान गव स्वर्ग
"ह्य क्या गोम" वनऽनुई गव नरुक
दयस पान पुशरिथ, शुकर गुज़ार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥५॥

अहंकार यकदम त्रोवमुत छुन
मलन त्र्यनऽवऽन्य नार दितुमुत छुन
गोलमुत छुन अज्ञानऽ अन्धकर
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥६॥

शक्ती पऽऽञ्च सुऽ मूरत छेः
शक्तीमय तस सूरत छेः
यूगऽ: स्यद्धी तऽम्य् सुन्द रोज़गार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥७॥

ज्युन मरुन तस, ईकऽ: रूप छू
निमेश उन्मेश गिन्दऽनुक रूप छू
तवय ज़न्मऽ: दोहः तस जय जय कार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥८॥

"दीन" गुऽरऽ: भक्ती ह्यछ़ तस निश
गुऽरऽ चरनन तल बस तस निश
यऽऽरी करऽनई गुऽरन यकबार
शारिका दीवी करऽ: नमस्कार ॥९॥

# उपाय

आनवेपाय गव अथऽ: खुऽर मारुन
शाक्तो व्यचऽऽरित मन गालुन।
शाम्भौपाय गव हङ्गऽ: मऽङ्गऽ अथि युन
अनोपाय गव तऽम्य् आसुन

मार्च १९८३

# उत्तरस्यापि अनुत्तरम्

मुऽऽमा ला जवाब है
सवाल क्या जवाब है
जवाब ही सवाल है
सवाल ही जवाब है ॥१॥

किस ने कहा हजाब है
यह तो बे निकाब है
न सवाल न जवाब है
सवाल ही जवाब है ॥२॥

क्या ठीक क्या खराब है
पाना क्या सवाब है
बिगडा क्या हिसाब है
सवाल ही जवाब है ।।३।।

समन्दर तो पुरआब है
जाग कैसे ख्वाब है
दिल ही तो बेताब है
सवाल ही जवाब है ।।४।।

कैसे कुछ अज़ाब है
तू ही तो यह रबाब है
रबाब मिज़राब है
सवाल ही जवाब है ।।५।।

आप भूला आप है
भूल के ढूँडे आप है
सब कुछ "दीन" आप है
सवाल ही जवाब है ।।६।।

जन्म दिवस १९८३

न वान्छामि किञ्चित, न कांक्षामि किञ्चित
दत्ता में प्रभू त्वम दासस्य स्थानम
ततोपि जिहाग्रे एकाभिलाषा
जय गुरू देव: ईश्वर स्वरूप:

Desire I nothing for, Request I nothing for
Blessed thou hast me, with what I could ask for
The tip of my tongue, still does desire for
Saying, Jai Guru Dev, near be it or far.

न मांगों मैं कुछ भी, न चाहों मैं कुछ भी
भकशा है आप ने, मुझको तो सब ही
फिर भी जनाब को, अरमान है इक ही
फिर भी जिगर को, अरमान है इक ही
सदा कहती रहे जय मेरे गुरू की

न छुस बऽ यच्छान केन्ह, न छुस बऽ मन्गान केन्ह
दितुथम म्ये: पऽऽन्य् पानऽ, गछुन इ म्ये: गुउछ केन्ह
तोति ज्यवि प्यतिस म्ये: अरमान छु बस यह
(तोति वऽऽलिन्जि म्ये: अरमान छु बस यह)
वनऽवुन गुऽछ सदा, जय गुऽरऽ: दीवऽ: च्ये:

## शाहऽ ह्यस

अगर जेनुन छुई पननुन पान
दोह त रात रोज शाहऽ: ह्यसऽ: सान
शाह पनुन पान छुइ ज़ान भगवान,
दोह त रात रोज शाहऽ ह्यसऽ: सान ।।१।।

समव्यथ दीवियि पऽऽन्य् पानऽ: अवलय
बनोवन शाह पनुन सु पान
अदऽ: रुज़ शरीरस मऽन्ज नचान
दोह त रात रोज़ शाहऽ ह्यसऽ: सान ।।२।

शरीर इ: मा जानुन पान
मन्दर छुई दयऽ: अमानत जान
अमि रुउस छ्यनऽ: इवान पहचान
दोह त रात रोज़ शाहऽ: ह्यसऽ: सान ।।३।।

मन्दरा दितुनय दयन इ: जान
शिव पानऽ: छुक अति रोज़ान
ज़पान सू हं सू रोज़ान
दोह त रात रोज़ शाहऽ ह्यासऽ: सान ।।४।।

अमिस शिव नाथऽ सुन्द अर्चन
करऽवुन छुख सदा आसान
अमि न्यबर कोनि न केन्ह आसान
दोह त रात रोज शाहऽ ह्यसऽ: सान ।।५।।

अोरS योर युस डलुन भासान
सरकारS सुन्दुई सु कार आसान
सुSति तसऽञ्ज़ई पूज़ा आसान
दोह् त रात रोज़ शाह्S ह्यसऽ: सान ॥६॥

सोरुई ज़गत पनऽनुई पान
युथ छुSश कर्यस त्युथ रोज़ान
माया छ्यस कुदरत आसान
दोह् त रात रोज़ शाह्ऽ ह्यसऽ: सान ॥७॥

गुगऽ: मऽन्ज़लSच खेल: खेलान
बुSन वसुन ह्यु र खसुन आसान
अन्दर अचान न्यबर नेरान
दोह् त रात रोज शाह्ऽ ह्यसऽ: सान ।८॥

तस रुत क्रुत ति, बराबर छ्रु
सुन सदऽर हीमाल ह्यूव् छ्रु
भीद छुनऽ: तस निशऽ आसान
दोह् त रात रोज़ शाह्ऽ ह्यसऽ: सान ॥९॥

"दीनो" वन असि क्याः गव.
"ह्य क्याः गोम", सोन वयाः गव
"वुऽन्य क्या गव", कोनऽ: ज़ानान
दोह् त रात रोज, शाह्ऽ: ह्यसऽ: सान ॥१०॥

**जन्म दिन श्री शारिका जी १९८४**

धैरयिवान धैरयिवान, लामिसाल
श्रीं शारिका जी, ला.मसाल ॥१॥

बुउड च्योन मोल मऽऽज्य, बुउड घरऽबार
तऽथ्य् च्योन वैराग, लामिसाल ॥२॥

गुऽरऽ: सीवा करान, द्वह्स रातम
पूरऽ: भक्ती सान, लामिसाल ॥३॥

लुऽकS: चारS: प्यठय्, रठऽथ शिवS वथ
च़ऽऽलिथ सुउन वुउगुन. लामिसाल ॥४॥

पूर्ण ज्ञान च्योन, यूगS: साधना
पूर्ण स्यद्धी, लमिसाल ॥५॥

च्योन इ: बरदाश्त, च्योन इ: सबSर
तSथ्य् मऽन्ज़ छ़ोपऽ: च्यSSन्य्. लामिसाल॥६।

अख अख कथ च्यऽऽन्य्, ज़न छि सूत्र
छोपS: दोपS: करिथई, लामिसाल ॥७॥

इम लक्ष्यन यूगियन, तिम छी च्ये:
नऽन्य् पSSठ्य् नमूदार, लामिसाल ॥८॥

शमं कार्णं वुछ पूरऽ: पऽऽठ्य् असि
च्यई मऽन्ज़ मूर्तिमान, लामिसान ॥९॥

आचार्य रामेश्वर अोस वनान
छ्यक द्यूतऽनात्मक लामिसाल ॥१०॥

आश्रम इ: श्री ईश्वर स्वरूपुन
शूभान चानि सऽऽत्य् लामिसाल ॥११॥

श्री ईश्वर स्वरूपन दितुई थज़र
सारिनई सृष्ठ च़Sई लामिसाल ॥१२॥

कात्यायनी, लSल, रूपऽ: भवSSनी
त्यलि तिम:, अज़ च़ऽ: लामिसान ॥१३॥

कलऽ: नुमरित छुई दीनऽ: अज़ वनान
करS: नाव गुरऽ: दया, लामिसाल ॥१४॥

# आलऽमि हैरऽऽनी

तला सोच पानऽ वारऽः, पान क्युथ ह्यू छू
दीह् पानस किनऽः, पान तथ मऽन्ज़ छू ॥१॥

दीह छू सीमित, पान अन्हद छू
बुउड लूकिस मऽन्ज़, कर वातान छू ॥२॥

सोरुई आलऽमि हैरऽऽनी छू
लुकुट बुउड अज़ पगाह कर कुनि केन्ह छू ।३।

आसुन नासुन, तिति केन्ह ना छू
ई छू ती छू, छूतऽ, केन्ह नो छू ॥४॥

ती ती वनुना, शुय् गिन्दुना छू
ई जान्तो "दीनऽः" दयि गिन्दुना छू ॥५॥

**He who doubts, thinks.**

CARTO DOSI

# शक

शकऽनई मोरनस, शकऽनई तोरनस
शकऽनई दितुनम, व्यचारस चाव ॥१॥

शक नय आसिहेम, सोच किथऽः करऽहऽऽ
ज़ानऽ हऽऽ किथऽः कऽन्य्, सागर त नाव ।.२॥

शकऽनई न्योनस सत्गुऽरऽ द्वारस
ज़ोन म्येः शक छू, दिवऽवुन भाव ।३।

शक गालनऽ खऽऽतऽरऽः वोयुम अथऽ खुउर
अदऽः म्ये अथि आव, सत्गुऽरऽः नाव ॥४॥

शक म्ये ओसुम. छुसऽ बऽ म्यचि लऽर
किनऽ अति रोज़ऽवुन, अमिकुई स्वभाव॥५॥

शंका निवारन, कोरुम सत्गुऽरन
दोपऽनम कर विचार. सहज़ऽ स्वभाव ॥६॥

ह्यस अदऽः दितुनम, पाय तऽम्य् कुउरनम
शक दूर कुउरनम, वनिथ याद पाव ॥७॥

पतऽः चई ओंसुख, ओन्ह चई आसख
वऽन्याक्यन ति छुख चई, ज़ीव छुई नाव ॥८॥

नाव ति माया. छुक न चऽः काया
समय भ्रमऽः छाया, ह्यस वारऽ थाव ॥९॥

जल जल भ्रम त्राव, वारऽ पऽऽठ्य ब्रह्म ज्ञान
शिव शक्ती वुछ, बन मऽ डल काव ॥१०॥

वुछुन ति छुई क्याः, अऽऽसिथई छुख चऽः
रोवई कर क्याः, शक छु स्वभाव ॥११॥

वुछऽवुन चई छुई. ज़ानऽवुन चई छुख
वुछुन ज़ानुन ज़ान. ज्ञानुक नाव ॥१२॥

यथ सम्सारस, सार छुख चई अख
शकऽ नारन ओन, बतस पूरऽः छाव ॥१३॥

शक नय करऽहऽऽख, तर्क मा करऽहऽऽख
ज़ानऽहऽऽख मा ज़ाह, सहजुक भाव ॥१४॥

जयकार सत्गुऽरस, यऽम्य् म्येः होवनम
कालाध्वा गव, च्यूह मऽ रावऽराव ॥१५॥

च्यूह अगर ज़ानख, अथि ईईः घऽर घऽर
पऽऽन्य पानय अदऽः, पान अथि आव ॥१६॥

चइ नय आसऽहऽऽख, कुस शक करिहे
"दीनो" असल पान, पानऽ याद थाव ॥१७॥

## ज्ञानऽ वान

जन्म दिन १९८४

ज्ञस्य प्रमेव तज्ज्ञानमज्ञस्य तु भ्रमात्मकम्
ज्ञानिनां ज्ञानमेव स्यात् सर्वोंपि व्यवहारकः

ज्ञानऽः वानस युऽसऽः ज़ान ज्ञान आसान
अज्ञानियस सुऽइ अज्ञान बनान
आम लूकन हुन्द व्यवहारई छ़ु
ज्ञानऽवासन पज़ऽरुक ज्ञान आसान ॥१॥

वछ़नऽः मऽन्ज़ऽ. वछ़ान तिम आत्मुक रूप
सुई वुछुन लूकन भ्रुमऽरावान
कर्यं कर्यं न करिन सऽऽरऽई कऽऽम्
ज्ञानवानस पज़ऽरुक ज्ञान आसान ॥२॥

ख्यनऽ ख्यनऽ तिम पनुन पान ज़ानान
ख्यनऽ मऽन्ज़ः मज़ऽ, तिम पान वछ़ान
दमऽः दमऽः चेनुन पान युस छ़ु
ज्ञानऽवानस पज़ऽरुक ज्ञान आसान ॥३॥

अनुसन्धान छ़ुख नऽः ज़ान्ह छ़्यनान
प्रथ चीज़ऽः मऽन्ज़ऽः पनऽनुई पान ज़ानान
न्यन्दरि मऽन्ज़ ति हुश्यार रोज़ुन
ज्ञानऽवासन पजरुव ज्ञान आसान ॥४॥

"दीन" जयकार तस, अजकल ति युस युथ छ़ु
ज़गि मऽन्ज़ अख ईश्वर स्वरूप आसान
पनऽन्यन परद्यन ह्यु वी ह्यतऽकार कान्छ़ान
ज्ञानऽवानस पऽज़रुक ज्ञान आसान ॥५॥

## Question & Answer

BETWEEN

| Brhama Rakshasha | Prince |
|---|---|
| What is vaster than the cosmos ? | Consciousness |
| What is the tineast ? | The same |
| What is its shape ? | Movement |
| Where does it exists ? | In the Self |
| Being one how is it so huge & numerous | Being the origin of all |
| And how so small ? | Being unpercieveable by human organs |
| What is movement and what is self ? | They are both one and the same consciousness |
| Where can it be found ? | In ones intellect |
| How to find it ? | By concentration |
| What does one gain by finding it ? | Immortality |
| What is intelect ? | Mind freed from stupidity |
| What is concentration ? | Steadfastness therein |
| What is birth ? | Conception of self being the body |

| | |
|---|---|
| Why is conciousness unattainable ? | Due to stupidity |
| How is it attained ? | By its own self |
| What causes birth ? | The idea of ego of doership |
| What is stupidity ? | Non-understanding self, separate from the body |
| What is Self ? | Know it yourself for yourself |
| What is ego of doer-ship ? | The idea that 'I do' |
| How does stupidity vanish ? | By contemplation |
| What can be the cause of this achievement | 'Vairaga' i.e. Apathy of desireful attachment |
| And the cuase of that ? | Knowing the corruptive defect of objects. |
| What is contemplation ? | Differenciation between the seer and the seen |
| What is vairaga detachment ? | Non attachment to objects |
| What is differenciation between the seer and the seen ? | To feel repulsed from attachment to objects is differenciation |
| How can contemplation detachment and differenciation be achieved ? | Through God's grace |
| How is grace obtained ? | Through devotion |
| How to get devotion ? | By contact with good people |
| Who is God ? | He who sustains the universe |
| What is devolation ? | Bringing the mind on to Him |
| Who are good people ? | The tranquil and the compassionats. |
| Who is always in fear | The worldly rich |
| Who is in trouble ? | One with a large family |
| Whom does not misery ever leave ? | He who hopes. |
| Is any one fearless ? | Yes the non attached |
| Who is free from woe ? | He who conquers the mind |
| Who is never miserable ? | Who has known the knowable |
| Who is not easily recognised ? | He who has realized |
| Who is without a body in the body ? | The realized soul. |
| Who never acts even in full action ? | The same person |
| What only exists ? | Conciousness (awareness) |
| What is always non-existant ? | The seen |
| What is impossible ? | Right behaviour. |

Extracted from Tripura Rahasia

जय गुरुदेव